सफेद पंखों की उड़ान

हरदर्शन सहगल

स्वस्ति साहित्य सदन

आदरणीय डा० महीप सिंह को
तथा
सुपुत्री कुमारी कविता सहगल को
जिसकी निरन्तर उत्सुकता के कारण
यह उपन्यास लिखा गया।

एक

कही फिर कुछ गलत हुआ है।

वह गलत चाल चल गया है।

ठीक है बाबूलाल को ताश खेलने का अधिक अभ्यास नही है। फिर भी भगवान न सहज बुद्धि ता दी है। फिर वह क्यो बार-बार चूक जाता है। बार-बार उसे लगा है कि जिन पत्ता को उसे अभी सम्भाल कर रखना चाहिए था, ख्वामुख्वाह उसके हाथा मे जबदस्ती फिसल गये है, और जिन पत्तो को उस वक्त का फेंक दना चाहिए था उसके हाथा मे फसकर रह गये हैं। सारी बाजी चौपट हो गयी है और वह खुद इस बुरी तरह से फस चुका है कि उसे खुलेआम एक बार फिर सबके सामन अपनी शिकस्त का ऐलान करना पड रहा है।

उसे लगा कि उसका सावला रग कुछ ज्यादा सवला गया है। लम्बे सफेद कमीज पर कुछ अतिरिक्त धूल आ जमी है। अपने लम्बे कद को झटका दते हुए वह अपनी कमीज पर हाथ फेरने लगा।

वक्त रहते धर्मेश ने उसे समझाया था कि तीथयात्रा कर आ। पूजा-पाठ, दान-दक्षिणा के बहुत मीठे मीठे फल उगते हैं। मगर बाबूलाल ने धर्मेश की एक न मानी थी। उस धर्मेश की नेक नीयत या अपने प्रति उसके हितैषी भाव म कही कोई कोर कसर नज़र आई हा, ऐसा बिलकुल नही था।

बाबूलाल की धर्मेश से जान पहचान पिछले पद्रह एक सालो से है। दोस्ताना काफी गाढा रग पकड चुका है। लेकिन उसे धर्मेश की सलाह मे विशेष पक्केपन का यकीन कभी नही हा पाया। धर्मेश भी जगह-जगह कई बार अपन सहकर्मियो के नित नये हथकण्डा के सामन मात खा चुका है।

शायद इसीलिए बाबूलाल को धर्मेश बस अपने जसा थाडा-थाडा भाडू टाइप लगता है। और इसीलिए ही उसकी उसक साथ पटती भी है। कभी कभार धर्मेश क साथ ताश खेलन बैठता है ता व दाना लगभग बराबर ही रहते है। तब उसकी दृष्टि धर्मेश की धारीदार सफेद कमीज़ और उसके चौडे माथे की लकीरा पर जम जाती है।

लेकिन इस बार तो उसने धर्मेश की सलाह एक खास वजह म भी नही मानी थी। बाबूलाल की एक ही रट थी कि पपर इस कदर साफ़-सुथरा चमचमाता हुआ कर आया हू। काई मुझे फेल करन की हिम्मत कर ही नही सकता। फिर मैं अब काफी सीनियर भी पडता हू। कब से मेरी प्रमोशन ड्यू है। मेरे जैस आदमी के पास चढावे के पस निकले भी तो कहा से ?

बाबूलाल का यकीन रग लाया था। उसके लिए यह एक छोटी चाल थी। छोटी सी बाजी। जिस वह जीत गया था। वह सीनियर ग्रेड मे सलेक्ट हा गया था।

मगर बाबूलाल की किस्मत अजीबोगरीब रगा से कुछ इस तरह स सराबोर रही है कि जीती हुई बाज़ी भी हार म तबदील हो जाती है।

बाबूलाल का पदोन्नति आदेश आया था। साथ ही स्थानान्तरण आदेश भी जुडा हुआ था।

वह हसा था। अपने ऊपर। अपन भाग्य को मन-ही मन एक निहायत अश्लील वाक्य स जोडता हुआ धर्मेश के पास पहुच गया।

धर्मेश नाइट ड्यूटी देकर सो रहा था। धर्मेश की पत्नी गीता ने पूछा—कोई बहुत जरूरी काम हो तो उठा देती हू। बठिय।

—नही भाभीजी, दोपहर बाद आकर मिल लूगा। उसे लगा, उसकी सास कही बहुत ऊपर टग रही है।

वह वापस अपने दफ्तर म पहुचा और बेदिली म इधर उधर का काम निपटाने लगा।

—बाबूलाल आज काम छोड। कुछ खिला पिला। सुरेन्द्र ने जानकर ऊचे स्वर म कहा। इसका असर भी हुआ। इधर उधर बठे दूसर बाबू लोगा न भी सुना। चपरासिया ने भी सुना और सुरेन्द्र के समथन मे आवाजे गूजन लगी। इतन मे शाखा अधीक्षक भी आ निकले। फौरन मामला भाप

गये।

—हलो मिस्टर बाबूलाल! एक्सेप्ट भाई हार्टियस्ट काग्रेच्यूलेशन्स फार ए हैण्डसम प्रमोशन। बडी मीठी और पतली आवाज निकाली और हसने लगे।

—साहब, क्या बात करते हैं। यह क्या प्रमोशन है? या ।

—साहब, आप सुन रहे हैं न। इसकी टालने की तरकीब को। आप ही कहा करते हैं, बाबूलाल बहुत भोला है।

—नहीं, नहीं, ऐसी कोई बात नहीं जो हमारा बाबूलाल पीछे हटे। माथुर ने बाबूलाल की पीठ पर एक थाप दी।

—पार्टी तो आप लोगों को पहले नरेन्द्र गुप्ता से लेनी चाहिए। जिसको प्रमोशन भी मिला है और हैड क्वाटर भी नही बदला। बाबूलाल ने धीरे से कहा।

नरेन्द्र गुप्ता जान बूझकर नजदीक नहीं आ रहा था। अपना थलथल शरीर कुर्सी के बाजुओं में फसाये व्यस्त सा बना अपनी सीट से चिपका हुआ था। एक बार तो वह अनसुनी कर सब-कुछ टाल गया। मगर जब देखा, कुछ लोग हैं जो उसकी घेराबंदी करने पर आमादा है तो उबल पडा—बताओ किस किसको मेरे प्रमोशन से सच्चे दिल से खुशी हुई है। सब मन-ही मन जल रहे हैं। बाबूलाल से पूछो सवेरे से मुह बनाये ऐसे घूर घूर कर मेरी तरफ देख रहा है जैसे खा ही जायेगा।

—यह तो है ही ऐसा झगडालू। कृष्णदेव ने बहुत धीरे से कहा ताकि नरेन्द्र गुप्ता सुन न सके चलो बाबूलाल सबको बाहर ले चलो। हमने सोचा था दोनो मिलकर कुछ कराग तो ज्यादा लुत्फ रहेगा।

—मानो मेरे भाई। बाबूलाल ने असमजस में पडते हुए अपने लम्बे कद को कुछ और ऊपर खीचा, मैं यह ट्रासफर एफैक्ट नही कर पाऊगा।

—रहने दे कौन छोडता है। नरेन्द्र की तरह दोहरी बात मत कर। असली पार्टी तो बाद मे घर पर लेंगे अभी तो बस कैन्टीन में रिहर्सल भर हो जाए। माथुर ने बाबूलाल का कधा हिलाते हुए कहा।

—चलो भी यार उठो। कृष्ण ने एक मरियल से बाबू की पेन्सिल छीन कर अपनी जेब में डाल ली।

—सब कन्टीन की तरफ बढ़ चले तो शाखा अधीक्षक महोदय ने धारस कहा — नरन्द्र गुप्ता अकेला रह गया है। अच्छा नही लगता। अपना-अपना स्वभाव है। हम लोग क्यो ओछे बनें। जा भाई, उस भी बुला ला। एक मरियल सा लगने वाला बाबू जल्दी स गुप्ता को भी खीच लाया।

बाबूलाल कन्टीन से बाहर निकला। तीन रुपये पतीस पसे लुटाता हुआ और कल्ले म बाबुओ चपरासियो की वाहवाही लूटता हुआ। मगर मन बेचैन था सो बना रहा। कुछ गलत हुआ जरूर है। वह जोर स हसा।

दो

खट खट खर खर। खर खर खर खर। धर्मेश बाबू हडबडाकर उठ बठे। कही ड्यूटी पर नीद तो नही आ गयी। दरअसल यह टेलीग्राफ इन्स्ट्रूमन्ट की खोट नही थी। यह तो आगन मे राजू के गिल्ली डडा पीटन की खटर-पटर थी। सामने गीता लोहे की छोटी आलमारी म से कोई चीज निकाल रही थी।

—ओफ! तुम लोगो का जरा भी लिहाज नही। तुम और राजू एक ही श्रेणी म आते हो। तुम लोगो को रात भर जागना पडे तो पता चले। धर्मेश अगडाई लेते हुए चारपाई के नीचे चप्पल ढढन लग।

—जानती हू। नाइट ड्यूटी दी हुई है। और भी बहुत स लोग है कालोनी म आप जैसे, जि ह रात को जाग कर काम करना होता है। मगर मोहल्ले भर का काम तो इमस रुक नही जायगा। गीता बोलती जाती है।

—ठीक है ठीक है। अब लक्चर बन्द करो। धर्मेश तल्खी से बोलत हैं, तुम्हारे पास तो हर बात का जवाब पहल स ही तयार रखा है।

—एसी कोई बात नही। बारह तो बज चुके ह। हम तो अपन साहब का ध्यान रखत ही हैं। गीता तिरछी नजर डालकर मुस्कराती है शुक्र मानो ग्यारह बजे नही उठाया। बाबूलालजी आये थे। गीता न खास जानकारी दते हुए अपनी सहिष्णुता का परिचय दे डाला।

—क्या कहता था ?

—वही जाने या आप जाने। कहते थे फिर मिल लूंगा।

—दफ्तर के टाइम के बीच यारी निभाने आया होगा। खैर वह तो कुछ-न कुछ काम करता है। वरना क्लर्क जात। कौन इन्हें कुछ कह सकता है। काम करो, करो। न करो, न सही।

धर्मेश नहाने धोने में लग गए। फिर खाना खाते ही आंखें अलसाने लगी। गीता से बोले—अब तक बाबूलाल तो आया नहीं। ...

फिर कमरे में जाकर सो गये।

ढाई बजे के करीब बाबूलाल ने फिर धर्मेश का दरवाजा खटखटाया। इस बार भी गीता बाहर आयी और बोली—भाई साहब, वे तो आपकी प्रतीक्षा करते करते फिर सो गये हैं। अब तो हम उन्हें उठायेंगे भी नहीं। उनका मूड बिगड़ा हुआ है। चिड़चिड़े ...। कहते कहते गीता रुक गयी। यह सब पराये आदमी के सामने कहने की क्या जरूरत है। वे भी क्या करें बीस साल से ज्यादा हो गये सुबह शाम रात की ड्यूटी देते देते।

—अच्छा तो बड़ा निराश सा स्वर निकला बाबूलाल का कल सही।

बाबूलाल ने बड़े ढीले कदम उठाए। फिर जबरदस्ती कदमों में गति लाने की कोशिश करने लगा। उसे बार बार अहसास हो रहा था कि उसके मस्तिष्क की गति ठप पड़ती जा रही है।

धर्मेश इस घड़ी मिल जाता तो कितना अच्छा रहता। करना-कराना तो क्या था। धर्मेश इस केस में कर भी क्या सकता है। वह रेलवे में और मैं ठहरा राजस्थान प्रशासन का कर्मचारी। बस इतना ही कि पूरी ईमानदारी से निष्कपटता से मेरी बात सुन लेता, अगर कहीं कोई सुझाव उसके दिमाग में आता तो उसे बता देता। उसके साथ एक प्याली चाय ही पी लेता ढंग से।

मगर धर्मेश को आज फिर नाईट ड्यूटी म जाना है। इसलिए उसे अपनी परेशानी म और परेशान करने म क्या लाभ।

अब एक पत्नी ही रह जाती है सुभद्रा जिसमे इस विषय पर बात की जा सकती है। हालाकि सुभद्रा इस मामले म ज्यादा समझदार औरत नही है। फिर भी आखिर पत्नी है। उसके सुख-दुःख की साझेदार है। भले ही बाबूलाल की नजर म वह एक पुराने ढर्रे की गवार औरत हो, मोहल्ले वालों की नजर म वह बहुत होशियार दुनियादारी की पूरी पहचान रखने वाली व्यावहारिक औरत है।

वह खुद भी कहा समझदार था। अब भी कहा है समझदारी उसम ? हर जगह मात। थोड़ी थोड़ी दूरी पर ठोकरें ही लिखी है उसके भाग्य म। परन्तु यह तो भाग्य का प्रावधान है। उसकी नासमझी नही।

नासमझ तो वह बहुत पहले था। मगर अब ?

वह समझने लगा है। बहुत कुछ। जिन्दगी के बारे म।

जिन्दगी जीना एक बात है। जिन्दगी गुजारना दूसरी बात। इस तरह जिन्दगी पर सोचना भी कम महत्व की बात नही। धर्मेश भी तो अक्सर उसस यही कहा करता है—हम लायलपुर से अपने साथ आजादी के सुनहरे लहलहाते हुए सपने लेकर चले थे। उसने वैचारिकता का बहुत बड़ा धरातल धर्मेश के साथ रहते रहते भी पाया है। एक बेहतर जिन्दगी के बारे म सोच विचार किसी परिपक्व मस्तिष्क की ही देन होती है। वरना किसे फुर्सत है। कौन सोचता है—क्या कर रहे हैं। किस हाल म है। जी रहे है या फिर शायद मर रहे है।

सहसा उसे अपनी पदोन्नति का ध्यान हो आया। कुछ मिनट तक उस पर इसका नशा-सा छाया रहा। पास तो हुआ हो है। यह दीगर बात है और ज्वाइन नही करता। उसे लगा पदोन्नति हुई है सो हुई है। मानसिक विकास भी जरूर हुआ है। ऐसे विचारो का जन्म उसके प्रबुद्ध हो जाने का लक्षण है। भले ही यह सब आधी उम्र बीत जाने पर हुआ है।

जिन्दगी कब कैसे सास तोड़ती जोड़ती बाबूलाल के पोर पोर से खिसकती चली गयी। बाबूलाल को अब ख्याल आता है। गाव का टूटा फूटा नक्शा जो उसके अन्तस मे उभरता है बड़ा अजीब है। एकदम बदरंग शक्ल

लिए हुए। कहीं किसी चीज म ताल मेल नहीं। न तो रास्ता म। न मकानो म। न मेना म। न कपडे लत्ता मे। कम कहा, अधूरा मेत अधूरा मकान, अधूरा रास्ता अचानक खत्म हो जाये, कुछ पता नहीं चल सकता था। सूखा पडता ता बडे-बूढ़ो की जबान मे खुश्की आ शामिल होती जिसकी कोई व्याख्या नहीं की जा सकती।

दो चार बच्चे किसी पगडडी के पास बैठे होते गप्पो के सहारे। या ठीकरिया के खेल म मशगूल, फिजा म रौनक भरन की कोशिश कर रह होते तो किसी के दद्दा की, तो किसी के चच्चा की, किसी की अम्मा की एक ही करारी झिडकी बने-बनाय गाढे रग को बदरग कर देती। किसी काम को इनकार करन की तो किसी मे हिम्मत ही कहा होती। चाहे वह काम बच्चो क बस-बूते का हो न हो। पसन्दगी नापसन्दगी कौन देखता है। मिट्टी ढोओ। गोबर लीपो। चारा काटो । किसी लडके का 'जरा रुको' कहना तक बडे लोग कहा सहन करते थे। इतना कहते ही उनकी शामत आ जाती। उसे घसीटत हुए ले जाने वाला की कमी नहीं थी। नगे बदन पर कितनी खरोचें आ गयी, कौन गिनता है।

इसी गाव मे बाबूलाल का जन्म हुआ था। जिस जगह वह अपने परिवार मे रहता था उसे मकान ही कहना पडेगा। अधूरा-अधूरा। आगन का बास का फाटक, बडे कमर मे एक साबुत दरवाजा। बस। और रसोई का दरवाजा या तो शुरू मे ही आधा था या बाद मे टूट गया था। जमीदार और महाजन की मार सहते सहते, अधूरी जिन्दगी बिता कर बाबूलाल का बापू चल बसा था। मा का स्नेह उसके प्रति कुछ बढ गया था। वही उसके लिए, जिस तिस के घर हाडतोड मेहनत किया करती थी।

बाबूलाल न थाडा होश सम्भाला तो वह भी मा के साथ जुटकर मेहनत करन लगा। उसके मन मे एक डर समाने लगा था कही बापू की तरह मा भी उसे छोडकर न चली जाय। अपन कच्चे मकान को देखता तो यह डर—कि गिर न जाये।

भला एसे म कोई जिन्दगी के बारे मे सोच सकता है। उन्ही दिना गाव म मास्टर जी की नियुक्ति हुई थी। मास्टर भोलानाथजी घर घर जाकर बच्चे जुटान मे लगे रहते थ। इस मामले मे बाबूलाल की मा खूब समझदार

निकली। वह बाबूलाल को नियमित रूप से स्कूल भेजती। मास्टर साहब को लड़का होशियार लगा। तीन साल बाद उसे साथ के कस्बे भिजवा दिया। जहां उसने आठवीं पास की। और अधिक पढ़ा पाने की मां की सामर्थ्य नहीं थी। इधर बाबूलाल की बड़ी बहन धनिया की शादी होनी थी। बाबूलाल इसी दफ्तर में चपरासी लग गया। बहन की शादी की। खुद दसवीं पास की। चार साल बाद बाबूलाल बाबू बन गया। गांव के महेश्वर काका ने अपनी लड़की सुभद्रा को चार जमात तक पढ़ा दिया था। इसलिए बाबूलाल को पढ़ी लिखी लड़की मिलने से खुशी ही हुई थी।

कस्बा शहर में तब्दील हो गया। कई नई नई फक्टरियां लग गयीं। नये-नये दफ्तर खुल गये। ट्रकों की आमदरफ्त बढ़ गयी। इस गहमागहमी के आलम में दूर-दराज के इलाकों से कई पदाधिकारी आकर बस गये। कई कम्पनियों ने अपने कर्मचारियों के लिए क्वाटरों की लाइनें बिछा दीं।

नये से-नये फशनेबल कपड़ों जूतों का प्रचलन हुआ। लेकिन बाबूलाल में खास तब्दीली कहां आयी है।

इतना कुछ तो हो गया है पिछले कुछ ही सालों में। फिर बाबूलाल को अपने बचपन से अब तक का वक्फा शून्यकाल-सा क्यों प्रतीत होता है। ऐसा शून्य तो पहले कभी नहीं रहा।

हां, अपने मन के शून्य को भरने की चेष्टा अपने तथाकथित शुभ चिंतकों के कहने से करता रहा है। रेलवे स्टाफ के एक बाबू से वर्दी की पेंट कोट सस्ते दामों खरीद कर सूट फिट करवा लिया। मगर इस सूट को भी आठ मास गुजरने को आये हैं।

हां, पिछले साल धर्मेश के कहने से उसने एक टाई जरूर खरीदी थी।

यही सब सोचते सोचते बाबूलाल अपने घर की तरफ बढ़ता जा रहा था। धर्मेश नहीं मिला सुभद्रा तो मिलेगी। बहुत समझदार न सही। धर्मेश कौन-सा बड़ा समझदार है। अगर समझदार होता तो अभी तक तारबाबू ही रह गया होता। ट्रेनिंग से ऐन पहले छुट्टी पर चला गया। वापस आया तो स्टेशन मास्टर ने स्पेयर नहीं किया। उसकी जगह कोई और होता तो स्पेयर होकर रहता। किन्तु धर्मेश जबान नहीं खोल सका। उसके सब साथी

ए० एस० एम० बन गए है। अब कहता है अपनी ता तबीयत ही मारी गई। यही खुश ह। ठेठ ईमानदारी की नौकरी।

दिवस — चार

शाम का घुधलका छाया था। जब धर्मेश बाबू अपने क्वार्टर पर पहुँचे। चाल म खासी मस्ती थी। मन स्थिति सुधरी हुई। आज पूरा सप्ताह बीत चुका था। रात की ड्यूटी से विराम मिला था। कल से दिन की ड्यूटी थी। रात अपनी थी। इसलिए यार-दोस्तो मे इधर-उधर काफी दर लगाकर वाजार स खान-पीने का कुछ अतिरिक्त सामान लेकर चल थे। अपन को बहुत ही हल्का-हल्का महसूम कर रह थे। मन मे यह साच भी जुड़ी थी कि चूकि घर से निकल बहुत देर हो चुकी है। रात घिरने वाली है। इसलिए गीता जरूर दरवाजे पर मुह फुलाए खडी होगी। फिर वह कुछ एसा कह देगा जिससे वह बहुत धीमे से मुस्करा देगी। और हसी छिपान की चेष्टा भी करेगी। जान बूझकर मुह कडा करेगी——जाओ दोस्तो के पास। हम तो आपस नही बालते।

धर्मेश न सोचा, वह कह देगा——मत बोलो बाबा। आज तो हमे फुसत है। जो कहना सुनना हो रात को ही सही।

परन्तु घर म पाव रखा तो कोहराम छाया हुआ था।

——कुलच्छनी, यह गीता की आवाज थी, घर उजाड़, रडी, न जाने क्या-क्या शब्द निकाले जा रही थी वह। साथ ही वह हाफ भी रही थी। सामन मनिता तनकर खडी थी।

——आखिर हा क्या गया, दुनिया को तमाशा दिखा रही हो। धर्मेश बाबू न थले रखत हुए कहा।

——इसी लाडली से पूछ लो ना। सारा मिटटी का तेल गिरा दिया। गीता आप म बाहर हा रही थी।

सुनकर धर्मेश बाबू को भी दु ख हुआ। किन्तु जो हो गया सो हो गया' सोचते हुए उन्होंन मनिता का पक्ष लिया। पत्नी से बोले—गीता, अब बस भी करो गलती सबसे होती है। जानकर तो गिराया नही इसने।

—मैंन खुद देखा था डडी, दीदी ने पीपे को पर स जोर से ठोकर मारी थी।

—सुन लिया। मुझे पहले ही शक था इस कलमुही पर, कहते-कहते गीता एक बार फिर पूरे तैश मे भरकर मनिता पर टूट पडी। लात और घूसो मे तसल्ली नही हुई तो निकट पडी अधजली लकडी को उठा लिया। अब धर्मेश बाबू बीच मे आए मगर तब तक गीता दो-तीन वार कर चुकी थी। मनिता की बाहे और गाल बुरी तरह मे सूज रह थे। वह बिल्कुल बुत बन गई थी।

—हद हो गई गीता तुम्हारे गुस्से की। लडकी जवान होने को आई, कहीं ऐसे हाथ उठाया जाता है भला, कहते हुए धर्मेश बाबू मनिता को पकडकर कमरे की तरफ ले जान लगे। राजू को पडोस मे आयोडेक्स की शीशी माग लाने को कहा।

—हा हा, करो टहल सेवा। आप ही ने तो इसे सिर पर चढा रखा है, गीता का बयान खत्म होने म नही आ रहा था। बालो को पीछे समेटते हुए तेल स सन फश पर फिर निगाह पडी तो चेहरे पर 'हाय' जैसा भाव प्रकट हुआ—कितनी मुश्किलो स पसा-धेला बटोर कर जिस तिस की मिन्नत करने के बाद यह कनस्तर भरा था।

—तुम्हारे पास पहले भी तो दो कनस्तर करोसिन भरा पडा है, मुह पर रुमाल फेरते हुए धर्मेश बाबू ने फश को घूरा तो उनकी जबान म भी तल्खी आ गई—तूने क्या करोसिन से घर को आग लगानी है?

—हा हा जिस तरह आपने बच्चो को बिगाड रखा है उस तरह तो जरूर एक दिन इस घर को आग लगकर ही रहेगी। गीता का चेहरा और ज्यादा तमतमा आया।

दो मिनट तक धर्मेश बाबू गीता की तरफ देखते रह गए। फिर धीरे से बोले—क्या तूने और करोसिन कबाड लिया? तुम्हे कहा मे मिल जाता है इतना तेल? स्वर से स्पष्ट था कि वह अपनी पत्नी का लोहा मानते हुए

उसकी दक्षता पर उसे शाबाशी दे रहे हैं।

दाद पाकर जिस तरह किसी मच कवि का गला साफ हो जाता है ठीक उसी प्रकार गीता के स्वर मे निखार आ गया—मुझे तो चारो तरफ निगाह रखना पडती ह। बस, चास ही कहिए कि मैने पहल कर डाली वरना । कहते कहते उसने बिजली का स्विच आन कर दिया जिसस पूरा आगन रौशन हो गया। नीली साडी का पल्ला सिर से सरक आया। गोरा चहरा और दीप्त हो उठा। गीता आगे सुनाने लगी—आज सुबह से ही लड्डू की मा सामान समेट रही थी। मैने जाकर पहले तो अपने लायक काम पूछने की काई औपचारिकता दिखायी। फिर मौका देखकर उसे समझाने के लहजे से कहा—बहन जी, ट्रासफर पर जा रही हो। तल का कनस्टर कैसे सम्भालती फिरोगी। बेशक दो चार रुपये ज्यादा ले लो, तल तो मुझे ही देकर जाना।

—मैं अच्छी तरह से जानता हू गीता, प्रभु बहादुर का तेल पर एक भी पैसा खच नही करना पडता। धर्मेश बाबू ने बीच मे अपना ज्ञान प्रदर्शित किया, स्टोर ईशअर जो ठहरा।

गीता ने जरा तुनककर कहा—क्या यह बात मुझे तुमसे जाननी है। उनके यहा क्या कुछ फ्री म आता है, तुम मर्दों की अपेक्षा औरतें ही ज्यादा जानती हैं। सारा दिन गली मे बैठती ह तो क्या इतना भी पता नही चलेगा। परन्तु किसी शरीफ औरत से यह थोडा ही कहा जाता है कि तुम्हारे पास हराम का माल है। हो। यह ता उनकी होशियारी है। मगर कोई इसे लुटाता थोडे ही है।

अब धर्मेश बाबू की आगे बोलने की जुरत जाती रही।

गीता साडी से अपने चौडे माथे से पसीना पोछती हुई आगे बोली—उस शरीफ औरत ने मुझस वायदा किया तो निभाया भी। लेकिन बाद मे और औरतो ने उस बेचारी से झगडा कर लिया। दिन भर मुझसे भी मुह फेरे रही। खैर, अपना ता काम बन चुका था। यह सम्पूर्ण कथा सुनाते-सुनाते गीता के स्वर मे गर्व का समावेश हो आया। कुछ पलो के लिए वह जैसे भूल ही गई कि जिस चीज की उपलब्धि उसे इतना पुलकित कर रही है थोडी देर पहले उसी ने तो बह कर इस घर म मलाव ला दिया था।

—ओह, धर्मेश बाबू की नजर सहसा फर्श पर पड़ी—आखिर यह सब हुआ क्यों। मैं तो मान ही नही सकता, मनिता जसी सयानी बच्ची जान बूझकर नुकसान कर। एक बाजू का दूसरे म कसत हुए वह अपने स ही प्रश्न का उत्तर चाह रह थे।

—मैंने जानकर गिराया था, मनिता एक गाल को सहलाते हुए चीख उठी फिर मा को घूरते हुए बाली—ला, अब और पीट लो। जितना तुम मे दम हो। देखना अब दूसरा पीपा और गिरा दूगी। सीमेंट के दोना कट्टे नाले म फेक आऊगी और । गुस्स म कापत हुए अब वह पहली बार रोने लगी नहान के साबुन की सारी टिकिया टकी म डाल दूगी। ला मजे सामान जोडने के। मदे म आप-म-आप कीडे पड जायेंगे ।

—सुन लिया ना सयानी बच्ची का बखान। अब मैं इसे असली मजा चखाती हू। नवाबजादी जबान भी लडाने लगी है। गीता का आवेश वापस बुलदिया छूने लगा। वह मनिता की तरफ लपकी ही थी कि तभी नारायण साइकिल की घटी बजाता हुआ आगन म आ गया।

—क्या हुआ मम्मी ? साइकल को जल्दी स एक आर अटकाकर गीता का हाथ पकड लिया।

—तुम्ही इ ह समझाओ बटा, धर्मेश बाबू न अपना माथा पकडत हुए कहा। वह अजीब पशोपेश म फस गए थ।

—बडा आया मुझे समझाने वाला। गीता न नारायण को एक तरफ धकेल दिया और फिर से मनिता की आर बढी।

—बताओ तो आखिर हुआ क्या है ? नारायण न गीता के सामन आकर परेशानी से पूछा।

—भैया, मैं बताता हू। राजू ने नारायण की पट छूत हुए कहा, मम्मी ने दीदी के पैसे लकर मिट्टी का तेल खरीद लिया था। तब दीदी ने सारा तेल गिरा दिया।

—हू। अब समझा। यह हुई न बात। अब हाथ उठाकर देखो। नारायण गीता के सामन एकदम तनकर खडा हो गया। धर्मेश बाबू का एकाएक कुछ नही सूझा कि क्या करें फिर जस विनती और डाट की मिश्रित भाषा का प्रयोग करते हुए बोल—क्या करत हो भाई। शर्म नहीं

आती।

इस पर नारायण बेकाबू होता हुआ बोला—शम तो मम्मी को आनी चाहिए। मनिता बचारी छह महीना स दूसरी ड्रेस के लिए तरस रही है। कभी स्कूल से डाट खानी है। कभी सहेलियो के मजाक सहती है। एक ही ड्रेस को धोती और टाकती रहती है।

—अर यार छोडो! बन जाएगी दूसरी ड्रेस, धर्मेश बाबू की सास फूलन लगी। वाक्य कही बीच मे अटक कर रह गया।

—मम्मी भी यही कहती है, बन जाएगी। कपडा कही भागा तो नही जा रहा। कैरोसिन, डालडा साबुन जसी चीजो का स्टाक भरती रहगी। मौका लग और यह सीमट को हाथ स जान दे तो मे अपना नाम बदलवा दू। हालाकि अभी मकान की बात पक्की भी नही हुई है। फिर कहगी सीजन है। रेवाडी म कोई चोरी छिप जा जितना गेहू चावल ला द, मगाती रहेगी। भले ही बाद म कीडा या चूहो की मेहरबानी मे आधा रह जाए।

गीता एकदम स्तब्ध रह गई। प्रत्यारोप लगाने की शक्ति उसम नही रही।

सबको मौन दखकर नारायण फिर बोलन लगा—मनिता बचारी हर महीने पैस इकट्ठे करती है। मैं भी ट्यूशन के पसा म से कुछ द दता हू। मम्मी हर महीन 'उधार' कहकर ले जाती है। खब साहब खूब! 'कपडा कही भाग जा रहा है।' कहते-कहते वह चारपाई पर बठ गया। कमीज के ऊपर के दो बटन खोलते हुए, शायद इन्तजार करन लगा कि अब कौन बोलता है। या किसी के पास कहने लायक क्या शब्द हो सकते है।

—तौबा मरी ऐसी औलाद से। गीता की आवाज खुली तो रुलाई भी साथ फूट पडी—नीचा ता हर बार मुझे ही दखना पडता है। क्योंकि मैं ही तो इस घर की नौकरानी जो ठहरी! घर का पूरा ठेका मैंन न रखा है। याद है, एक बार चीनी न होन के कारण तुम्हार दोस्त बिना चाय पिए लौट गए थे तो तुम कितना चिल्लाए थे। तुम्हार डडी के कपड बन जमाना बीत गया है। हर महीने राजू के जूते और अपनी चप्पल लेने की सोचती हू और फिर अपने ही कपडा की तरफ ध्यान दो। क्या मेरा दिल नही चाहता कि मेरा बडा लडका भी दूसर बच्चा की तरह नए फशन क कपडे

पहने ।

—तो इसका मतलब है साबुन, डालडा, चीनी और करोसिन के गोदाम भर ला ।

—गोदाम कहा पर ? कौन नही जानता य चीज बारीबारी स अचानक बाजार स गायब हो जाती है और हम हाथ मलत रहत हैं। कहते-कहते गीता और जोर स रोने लगी।

मनिना सिसक रही थी। नरायण रोब चला रहा था—चुप हा जाओ वरना मुझसे और सुनोगे।

धर्मेश बाब ने अभी तक बाजार वाले कपडे नही उतार थ। इस माहौल से वे आजिज आ चुक थ। पडोस से आयाडक्स की शीशी नही मिली तो झटके स यह कहते हुए घर स बाहर निकल गए—तुम सब खुलकर रोओ, लडो झगडा घर म आयोडैक्स की एक शीशी होनी ही चाहिए। शायद अस्पताल स ही कोई तेल या मरहम मिल जाए।

पाच

बाबूलाल थका मादा घर पहुचा तो सुभद्रा कपडे धो रही थी। हरा पेटीकोट पहने हुए जिस पर किसी दूसरे कपड़े के पीले लाल निशान पड रहे थे। पेटीकोट चूकि गीला था इसलिए बाबूलाल को उसका नजदीक स सामना करने का मन नही माना।

दूर स खडे खडे बताया—नरेश की मा, तुम्ह याद होगा साल भर पहल मैं बड बाबू का इम्तिहान देने गया था।

—साल भर पहने की बातें याद रखने की हमारे पास फुसत कहा है। सुभद्रा ने बाबूलाल की तहमत तार पर डालते हुए कहा हा तो क्या हुआ उसका ?

—मैं पास हो गया। बाबूलाल न आवाज म पूरा उत्साह भरने का

प्रयास करते हुए कहा ।

—यह तो बहुत अच्छी खबर है, नीचे गिरे हुए कपड़ों को फिर से बाल्टी में डालते हुए कहा, कितने का फायदा होगा ?

—यह मत पूछो । रुपये तो पैंतालीस ज्यादा मिलने लगेंगे मगर यहां नहीं ।

—तो कहां ? अपने गेहुए रंग के चेहरे से साबुन की झाग अलग करते हुए सुभद्रा ने आश्चर्य प्रकट किया ।

—एक छोटा शहर है दूर । तुमने तो शायद नाम भी न सुना हो । वहां जायेंगे तो मकान भत्ता भी नहीं मिलेगा । इस तरह मुझे तो तनख्वाह बढ़ने की जगह घटती नजर आती है । तुम्हें एक बार दिल का दौरा पड़ चुका है । तब से हर वक्त डरता रहता हूं । किसी समय भी बड़े डॉक्टर और अस्पताल की जरूरत पड़ सकती है । बच्चे अब ऊंची क्लासों में पढ़ रहे हैं । क्या कैसे होगा मेरी तो समझ में नहीं आता । तुम्हीं कुछ बताओ । क्या तुम लोग अकेले रह लोगे ?

—मैं क्या बताऊं ? मैं तो यही जानती हूं तुम अकेले नहीं रह सकते । दो दिन में तुम्हें बाहर की रोटी से अपच रहने लगती है ।

—तो फिर तरक्की नामंजूर कर दूं ?

—मैं क्या जानूं तुम्हारे दफ्तर की बातें । तीन चार सौ की बात होती तब तो कोई बात भी थी । पैंतालीस रुपये अच्छा, कुछ दे दिलाकर काम नहीं बन सकता जो यहीं रह जाए ।

—वाह नरेश की मां, तुम तो बहुत सयानी हो गयी हो । जमाने की हवा तुम्हें भी लगने लगी है ।

—जिस हवा में रह रहे हैं, वही तो लगेगी । रोज ही तो सुनते हैं रुके हुए काम, एक से एक उलझे हुए केस लोग किस तरह बनवाकर आ जाते हैं । आप भी कुछ सीखो ।

—मैं, मैं कैसे सीख सकता हूं ? बाबूलाल भौंचक्का होकर प्रश्न कर बैठा ।

—तुम क्यों नहीं कर सकते । तुम क्या देवता हो ? चलो देवता की तरह ही करो । तुम धर्मेश से कहानियां सुनते रहते हो पाकिस्तान की । है

ना। आज मैं तुम्हे कहानी सुनाऊ। जरा रको। जल्दी से कपडा का काम समेट कर वह बाबूलाल के सामने आ बैठी।

बाबूलाल अजीब नजर से पत्नी को देखता रहा और सुभद्रा सचमुच मूड म आ गई—सुनो।

—एक बार किसी कस्बे शहर म एक डबल एम० ए० नवयुवक आया। उसन एक ऐस मोहल्ले म किराय का कमरा लिया जिसके नजदीक बगल ही-बगले थ। जिनमे एक से एक आला अफसर रहते थे। नवयुवक उन बगलो की तरफ से हर रोज आता जाता। एक बगले के फाटक पर या फॉसिग के निकट उसे पाचेक साल का बच्चा खेलता हुआ मिलता। पहले कुछ रोज तक वह उस बच्चे को टा टा करता हुआ निकलता रहा। फिर उसके लिए टॉफी ले जाता। कुछ रोज गुजरन पर बच्चे की मम्मी स पूछ कर उसे बाजार ले गया और एक ट्राइसिकल दिलवा दी। सम्बन्ध बढे। उसके डैडी से की बात होने लगी। उन्होने नव-युवक के बार म पूछा तो उसन बताया कि ऐस ही पडे हैं यहा। यू कहिए सड रहे है दो साल से। घर पर सब चौपट हुआ जा रहा है।

—कौन से दफ्तर म काम करते हो?

उसने डिपाटमट का नाम बता दिया और पोस्ट भी बता दी।

—अरे पहल क्यो नही बताया। उस कसन क आफिशियटिंग जनरल मैनेजर तो अपन भाई साहब ही लगे हुए हैं।

—अच्छा तो कपिलदेव जी आपके भाई है। बडी मासूमियत और भालेपन से नवयुवक ने प्रश्न किया जसे कुछ भी न जानता हो।

और इस तरह उसका बेडा पार हो गया। कुछ समझे आप। न क्लर्कों के नखरे सह न ज्यादा चक्कर ही काटे, बाकी सारे स्टाफ को हैरान करके रख दिया उस नवयुवक ने। एक और भी छोटी सी कहानी सुनाऊ?

बाबूलाल ने हाथ जोड दिए—फिर कभी सही।

सुभद्रा को वह एकदम सरल और सीधी समझता था। उसे तो जाने किस किसने मिल मिलकर 'आधुनिकता' के पाठ रटवा दिए हैं। पर यह सब उससे न पहले हुआ है न अब होगा। ऐसा मतव्य देकर बाबूलाल उस आगन म चहल कदमी करन लगा, जहा चहल-कदमी की गुजाइश नही थी।

जब खाना बना तो धीरे धीरे खाना खाता रहा और गहरी साच मे डूबा रहा। इतनी मुद्दत के बाद प्रमाशन मिला और । यही मन स्थिति दो दिन तक बनी रही।

खाना खाने के बाद वह सो गया किन्तु नीद आने का नाम नही ले रही थी। सोचा कि आज ता धर्मेश की नाइट ड्यूटी नही होती चाहिए। उस ही पकडा। हालाकि करगा वह भी क्या। ज्यादा मे ज्यादा वैसी ही कोई सलाह दगा जसी वह खुद अपन लिए मानन को तैयार नही है। वही सलाह तो सुभद्रा पहले ही द चुकी है। चलो और कुछ नही तो यार के साथ वक्त तो कटेगा। धर्मेश की अग्रजी बहुत अच्छी है। एक अपील तो लिखवाई ही जा सकती है उससे, कि मिस्टर नरेन्द्र गुप्ता उससे जूनियर है। कायदे से उसी की ट्रासफर होना चाहिए थी। मेरी नही। यह सब हुआ कैसे। नियमो का पालन नहीं होता तब बनाए ही क्या जात है। परन्तु नही उन्ही नियमो को ही कोट करके मेरे हितो के विरुद्ध कोई नुक्ता निकाल लेना भी उन महारथियो के लिए क्या मुश्किल होगा। काम भी नही बनेगा और नरेन्द्र स भी दुश्मनी। पर पहले से कौन सा वह मुझसे खुश रहता है। देखी जाएगी।

रात के करीब दस बजे होग। चाद आकाश के बीचाबीच पहुच चुका था। अप्रल के आखिरी दिन थ। रत की तपिश कम हुई थी। ठण्डी हवा चल रही थी। यही तो बीकानर के मौसम की विशेषता है। दिन म जितनी गर्मी पडे राते सुहावनी होती है यहा की। दिन भर धूप मे झुलस लेने के बाद कुछ अतिरिक्त थकावट भर जाती है शरीर मे। लेकिन रात यह सब भुला देती है और जल्दी ही ठण्डी हवा से दुलारती सहलाती अपनी गोद म सुला लेती है।

धर्मेश न अपन भाग्य को कोसा। नाइट वीक समाप्त हुआ है मगर आज भी घर म चन स सोना नसीब मे नही। अब कहा जाए। दफ्तर ! उसका दफ्तर तो चौबीस घटे काम करता ह। लेकिन यह उसकी आदत म शुमार नही है कि विना ड्यूटी के भी दफ्तर म जा जम। हालाकि दूसर बहुत स लोग है जो चाबीसो घटे दफ्तर म पडे रहत है। गपशप का माहौल बनाए। गाडिया देखत रहत ह। औरतो के आछ्र चुटकुले सुनत सुनात रहत ह। उन्ह तो काम करना नही होता। दूसरा के रास्त म भी रुकावट बनत है। चाय के लिए एक दूसरे का घेर रहग और कभी-कभी पीने पिलान का भी दौर चल पडता है। पता नही कहा से निकाल लत हैं इतना वक्त और फिजूलखर्ची के लिए पसा। न इनको कोइ हाबी है न बाल-बच्चा का फिक्र। सब मस्तमौला ह। यारा की यारी का दम भरन वाल और वक्त आत हा यारा की पीठ मे छुरा घापने वाले। फिर खुद ही बडी मीठी आवाज निकालेंगे भाई दद तो नही होता। चलो डाक्टर के पास ले चलें।' ल भी जाएगे।

क्या हर्ज है आज मैं भी क्या न महफिल मे शरीक हो जाऊ, धर्मेश न सोचा परन्तु मरे वहा पहुचत ही दूसरा मसला आ उपस्थित होगा। कोई पूछेगा—कसे आना हुआ? कोई कहगा—जरूर छुट्टी चाहिए होगी। तीसरा कहेगा—क्या मेर साथ ड्यूटी एक्सचेंज करना चाहते हो? नही।—नही? तो सच बताओ कम आए थ। एस तो तुम कभी आत ही नही। चलो, मान लते ह कि तुम हम सबको फकत चाय पिलान के लिए ही आए हो। चलो पिलाओ चाय। तब उस जबदस्ती हसत हुए उन्ह चाय पिलानी पडेगी। चलो आज यही शुगल ही सही। उसने जेब टटोली। चाय लायक पैसे तो है ही।

तभी धर्मेश का ध्यान आया। मुद्दत हो गुजर चुकी है दत्ता साहब स मिले हुए। दो-तीन दफा फोन भी कर चुके है। लकिन क्या इस वक्त तक दत्ता साहब सो नही चुके होग? दख लूगा। बत्ती जल रही होगी तो काल बैल बजा दूगा।

सात

दत्ता साहब धर्मेश के जीजाजी के जीजाजी थे। जब किरण दीदी की शादी होने वाली थी तो दत्ता साहब लाहौर में थे। धर्मेश, उसका छोटा भाई और दीदी, माता पिता जिला शेखूपुरा में थे। शादी से पहले कई मसलों पर बातचीत करने यह शेखूपुर आते रहते थे। धर्मेश से उन्हें बड़ा लगाव हो गया था।

किरण दीदी की शादी हुए कोई छह-सात महीने गुजरे थे कि पाकिस्तान बन गया। दत्ता साहब का तबादला पाकिस्तान बनने से पहले ही करतारपुर हो गया था। धर्मेश के पिताजी का मुल्तान। धर्मेश जिला शेखूपुरा की जलती आग में से किसी तरह से बच निकला था। नितान्त अकेला। किसी तरह धक्के खाता करतारपुर जा पहुंचा था। तीन साल तक दत्ता साहब ने धर्मेश को अपने पास रखा था। उसे मैट्रिक कराया था। धर्मेश अब सर्विस तलाश करने लगा था। इसके बाद धर्मेश के एक और रिश्तेदार को धर्मेश के बारे में पता चला तो उन्होंने धर्मेश को अपने पास शकूरबस्ती बुलवा लिया था। वहां उसे पचहत्तर रुपया महीना की नौकरी किसी कम्पनी में दिलवा दी। जिस कम्पनी में वह काम करता था वह जमीनों की खरीद फरोख्त करती थी। कम्पनी के लोग अक्सर एक ही प्लाट को तीन तीन चार चार पार्टियों को बेच देते थे और रजिस्ट्री कराने में हीलहवाल, बहानबाजी करते रहते थे। कुछ लेनदारों से धर्मेश की मुलाकात दिल्ली में हो गई। उसने यह सारा भेद उन्हें बता दिया और यह भी कहा कि वह खुद ऐसी नौकरी करना नहीं चाहता। छोड़ देगा। इससे पहले कि वह खुद नौकरी छोड़ता, मालिकों ने उसे खासा जलील किया। एक महीने की तनख्वाह मार उसे नौकरी से निकाल दिया।

कुछ समय तक धर्मेश मारा मारा फिरता रहा। फिर उसे दिल्ली में एक साथ चार ट्यूशन पढ़ाने को मिल गई। उसने खुद इंटर की तैयारी शुरू कर दी और सर्विस के लिए फॉर्म भरता रहा।

इधर उसने इंटर पास किया उधर उसे रेलवे ने तारबाबू की ट्रेनिंग के लिए सहारनपुर भेज दिया।

कई छोटे-बडे स्टेशनो पर काम करने के बाद पिछले कई सालो से वह बीकानेर मे ही जमा हुआ है ।

दत्ता साहब रिटायर हुए तो धर्मेश ने उनके सामने बीकानेर आ बसने का प्रस्ताव रखा । उन दिनो मादुल कालोनी मे बहुत सस्त फ्लैट बिक रहे थे सो दत्ता साहब यहीं आ टिके और मकान की बैठक मे होम्योपैथिक चिकित्सालय खोलकर बैठ गए ।

कुछ समय बाद दत्ता साहब ने अपनी भतीजी गीता से धर्मेश का जीवन-गठबंधन करा दिया ।

इस वक्त धर्मेश को बेहद थकावट हो आई थी । घर की कलह की मीमासा करते-करते सारा दोष गीता पर आ गया था । सोचा—देखी जाएगी अगर दत्ता साहब सोए भी हुए तो उठा दूगा । गीता की शिकायत करूगा । इतनी बडी हो गई, बच्चो के साथ एडजस्ट नहीं कर सकती ।

आठ

बाबूलाल ने देखा सब तरफ खामोशी है । दरअसल वह निकला ही गलत रास्ते से था । शार्टकट के चक्कर मे । इस शार्टकट ने ही उसके जीवन के कई मोडो को अपाहिज सा बना दिया है । बहुत जल्दी शादी । बहुत जल्दी बच्चे । बहुत थोडे रुपयो का बिल्कुल छोटा-सा किराये का मकान जिसमे पूरा परिवार नही समा पाता । मकान उसे बाहर ही-बाहर धकेले रहता है ।

चादनी रात जरूर थी लेकिन बार बार बादल भी चाद को ढक लेते थे । वह जैसे-तैसे रलवे कालोनी मे पहुचा तो स्ट्रीट लाइट गायब हो गई । कुछ देर वह लहरी पार्क के नजदीक पीपल के पेड के नीचे बत्ती आने का इन्तज़ार करता रहा । बत्ती आई तो आगे बढा । पाया, धर्मेश के क्वार्टर की सारी बत्तिया बुझी पडी है । धर्मेश ने उसे बताया था वहा बारह से पहले कोई नहीं सोता । हालाकि इम्तिहान हो चुके है फिर भी बच्चे कुछ-

न कुछ पढते लिखते रहते है। अगर नाइट ड्यूटी न हो तो वह खुद भी कोई-न कोई पत्रिका या उपन्यास पढता रहता है।

बाबूलाल दरवाजे से सटकर खडा हो गया और आहट लेने लगा। उसे ऐसा आभास हुआ जैसे अन्दर कोई धीरे धीरे कराह रहा है। उसने बहुत आहिस्ता से दस्तक दी तो किसी ने फौरन बिना बत्ती जलाये दरवाजा खोल दिया। वह नारायण था। उसने सोचा डैडी लौट आए हैं।

नारायण को बाबूलाल को पहचानने मे कुछ क्षण लगे। वह भी तब जब बाबूलाल ने कहा—कहो नारायण बेटे कैसे हो? आज तुम लोग जल्दी सो गए। डैडी भी सो गए क्या?

इतने मे मनिता की एक हल्की सी सिसकी सुनायी दे गइ। हडबडी मे नारायण ने कहा—आइ अकल, आइए ना! डैडी डॉक्टर के घर गए होंगे शायद। अभी रात मे मनिता गिर पडी। चोट तो मामूली है। पर मम्मी को वहम है सो भेज दिया। आप बैठिए ना अकल। छोटे से स्टोर को नारायण ने अपना स्टडी रूम बना रखा था। वहीं ले गया बाबूलाल को।

—चाय पिएंगे अकल?

—नही बेटे, बिल्कुल नही। तीन रोज से तेरे डैडी को पकडने की कोशिश मे हू। हाथ ही नही आ रहे। तुम क्या कर रहे हो आजकल?

—बी० ए० फाइनल की परीक्षा दी है। साथ ही कुछ ट्यूशनें भी करता हू।

— बहुत होनहार बच्चे हो। हो सके तो हमारी प्रमिला को भी पढा दिया करो। अंग्रेजी मे बहुत कमजोर चल रही है।

—हायर सैकण्डरी मे है ना? नारायण ने कुछ हिसाब लगाते हुए पूछा।

—हा। यही तो डर है। रह न जाए। स्वर मे कहीं गहरी निराशा थी।

—अकल, आपके यहा ट्यूशन का तो सवाल ही पैदा नहीं होता। समय, आप जानते हैं। है ही कितना। लगभग नही। फिर भी मैं यदा कदा चक्कर लगा लिया करूगा।

—लडकी जात, दूर का रास्ता। वरना मैं ही उसे भेज दिया

करता।

—इतवार को यदि वह आ जाए तो मैं मिलता ही हू। कही बाहर नही जाता। नारायण न उन्ह आश्वस्त करन का प्रयास किया, वैसे मैं किसी दिन शाम को आऊगा जरूर।

बाबूलाल काफी दर तक बठा रहा। नारायण का अब शक होन लगा कि डैडी अब शायद जल्दी वापस न आए। कुछ कुछ चिन्ता भी होने लगी। बोला—अक्ल चल देखें क्या डिस्पसरी म है या किसी कमिस्ट की दुकान खुली हो सकती है?

—हा यही ठीक रहगा। बाबूलाल न उत्तर दिया और दोना घर से निकल पडे।

डिस्पेंसरी म अधेरा था। परले सिरे मे एक जीरो पावर का बल्ब टिमटिमा रहा था। लगा, बच पर कोइ करवट लिय सो रहा है। निकट जाकर दखा अटेंडेण्ट था और खुर्राटे भर रहा था।

—यहा नही आए दीखत। चलें अक्ल! इस बेचार की नीद क्या खराब कर। फिर अगर इस नीद नही आई तो सारी रात हम गालिया देता रहगा।

—इसकी ड्यूटी तो जागन की ही है खर मथन अपनी अपनी किस्मत के अनुसार नौकरी पाई है? चलो बटे! मामूली सी मरहम-पट्टी के लिए क्या धर्मेश बाबू इस वक्त यहा आएग। म उसके स्वभाव का भली भाति पहचानता हू। चलो दख हास्पिटल रोड पर। कोई न कोई मडिकल स्टोर जरूर खुला मिलेगा।

दोना धीरे धीरे हास्पिटल रोड की तरफ बढन लग।

—अक्ल आपको दरी हो जाएगी। आप भले ही चले जाए। आप कल शाम को आए डैडी को रोक रखगा।

—अब दुकान कोन सी दूर रह गई है। दख ही लेत है। उन दोना के बीच थोडी दर के लिए मौन छा गया।

केवल बीकानर मडिकल स्टोर खुला दिखा। दोना उधर ही बढ गए। कोई किशोर या जा कुर्सी पर बठा ऊघ रहा था। कोइ भी ग्राहक नही था।

—अब इसमे कोई क्या पूछे। इस वक्त पौन बारह बज रहे ह। लौट चले। क्या ख्याल है? बाबूलाल न नारायण के कधे पर हाथ रखत हुए कहा।

—ठीक ह। मगर अब ता एक प्याली चाय पीने को दिल कर आया है। अप्सरा होटल सारी रात खुला रहता है। वही चल। चलेग अकल! नारायण ने अपनी कमीज की बाह मोडते हुए कहा।

—आज रात यहीं सही। बाबूलाल न इधर-उधर एक फीकी सी मुस्कराहट बिखेर दी।

होटल के बाहर एक टूटी-सी बेंच रखी थी। वहा दोना बैठ गए। चुपचाप। फिर सहसा कुछ बात चलाने की गज से नारायण बोल उठा—अकल, वतमान शिक्षा नीति के विषय मे आपका क्या विचार है?

बाबूलाल हसने लगा—क्या मजाक उडाते हो हम लोगो का लल्ला! जानते हो हम ता अनपढ ठहरे। हर रोज दफ्तर का एक ही ढर्रे का काम होता है जिसे हम लाग पीटे चले जाते है। अगर किसी को कुछ आता जाता भी था तो सब धीरे धीरे भूल भुला गए ह। फुसत कहा ह इस माहौल म जो अलग से कुछ सोच सके। हर सुबह एक जैसी, हर शाम भी वैसी। वही घर गृहस्थी के चक्कर । अच्छा बताओ तो, मुझे ऐसी डिबेट म खडा करने की क्या सूझी? बाबूलाल हाथ आगे पीछे चलाने लगा।

—सिल, बहुत बडी बात ता आपने इन्ही चार वाक्यो म कह दी। कुछ भी हो, शिक्षा ऐसी तो कतई नही होनी चाहिए जिससे आदमी जीवन म गतिरोध अनुभव करने लगे। नारायण ने अपनी बडी बडी आखो को दो-चार मिचमिचाया जिससे अधेरे में कुछ स्पष्ट देख सके।

—थोडा बहुत अगर कभी अखबार देखता हू तो बस यही देखता हू शिक्षा नीति म फिर परिवतन। नय से-नये, एक से एक बढिया आयोगो का गठन, नित नए फामूले। इन प्रयोगो म तीस साल गुजरने को हो आए। अभी यात्रा जारी है।

—लॉर्ड मैकेले के बारे म पढते ह नारायण ने अपनी बात पर बल देते हुए तीव्रता से कहा, उसकी नीति हर हिदुस्तानी को क्लक मे तबदील कर देने की थी । और अब देखिए तो सबजेक्ट्स की भरमार। देखना है

आनेवाली पीढिया क्या कुछ नही बनती। पिछले मास कॉलेज म हमार प्रोफेसर रघुनाथ सिन्हा ने सेमिनार मे पत्र वाचन किया था। विषय था स्वातन्त्र्योत्तर शिक्षा यही कहा था कि इस बीच शिक्षा न कितने इजीनियर, डाक्टर वज्ञानिक बनाए हैं जो विदेशा म भी अपनी धाक जमाए हुए है। मगर क्या वजह है कि हमारी शिक्षा हमारी परम्परागत नीतिअनुसार वमा भारतीय मानस नही बना पाई जहा आदमी कभी निराश नही होता।

इतने म लडका उन्ह दा कप चाय पकडा गया।

अभी आधा कप चाय खत्म की होगी कि तभी अस्पताल के बडे फाटक से एक आदमी बडी तजी से निकला और उसी तेजी से मेडिकल स्टोर की तरफ बढ गया।

—अक्ल, वह ता डडी ह।

—हा-हा, लगत धर्मेश बाबू ही हैं। चलो देखते हं। बाबूलाल न कहा। चाय छाड काउटर की तरफ बढा।

—नही अक्ल मुझ पम देन दीजिए। नारायण ने उन्ह रोका।

—वाह, सुना है बहुत कमाई करने लग हो। तुमसे कल मिठाई खा लेंगे। जल्दी स जाकर धर्मेश बाबू को देखो, मैं अभी आया।

लगभग साथ माथ हा दोना बीकानर मेडिकल स्टार पहुच। धर्मेश बाबू ही थे। थाडे घबराय हुए। बताया—दत्ता साहब अस्पताल म एडमिट हैं। टाग टूट गई है। बहोश हैं। इजेक्शन ले जा रहा हू। अच्छा हुआ नारायण, तुम इधर आ गए वरना किसके हाथ कहलवाता। मुझे यही रहना पडेगा। कहत कहत धर्मेश न अस्पताल की तरफ बढना शुरू कर दिया था—कहा बाबूलाल जी इस वक्त आप कस ?

—भाई साहब यही सोचा, कई रोज से मिले नहीं। आज आपकी रात की ड्यूटी नहीं है। आज तो रात भ पकडे ही जाएगे। थोडा रुकते हुए बाबूलाल न जोडा—कुछ काम भी था। कोई बात नही, कल मिल लूगा।

—कल नही। दो तीन रोज की तो छुट्टी लूगा। छुट्टी दने मे इचाज लोग जरूर टाग अडाते है। नही मिली तो सिक करूगा। इस हाल म कब

तक कोई ईमानदार बना रह सकता है। अच्छा कहते कहते धर्मेश बाबू अस्पताल के बड़े फाटक की तरफ बढ़ गए।

नौ

नारायण जैसे ही घर पहुंचा देखा, मम्मी, मनिता और राजू भी, सब जाग रहे हैं। नारायण को देखते ही बड़ी उतावली से सबसे पहले मनिता बोली, कहां गए थे भैया ? डैडी भी अभी तक नहीं लौटे।

—तो इसमें इतना घबराने की क्या बात है। मैं डैडी से मिल आया हूं। नारायण ने उन्हें दिलासा दिया।

—भैया, एक सिपाही आया था। आगे कुछ कहता-कहता राजू सुबकने लगा।

—सिपाही ! क्या ? नारायण ने आश्चर्य से पूछा।

—मैं बताती हूं। मनिता बोली, यह सब लोग तो सो रहे थे। दरवाज़े पर दस्तक पड़ी तो मैंने सोचा आप लोग आ गए हैं। दरवाजा खोल दिया। डैडी के दफ्तर का चपरासी काका खड़ा था। बोला—महेश बाबू को हार्ट-अटैक हो गया है। डैडी से कहो ड्यूटी पर आ जाए। मैंने कहा, डैडी घर में नहीं है।

काका मेरे सिर पर हाथ फेरता हुआ बोला—बेटी, मना करना ठीक नहीं है। उन्हें समझाओ। किसी तरह भेज दो। हम लोगों के बस का यह चक्कर नहीं।

—काका, कैसी बातें करने लगे हो। मैं कोई तुमसे झूठ बोलूंगी। मुझे शक हुआ आज फिर किसी ने काका को उस दिन की तरह पिला दी है। खैर, वह चला गया।

—पौना घण्टा गुजरा होगा फिर से दरवाजे पर खट-खट होने लगी। जैसे कोई लाठी से पीट रहा हो। अब की चपरासी के हाथ में मीमो-बुक

थी। साथ म पुलिस मैन भी था। उसके हाथ म भी मार्ई डायरी थी। वह घुटे स्वर म बोला—जल्दी निकालो अपने पापा को।

म डर गई। बताया—अभी तक डैडी नहीं लौटे हैं। मेरा वाक्य पूरा भी न हो पाया था कि वह दोनों कमरे रसोई, स्टोर यहां तक कि लैट्रिन का चक्कर लगा गया।

—तो तुम सबने उन्हें भगा दिया। बताइये कहां गए?

मम्मी बोली—हम बताइये तो बात क्या है?

—सुबह पता चल जाएगा जब वह हमारी गिरफ्त म आ जाएगा। क्या आप सब यही चाहते हैं?

—आखिर उन्होंने ऐसा किया क्या है? मम्मी न पूछा।

—क्या इतनी भोली बनती हैं। बड़बड़ाता हुआ सिपाही चल दिया। चपरासी काका हमारे पास रुककर कुछ कहना चाहता था, लेकिन सिपाही उसे अपने साथ घसीटता हुआ ले गया।

अड़ोसी-पड़ोसी सब जाग गए थ। रामबाबू न बताया फेडरेशन ने जो हड़ताल का नोटिस जारी किया था, अब सरकार ने इस हड़ताल को गैर-कानूनी घोषित कर दिया है। कोई भी आदमी छुट्टी या सिक पर नहीं जा सकता।

नारायण मामले को कुछ कुछ समझ गया। वह गहरी सोच म डूब गया। रात के बारह बज रहे थ। अब उसे क्या करना चाहिए।

—कहां मिले थे डैडी? गीता न पूछा।

—अस्पताल म। नारायण न बहुत धीरे से कहा जैसे कोई दीवार के सहारे खड़ा उनकी बातें सुन रहा हो।

—उन्हें क्या हुआ? अस्पताल कैसे पहुंच गए? गीता घबरा गई और कई सवाल एक साथ कर डाले।

सहसा नारायण कुछ जवाब नहीं दे पाया और सोचने लगा, क्या कहे।

—बताता क्यों नहीं? गीता ने फिर पूछा। वह बार-बार बड़ी उतावली से अपने बालों म हाथ चला रही थी।

—वह ठीक है। उनके कोई मिलने वाले हैं जो अस्पताल म दाखिल

हैं। उन्हीं की देख रेख के लिए वही ठहर गए है। जल्दी मे थे। ज्यादा मैं नही जान सका। नारायण दत्ता साहब का नाम जान बूझकर छिपा गया।

—अब क्या होगा? मनिता भी परेशान हो उठी।

—यही तो सोच रहा हू। जाकर देखता हू क्या किया जा सकता है।

—इस समय अब कहा जाओगे अकेले? रास्ते म कुत्ते भी बहुत हैं। सुबह ही दखना।

—नही, टेलिग्राफ आफिस जाऊगा पहले। फिर किसी से राय लूगा। क्या किया जाए। नारायण ऐसे बोल रहा था जैसे मन ही मन कई कई प्रश्नो का समाधान ढूढने मे व्यस्त हो गया हो।

कहा जाए इस वक्त। क्या साढे तीन घण्टे सो न रहू? नींद आएगी नही और करवटें बदलते बदलते ऐसी-तैसी हो जाएगी। किताब पर भी नजर नही जमेगी। अस्पताल। आफिस। नही पहले अस्पताल। क्योकि अगर पहले अस्पताल नही जाकर ऑफिस चला जाता है और वहा म कोई ऐसी वैसी खबर मिलती है जिसस डैडी का या घरवालो का मनोबल गिरने की आशका हो तो क्या होगा। पहले स ही डैडी को कम परेशानी नही है। हम सब की नतिकता यह कदापि गवारा नही कर सकती कि दत्ता साहब को इस हालत म अलग छोड दें। अगर नौकरी छूट गई तो? नहा, नही! ऐसे कही नौकरी छूटा करती है।

इसी ऊहापोह म नारायण मम्मी से यह कहता हुआ घर स बाहर निकल गया—देखता हू इस वक्त क्या करना चाहिए।

—ध्यान मे इधर उधर आना जाना। नही तो लौट आओ। सवेरे देखी जाएगी। गीता ने चिंतित भाव स अपनी बात दोहरायी।

—नही, नही! इतना ही कह सका नारायण और घर से बाहर निकल गया।

केशव के कमरे की बत्ती जल रही थी। नारायण न धीरे स अगुली से दरवाजा खटखटाया तो केशव न झट स खिडकी खोल दी। चाद बडे पीपल के पड के पीछे था। केशव से नारायण की शक्ल नही पहचानी

गई।

—कौन ?

—नारायण हूं । अभी तक पढ रहे हो ?

—सो तो जल्दी गया था। मगर रात बारह बजे इधर उधर खटर-पटर होने लगी। नेतागण की धर पकड शुरू हो गई। कुछ नारेबाजी भी हुई थी। क्या तुमने कुछ नही सुना। पुलिस पिताजी को भी ले गई है। नींद खुल गई तो तब से पढ रहा हूं। हमारा तो एक पेपर आउट हो गया था। दुबारा देना पडेगा। गलती किसकी फजीहत किसके सिर ?

सुनकर नारायण हैरान रह गया। कहां वह और कहां केशव। केशव के पिताजी को वे लोग ले भी गए। वह खासा नाश दिखाते हुए चले भी गये। बाकी घर वाले आराम से सो भी रहे हैं। केशव ठाठ से पढ रहा है और दूसरी बातें भी कर रहा है। और एक वह है और घर वाले जो आने वाली मुसीबतों की आशंका मात्र से पहले से ही धराशायी हुए जा रहे हैं।

—क्या तुम मेरे साथ थोडी देर बाहर चलोगे ? नारायण ने जरा हिचकिचाते हुए पूछा।

—क्या बात है नारायण ? तुम बहुत घबराये हुए लग रहे हो। कहां चलना है। जहां कहोगे चल पडेंगे। केशव ने कंधे हिलाते हुए कहा।

नारायण बहुत संकुचित हो उठा। वह क्या कहे केशव से। किस तरह बात शुरू करे। पर इससे अपना मुकाबला करना भी बेबुनियाद है। वह एम०काम० में है। खुद भी बाप की तरह नेता है। कॉलिज संघर्ष समिति का अध्यक्ष।

नारायण को एकदम चुप देखकर केशव बोला—तुम एक दफा अन्दर आ जाओ। मैं तब तक कपडे पहन लूं। कहते कहते केशव ने बैठक का दरवाजा खोल दिया।

नारायण सोफे पर इस तरह जा बैठा जैसे एक मुद्दत का थका हुआ हो।

केशव कपडे पहनने लगा तो नारायण ने कहा—ठहरो पहले यहीं सलाह कर लेते हैं। फिर सकुचाते-सकुचाते सारी बात केशव को बताने लगा।

दस

महेन्द्रनाथ लालगढ़ रेलवे वर्कशाप मे चार्जमैन के पद पर सन 1952 से काम कर रहे थे। 1960 में उन्हें नए क्वाटर बनने पर लालगढ़ रेलवे कालोनी मे अपने पद के अनुसार बी टाइप क्वाटर 91/एफ आवंटित हो गया था। तब से वह सपरिवार इसी मे रह रहे थे।

महेन्द्रनाथ लाल बहुत ही सजीदा और शरीफ किस्म के पतले दुबले आदमी थे। जिससे भी थोडी देर के लिए मिलते, वह उनकी बात-चीत से प्रभावित हो जाता। अफसर उनसे खुश थे, क्योकि वह अपने सारे काम समय से कुछ पहले ही निपटाए रहते थे। यूनियन वाले उनसे कई बार कहते कि वे उनका नेतृत्व करे। किन्तु महेन्द्रनाथ यही उत्तर देते कि यह सब उनके बस का नही है। उनकी ओर भी बहुत सी निजी समस्याए है जिन्हें निपटाते वे थक जाते है। हा यूनियन का शुल्क वे निरन्तर देते रहते थे।

यह बात सही है कि महेन्द्रनाथ भाग्य के धनी नही थे। पहली औलाद नौ वर्ष की होकर मर गई थी। इसके बाद उनके दो लडके और थे। देवेन्द्र तथा उपेन्द्र, जिन्हें वे कुछ ज्यादा ही लाड प्यार मे रखते थे। इसीलिए शायद लडके उच्छृखलता की सीमा पार कर गए थे। आए दिन अडोस पडोस और स्कूल से भी मिल शिकवे आते रहते। जिनसे छुट्टी पाने का महेन्द्रनाथ के पास एक ही उपाय था शिकायत लाने वाला के सामने हाथ जोड देना और शिष्टता मे बातचीत करना। वे स्वय पुराने दमे के मरीज थे इसलिए भी नागवाग उनसे सहानुभूति रखते। उनके हाथ जोडते ही एक दूसरे से कहने लगते—इसमे शरीफ आदमी का क्या दोष। औलाद अगर ऐसी निकल आए तो कोई भला क्या करे।

पत्नी शुरू से ही गठिया से पीडित रहती थी। उसकी मृत्यु के बाद तो लडके और भी आवारा हो गए। दोनो ही ने दसवी मे दो दो तीन तीन बार फेल होकर पढना छोड दिया था।

पिछले दिनो बडा लडका देवेन्द्र एक लडकी भगा लाया था। लडकी के मा बाप ने अपनी पेश न चलते देखकर तथा अपनी गरीबी का ख्याल

करते हुए साथ ही महेन्द्रनाथ के रामझाने-बुझाने के बाद, एक मन्दिर में निहायत सादे ढंग से इनका विवाह करा दिया था।

लड़की काफी तेज-तर्रार थी। कई दफा तो महेन्द्रनाथ का भी अपमान कर देती थी। पति तथा देवर पर भी रौब गांठे रहती थी। इन सब बातों से महेन्द्रनाथ ज्यादा दुखी रहने लगे थे। उनका दमे का रोग बेतहाशा बढ़ चला था।

हां, उस लड़की में, अगर कोई सिफ्त कही जाए, तो वह यही थी कि वह अपने पति देवेन्द्र पर, रौब डाल डाल कर उसे पढ़ने के लिए मजबूर करने लगी थी। इससे देवेन्द्र ने फिर से थोड़ा थोड़ा पढ़ना शुरू कर दिया था।

इन्हीं दिनों महेन्द्रनाथ को दमे का ऐसा दौरा पड़ा कि वे इस दुनिया से चल बसे।

यूनियन वालों ने भाग दौड़ की और जल्दी ही देवेन्द्र को गेटमैन की नौकरी दिलवा दी। देवेन्द्र ने उन्हें घर पर ही हल्की फुल्की शराब की छोटी सी पार्टी दी। इस प्रकार देवेन्द्र उपेन्द्र के सम्बन्ध यूनियन के कार्यकर्त्ताओं से घनिष्ठ हो गए।

ग्यारह

इधर प्रेमचन्द दत्ता जो काफी समय से अन्तरिम रूप से 'ए टाइप' (छोटे क्वाटर) टी ए/1 में रह रहे थे और बी टाइप क्वाटर की प्रत्याशी सूची (वेटिंग लिस्ट) में चल रहे थे को वही महेन्द्रनाथ वाला क्वाटर न० 91/ एफ अलॉट हो गया। देवेन्द्र को एक आदेश-पत्र जारी किया गया कि वह अब 'बी टाइप' क्वाटर खाली कर दे और यदि चाहे तो ट्रैफिक ब्रांच का फोर्थ क्लास क्वाटर टी ए/1 में जाकर रह सकता है।

चूंकि महेन्द्रनाथ की नई नई मौत हुई थी इसलिए एकदम से प्रेमचन्द

ने देवेन्द्र परिवार को डिस्टर्ब करना उचित नहीं समझा। लम्बी प्रतीक्षा के बाद फरवरी की पच्चीस तारीख को प्रेमचन्द देवेन्द्र के घर पर पहुचे। दोनो भाइ किसी और ही आलम म बैठे थ। प्रेमचन्द न पहले तो औपचारिकता-वश उनमे महानुभूति के कुछ शब्द कहे। थाडी इधर उधर की बात भी चलाई किन्तु दोनो भाई प्रेमचन्द के आने का असली मकसद जानने थ इस लिए प्रेमचन्द के हर वाक्य के प्रति शुरू स ही विरक्त बने रहे। अन्त मे उठने का उपक्रम करत हुए प्रेमचन्द ने कहा—अब आप लोग यह क्वाटर खाली कर दें। मैं खुद छाटे-छाटे बच्चा के साथ बडी मुश्किल स उस क्वाटर में गुजारा कर रहा हू।

—आपके पास तो अपना मकान है। आप वहा क्या नही रहत ? देवेन्द्र ने रूखेपन से पूछा।

देवन्द्र न बात खत्म की थी कि उपन्द्र झट से बोल उठा—मैंने पता किया है, कायदे स यह क्वाटर आपको मिलना ही नहा चाहिए। जरूर आपने किसी से साठ गाठ कर रखी होगी।

—आप लोग असली बात समझन की कोशिश करें, प्रेमचन्द न अपनी छोटी छोटी मूछा पर उगलिया फेरत हुए, थाडा हडबडाकर कहा, दर-असल वह मकान मरे पिता जी क नाम है, मेर नाम नहीं। इसीलिए मुझे यह क्वाटर अलॉट हुआ है। मैं यदि पिता जी के साथ रह सकता, तो यहा फोर्थ क्लास का क्वाटर नहीं घेरता। रात दिन की ड्यूटिया रहती है इसलिए हर वक्त बीकानेर से आया जाया नहीं जाता। आप कृपया साचकर बता दें कि आप लाग यह क्वाटर कब तक खाली कर पाएगे। मैं तब तक और प्रतीक्षा कर लूगा।

—म्हे ता कदई खाली कोनी करा। अन्दर से लम्बा कर्कश स्वर उभरा। यह देवेन्द्र की नई नवेली दुल्हन थी, जो दरवाज़ म सटी, सारे वार्तालाप सुन रही थी।

—बहन, जी आपको मर्दो की बाता म नहीं पडना चाहिए। प्रेमचन्द ने उसे चुप कराने की चेष्टा की।

—म्हे बीच म क्यू नी पडू ? म्हार धणी री सलाह बिना म्हे की कोनी करू, की कोनी कवू। आरी मर्जी बिना थार कैया सू म्हे वारे चाय

बणाय लासू ? दुल्हन ा अब की बार और उबलती भाषा म अपन पूरे परिवार का मतव्य स्पष्ट कर दिया।

इस कचीनुमा जबान के आग प्रेमचद न हथियार डाल दिय। वह फौरन उठ खडे हुए। दवद्र एक शब्द भी नही बोल। यहा तक कि चलते वक्त उन्हान प्रेमचन्द क अभिवादन का भी उत्तर नही दिया।

सरिता न, इस आशा स कि अब उन्ह बडा क्वाटर मिलने ही वाला है अपन पिताजी को लिखकर दिल्ली से फ्रिज मगा लिया था। जब प्रेमचद घर पहुचे तो सरिता हाफ रही थी। चारपाई की बगल म फ्रिज किसी तरह भी फिट नही बैठ रहा था। इस पर प्रेमचन्द न आते ही यह डाला—और लो फ्रिज। इसके बाद सारा माजरा बयान करन लगा। यह सब सुनत ही सरिता का मुह और लटक गया। वह एक शब्द भी नही कह सकी किन्तु प्रेमचन्द के दोना लडके जो मा की मदद कर रह थे बहुत भटक गय। बडा लडका वद जो अब छठी कक्षा मे पढ रहा था बोला—इस तरह तो हमारे पास कभी बडा क्वाटर आयगा ही नही। हमसे नही रहा जाता यहा चुहिया खाने मे। इस पर छोटे लडके सुशील ने दोहराया—नही रहग चुहियाखान मे। हम दिल्ली भेज दो।

—बच्चो कभी बढ चढ कर बातें नही करनी चाहिए प्रेमचन्द न उन्ह समझाना शुरू किया या शायद वह अपन आपको ही समझा रह थ, दिल्ली बम्बई का असली हाल तुम नही जानत वहा इसस भी छोटी छोटी जगह मे ऊची-ऊची पोस्ट के लोग रह रहे हैं और पता है कितना कितना किराया देत हैं! हमारी तनख्वाह स भी ऊपर। प्रेमचन्द न दोना लडका को अगल बगल लिया, और उनके बालो म अगुलिया फरने लग। इस प्रकार उन्ह कुछ शाति मिली। परतु बच्चे शात नही हुए।

—या फिर दादा जी के पास बीकानेर जाकर रहग। वद ने कहा।

—हम तो स्कूल से आते समय दवद्र क घर इट फेकते हुए आया करेंगे। सुशील ने कहा तो सरिता जो बिल्कुल मौन खडी थी धीमे से मुस्कराई।

प्रेमचन्द न कहा—अच्छे बच्चे ऐसी बातें नही करते। यह सब नियम

विरुद्ध है। वे लोग और ज्यादा समय तक क्वाटर रोक नही सकते। उन्हे अपने आप एक दिन खाली तो करना ही पडेगा।

बारह

रात पूरी तरह गहरा चुकी थी।

बाबूलाल नारायण से विदा होकर चला तो कोट गेट पर ही उसे जीवन बाबू मिल गये। अपने चिर परिचित लम्बे खादी के कुर्ते मे अपने को सजाए हुए। वे हाथ मे हार लिय हुए थे। मुह मे पान था। जीवन बाबू उसी दफ्तर मे एकाउटेट थे जिसमे बाबूलाल काम करता था। जीवन बाबू अपनी मस्त तबीयत भाषा की अनौपचारिता के लिए प्रसिद्ध थे। टूटी फूटी पजाबी-बगाली मे चुटकुले सुना सुनाकर सबको हसाया करते।

—कहिए जीवन बाबू! इस वक्त हार कहा से लेकर आ रहे है। बाबूलाल उनकी तरफ बढ गया। सोचा चलो रास्ते का साथ मिल गया।

—ना बजे इसे यही मे मालिन से खरीदा था। घर जा रहा था। विश्वज्योति पर ठिठक गया। पाकीजा आखिरी शो। तो फिल्म देखने घुस गया। जाने से पहले इस पान वाले के पास हार छोड गया था। आप कहो बादशाहो किधर तशरीफ ल्या रए हो। हा भई मैं तो भूल ही गया। बधाई हो बधाई। सुना है, प्रमोशन हो गया है साहब का। ठीक है ना!

—धन्यवाद। किसने बताया आपको? बाबूलाल ने कमीज की बाह ठीक करते हुए पूछा।

—नरेन्द्र गुप्ता बता रहा था। जीवन बाबू ने हार लहराते हुए कहा। जिससे हवा मे थोडी सुगध का आभास हुआ किंतु नरेन्द्र का नाम सुनकर बाबूलाल के मुह का स्वाद कसैला कसैला सा हो गया, उसने पूछा।

—क्या उसने यह नही बताया कि उसका भी प्रमोशन हुआ है जो उसे यही पर ही मिलेगा।

—हा हा बताया तो था जीवन बाबू किसी धुन म बोल गय।

—और यह नही बताया कि वह जूनियर पडता है, शायद म यदि किसी का स्थाना तरण होना ही था, तो उसी का होना चाहिए था ?

—होना तो बहुत कुछ चाहिए भाइ ! ‍ वा क तज झाके म जीवन बाबू का लम्बा कुर्ता लहरा उठा उस समटत हुए बाल पर कौन पूछता ह इन छोटी छोटी बाता को।

—यदि मरी जगह नरेन्द्र होता। मैं जूनियर होत हुए भी यहा रह जाता तो वह एसी डोडी पीटता कि जिस आप छोटी बात कह रह हैं बहुत बडी बात बन जाती। ब्राच म क्या पूर दफ्तर म तूफान आ जाता। बाबू लाल की अगुलिया एक दूसर मे फम गयी मन कुछ गलत तो नही कहा ना जीवन बाबू ?

—सौ फीसदी ठीक फरमात हो बाबूलाल जी पहली बार जीवन बाबू ने गम्भीरता से कहा, आपका भोलापन तो यहा वहा प्रसिद्ध है। तुरन्त आप तो सब जानी जान हो, आइया जीवन बाबू न सडक क बीच पान की 'पिच्च' छाडी और फिर हसन लग। अब व दोना तजी स चलत हुए 'प्रकाश चित्र' स आग निकल गय थ।

—जिसकी जान का बनती है वह सीखन भी लगता ह और बालन भी। बाबूलाल के स्वर म खीज उभर आया।

—अगर आपको याद हो बाबूलाल जी ! कुछ साल पहल मैंन आप ही से अज की थी कि आप यूनियन क सक्रिय सदस्य बन जाओ। तब आपको कोइ भी नही हिला पायगा। मगर आपने फरमाया कौन पडे इन पचडा मे।

—ओह ! न चाहते हुए भी बाबूलाल के मुह स उसास निकल पडी उस वक्त ऐसी कोई समस्या नही थी।

—यही तो मजे हैं, जीवन बाबू जल्दी म कुछ अश्लील शब्दा का प्रयाग कर गये जब लगती है तभी बस लोगवाग यूनियन की गोद स आ चिपकना चाहत है।

—सच मानिए जीवन बाबू मैं आज भी यह सब नही चाहता लेकिन नरेन्द्र भी कौन सी यूनियन का सदस्य है। हम तो फिर भी कभी-कभार,

कोई मागने आय, तो चन्दा द देते है। वह तो सबका दूर से ही टरका देता है।

—बडी भाली बाते करते हो प्यार! हैड क्वाटर के बाबू वगरह वगैरह क्या किसी यूनियन स कम होत है? बल्कि कहना चाहिए एक एक बाबू स्वय म एक एक यूनियन है। यदि नरेन्द्र उनकी स्तुति कर आया हो तो, मैन या तुमने उसक पीछे जासूस छाड रखे है।

इतने मे जीवन बाबू की गली आ गयी। मुडन मे पहले बाल—अच्छा तो भी दखेंग। कल एक बार मिल जरूर लेना। यारो की खातिर जान हाजिर है। उन्होने सीटी बजाइ और उसी आवाज के साथ गायब हो गये।

कशमकश मे फसा बाबूलाल अपने दरवाजे तक पहुचा किन्तु दस्तक नही दी। गली मे चारपाई खडी थी। उसे बिछाया और उन्ही कपडो से सो गया।

तेरह

—कहो क्या सोचा, केशव ने नारायण की तरफ हाथ बढाते हुए कहा।

—मेरा तो दिमाग काम नही कर रहा। हा तुम्हें देखन के बाद मरा हौसला कुछ बढा जरूर है।

--भया यदि इतनी छोटी छोटी बातो स घबराओग तो आगे चलकर क्या करोगे केशव ने बडप्पन दिया पता है मेरे पापा कितनी बार जेल हो आय है और मैं खुद? वरन भूख हडताल तुम्हें तो सब पता ही होगा। नारायण कुछ बोलता कि केशव ने फिर कहा—चलो अब बाहर चलें। आज रात घूमने का ही आनद ले।

यह सब केशव ने इतने सहज भाव स कहा कि नारायण को सान्त्वना मिली। बाहर आकर बोला—अब?

—जस तुम्हारी सलाह होगी वैस ही किया जाएगा। हा एक काम

करो। पहले स्टेशन मास्टर साहब से वस्तुस्थिति जान लो फिर आगे विचार करेंगे। लेकिन तुम यह भूल से भी मत बताना कि तुम्हारे डैडी इस समय वहा पर हैं।

—इतना तो मुझे ध्यान है नारायण ने उत्तर दिया।

—अब तुम अकेले चले जाओ। मेरे साथ रहने से उन्हें कुछ और ही संदेह हो जायेगा। ठीक !

—अच्छा कहता हुआ नारायण स्टेशन मास्टर के क्वाटर की ओर बढ गया। वहा पहुचते ही उसने धीरे से अगूठा काल बैल बटन पर रख दिया। कुत्ता भौका। थोडी देर बाद स्टेशन मास्टर स्वय दरवाजे मे आ खड़े हुए—कौन ? लगता है, आज रात पल भर को सोना नही होगा।

—मैं नारायण हू। आज डैडी की नाइट ड्यूटी नहा थी। फिर पुलिस क्यो भिजवा दी। मम्मी परेशान हैं।

—वह है कहा ? ड्यूटी पर बुलाया था तो अभी तक चले क्यो न गये।

—पता नही कहा चले गये। बताकर तो गये नही कहा जा रहे हैं।

—कहीं बाहर ही जाना था तो स्टेशन लीव परमीशन लेनी चाहिए थी, फिर थोडा रुक कर स्वय ही कहने लगे-स्टेशन लीव शायद वह भी उन्हें मिलती नही। शाम को हमारे पास ऐसे आडरआ गये कि सब छुट्टिया बद। जो छुट्टी पर हैं उन्हें वापस बुलाओ। कोई सिक करे तो डी० एम० ओ० उसे अस्पताल मे ही रखेगा। इसके अतिरिक्त सब गैर हाजिर स्टाफ को ऐसा समझा जायगा कि वे स्ट्राइक मे शामिल होने वाले हैं। सो गिर-फ्तारिया तो होगी ही। मानता हू स्ट्राइक नोटिस की डेट अभी थोडी दूर है। पर मजबूरी है। आडर ही ऐसे हैं उन्होने नारायण के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा बेटे वह सवेरे तक तो आ जायेंगे ना। आते ही उन्हें मेरे पास भेजना। टेलिग्राफ इचार्ज से पहले न मिले। कुछ नही होगा। अब तुम आराम करो। अपनी मम्मी से कहना वे भी परेशान न हो।

—धन्यवाद अकल कहता हुआ नारायण लैम्प पोस्ट के निकट पहुच गया जहा केशव खडा उसकी प्रतीक्षा कर रहा था।

नारायण ने अपने और स्टेशन मास्टर के मध्य हुए सारे सवाद ज्यों-के-त्यो केशव को सुना डाले।

—अब क्या दिक्कत है ? यही सारी बात जाकर डैडी को बता डालो। अब पाव तो वजन ही वाले है। कहो तो मैं भी साथ चलूं केशव ने आखें मलते हुए कहा।

—भैया, क्या सचमुच बहुत थक गये हो ? अब आप आराम करो।

अरे नही। मैं कभी नही थकता। केशव ने बडे जोश से कहा और नारायण का हाथ कसकर पकडते हुए अस्पताल रोड की ओर बढ गया।

बडी कठिनाई से वे दोनो ठीक वाड मे प्रवेश पा सके।

धर्मेश बाबू ने मुह पर अगुली रखकर उन्हे चुप रहने का सकेत किया तथा वाड से बाहर ले आये। गलरी मे आकर दोनो हाथ ऊपर की दिशा मे जोडते हुए कहा—भगवान ने मेरी लाज रख ली वरना इनके बच्चो को क्या शक्ल दिखाता। होश मे आ गये। चोट भी उतनी नही जितनी कि पहले आशका थी। यह सब धर्मेश बाबू एक ही सास मे कह गये, जैसे बहुत बडी विजय प्राप्त कर चुके हो।

—डैडी, मैंने मम्मी को नही बताया था कि किसकी तबीयत बिगड गयी है।

—शाबाश अब तो बहुत सयाने हो गये हो। अब बेशक बता देना कि ग्त्ता साहब खतरे मे एकदम बाहर है। हा, मेरी छुट्टी की एप्लीकेशन देने जाना, फिर केशव की ओर मुडकर बोले, सुनाओ केशव बेटे, कैसे हो ? तुमने भी सुबह सवेरे कष्ट किया।

—अकल बात यह है कि आपको तुरत डयूटी पर पहुचना होगा। नही तो । केशव रुक गया।

—नही तो क्या ? नही मिली छुट्टी तो सिक रिपोर्ट कर दूगा।

—इतने से काम नही चलेगा अकल। पहले तो डाक्टर सिक मे देगा नही। यदि देता भी है तो आपको इस अस्पताल मे नही बल्कि रेलवे अस्पताल मे रहना पडेगा। पूरा अधेर शुरू हो गया है। मेरे पापा को भी पुलिस पकड कर ले गयी है। लगा, पहली बार पुत्र को पिता के प्रति दबी सवेदना प्रकट हुई है।

—बुझारते क्यो बुझवा रहे हो भाई, ऐसा क्या किया उन्होने धर्मेश बाबू रुके तो सहसा याद आ गया। ओह नेतागीरी मगर मैं तो कोई नेता

नही हू ।

इसके बाद नारायण ने जल्दी से सारा घटना क्रम कह सुनाया ।

फिर केशव बोला—अंकल अब आप दत्ता साहब की चिंता छोडिए। हम दोनो इन्हे सम्भाल लेगे। आप चुपचाप स्टेशन मास्टर साहब से मिल कर, अपने आफिस चले जाइये ।

दो एक मिनट तक धर्मेश बाबू बुत की तरह खडे रहे। फिर सहसा घोषणा कर दी—मैं नही जाऊगा ड्यूटी पर। दत्ता साहब मेरे अभिभावक है। ऐसे अवसर पर इनसे अलग नही रह सकता।

—परन्तु कोई गारंटी नही कि आप यहा भी सुरक्षित रह पायेंगे। उन्हे जरा भनक पडने की देरी है, बस। केशव ने अपनी जानकारी से अवगत कराया।

—माना बेटे, मैं तुम्हारे पिताजी की तरह दिलेर नही हू तो भी आदमी हू, अपनी आतंरिक नतिकता की बलि नहीं चढा सकता। जब आप लोगो मे से कोई दुपहर तक इधर आये तो कोई लम्बा कपडा जरूर लेते आयें। उसे पगडी की तरह बाध लूगा।

केशव और नारायण चल दिये तो धर्मेश बाबू ने पीछे से आवाज दी। उनके निकट आते ही नारायण से बोले—बहुत जरूरी बात तो कहने से चूक ही गया। पहले सादल कालोनी चले जाओ। दत्ता साहब के दाए हाथ वाले पडोसी के यहा उनके दोनो पोते है। उन्हे अपने घर लेते जाना। एक तार उनके लडके के नाम कर देना। वह अपनी ससुराल मे है। यह काम भी जल्दी हो जाना चाहिए।

—आप निश्चित रहिये अंकल ! सब काम हो जायेगा। यहा के लिए भी सब प्रकार का सामान अटची मे भिजवा देगे। केशव ने उन्हे आश्वस्त किया।

चौदह

दूसरे दिन प्रेमचन्द अपने पर्सनल आफिसर से मिला और सारा माजरा कह सुनाया। वे प्रेमचन्द का बहुत मानते थे किन्तु इतना बडा किस्सा सुनकर उन्हे अच्छा नही लगा, बोले—आप जैसे समझदार आदमी उनसे पर्सनल लेवल पर माथा फोडी करेंगे, ऐसा मैं अनुमान भी नही लगा सकता था। आप तो एक सीधा-सा प्रार्थना पत्र लिखकर दे दो कि मुझे मेरा अलाटिड क्वाटर शीघ्र दिलवाया जाय। बस। बाकी दफ्तर जाने उसका काम। जहा आप इतना अर्सा छोटे क्वाटर मे रह लिये। थोडा और सही। जल्दी मे हमेशा काम बिगडते ही हैं।

—यस सर, कहता हुआ प्रेमचन्द चम्बर मे बाहर आ गया।

सामने जय जागरण प्रसाद सिंह मिल गया। पूछने लगा—कैसे गये थे ए० पी० ओ० के पास?

—ऐसे ही जरा काम था। प्रेमचन्द ने टाला।

—क्वाटर वाला केस तो नहीं था। वह धीमे से मुस्कराया।

—हा, इन दिनो इसी चक्कर मे हू। प्रेमचन्द को कहना पडा।

—वह क्वाटर हम आपको दिलवायेंगे प्रेमचन्दजी !

जय जागरण ने प्रेमचन्द के कधे पर अपना वजनी हाथ रख कर थोडा दबाया यूनियन पड पर जब हमारा लटर ऊपर तक पहुचेगा तो सब की बोल जायगी।

—लेकिन सुना है, आपको तो भ्रष्ट तरीके अपनाने के आरोप मे यूनियन से अलग कर दिया है। जाने कैसे अपने उसूल के खिलाफ प्रेमचन्द सब साफ साफ बोल गया फिर हिचका। जय जागरण ने तपाक से उत्तर दिया—हर ईमानदार आदमी, हर भ्रष्टाचारी की आख की किरकिरी है। रास्ते का पत्थर है। मजारिटी हमेशा ऐसे ही लोगो की रही है। सो निकाल दिया भाग एक प्रस्ताव के बलबूते पर। परन्तु क्या अब भी उन लोगो मे दम है जो मेरी बात को वहा टाल सके ? सच कहता हू प्रेमचन्दजी, आपके आशीर्वाद से जब मैं घुसता हू ना यूनियन चैम्बर मे तो वहा सब की कपकपी छूट जाती है।

प्रेमच न्द समझ गया इसका मोटा पेट चाय के लिए थलथला रहा है। वह जय जागरण प्रसाद सिंह को कैंटीन म ले गया। वहा बठा जय जागरण प्रसाद सिंह, बहुत सी आसमानी बात बनाता रहा कि उसन क्या कुछ किया कराया। किस किस क साला साला स रवे हुए उलझे केस सुलझवा दिय कि सब चकित। किसी के हाथ धरन की कोई गुजाइश नही। जा नही माना उसकी पिटाई भी करानी पडी क्या करते मजबूरी थी।

प्रेमच द न वायदा किया कि जिस दिन क्वाटर उसके हाथ आयगा उसी दिन उसी क्वाटर म ग्रैंड पार्टी होगी।

इतने म एक आदमी जल्दी स आया और जय जागरण प्रसाद सिंह को बुला ले गया।

साथ के बैंच पर नवलकिशोर बठा बार-बार टोपी उतार कर अपने गजे सिर पर हाथ फेर रहा था और बडे मजे स उनके वार्तालाप का रस ल रहा था। जय जागरण के जाते ही प्रेमच द से बोला—बहुत झूठ तो नही बोल रहा था यह पापी। खूख्वार किस्म का शख्स है। यूनियन म अब भी इसकी दखलन्दाजी है लकिन कल ही मैंन खुद इस देवन्द्र म उधार के नाम पर पस लते दखा था। उसस कह रहा था—चैन की वंशी बजाओ और ठाठ से पडे सोते रहा उसी क्वाटर म। कोई पदा नही हुआ माइ का लाल तुम्हे निकालन वाला। मरा अपना ख्याल है जिधर का पलडा इस भारी दिखेगा उसी के पक्ष म जिहाद छड दगा। चाहो तो बोलो बोल दो।

यह सब सुनकर प्रेमच द को बडी कापन हुई। बाला—और अगर इसके बावजूद ज्यादा बोली दन वाल का केस हार गया तो?

—तो क्या! वह देगा अपन न तो पूरा जोर लगा दिया, भाई, तुम्हारी अपनी तकदीर ही खोटी निकली। बताओ क्या कर। और दूसरी पार्टी स बडी शान स कहगा—देख हमार करिश्म कसे तुम्हारी हार को जीत म तबदील करा के रख दिया। नवलकिशोर ने खुलासा कह सुनाया।

—दखी जायगी मैं तो बीकानेर जाकर रहने लगूगा। प्रेमच द धीरे से बडबडाया।

—यह सब आप जानें नवलकिशोर ने कहा, बताना अपना जाती फज समझा। सो बता दिया। आप कृपया उसके या किसी के सामन मेरा नाम

नही लगे। मैंने बताया ना कि बडा खूख्वार आदमी है।

—धन्यवाद, कहता हुआ प्रेमचन्द उठ खडा हुआ।

पद्रह

इधर होली निकट आ रही थी, प्रेमचन्द के लडके वेद और सुशील चाहते थे कि किसी तरह होली से पहले-पहले वे लोग बडे क्वाटर में पहुच जाते। जब-जब प्रेमचन्द वर्कशॉप से या बाजार से घर लौटता, बच्चे और कभी-कभी पत्नी भी यही एक ही सवाल कर बैठती—क्या हुआ क्वाटर का? कब मिलेगा? जैसे अक्सर बच्चे पूछते है लाये मेरी चीज या खाने को क्या लाये।

इस बात का प्रेमचन्द के पास कोई उत्तर नही था। वह हस देता—पटरी पर तो नही बठे हुए आप लोग। यहा सब धीरे धीरे काम होते है। होना तो है ही।

प्रेमचन्द की हसी और उत्तर सब को उदास बना देते।

होली वाले दिन वेद और सुशील के साथ मिल कर कुछ बच्चो ने एक टाइटल लिखा—'भूत बन कर भी यही रहेगा।' फिर इसे देवेन्द्र के दरवाजे पर चिपका आये। वेद को देवेन्द्र की पत्नी ने देख लिया। बडी फुर्ती से उसे अन्दर खेंच लायी। वेद के गाल गुलाल से लाल हो रहे थे। वही जोर जोर से काटने लगी। वेद चिल्लाया। कुछ लोग चिल्लाहट सुन कर क्वाटर में आने लगे तो वह स्वय भी जोर-जोर से चीखने लगी। देवेन्द्र शराब के नशे में कमरे में पडा हुआ था, लुढकता हुआ बाहर आया तो बोली, मुझे छेडता है। इतने में वेद बडी तेजी से आगन के दरवाजे से भाग निकला। देवेन्द्र थोडी दूर तक गालिया बकता हुआ, उसके पीछे भागा मगर लुढक कर वही गिर पडा।

कुछ लोग उसे खीच खाच कर घर ले आये। उसे तेज ज्वर हो गया था। वह ज्वर में बडबडाता रहा—दुनिया देखेगी, मैं इन सब सालो से

बदला लूगा।

तबीयत और बिगड गयी तो शाम को उसे रलवे अस्पताल मे दाखिल कर दिया गया। छोटा भाई उपन्द्र इन दिना कानपुर गया हुआ था। उस खत लिख दिया गया परन्तु उसने परवाह नहीं की। जल्दी लौट कर नही आया।

सोलह

जिस दिन धर्मेश बाबू घर वाला स नाराज होकर निकले थ उमस दो दिन पहले उपन्द्र कानपुर स लौटा था। दूसर दिन बडे भाई दवेन्द्र का अस्पताल से घर लिवा लाया था। भाभी लगातार उपेन्द्र के सामन अपनी मुसीबता का बयान करती नही थक रही थी कैसा भद्दा टाइटल दिया और बस वेद ने उस छेडा। यही चर्चा दिन भर चलती रहती।

दोना भाइया न अब प्रेमचन्द परिवार से बदला लेने का पक्का निश्चय कर लिया।

उधर अचानक प्रेमचन्द की पत्नी सरिता के पिताजी की गभीर बीमारी का तार आ गया। सरिता तथा प्रेमचन्द न दोनो बच्चा को दादा-दादी के पास छाड कर स्वय दिल्ली जाने का कायक्रम बना लिया। किन्तु प्रेमचन्द की मा का भी दिल्ली कोई आवश्यक काय था। दूसरा बहू के पिताजी को दखना भी जरूरी समझा। अत व भी बट बहू के साथ तैयार होकर दिल्ली चली गइ। इधर रह गय दत्ता साहब और दो पोत वेद और सुशील।

उधर दवेन्द्र उपेन्द्र न शराब चढाइ और प्रेमचन्द क क्वाटर पर जा पहुचे। वहा उन्ह क्वाटर पर ताला लगा मिला तो बकने बकाने लगे—डर के मारे पडोसिया के घरो मे जा कर क्या दुबक गय हो। हिम्मत है तो सामने आओ। दोना शोर मचात हुए जिसका घर खुला मिलता उसमे घुस घुस जात। बद दरवाजा पर लाठी बजात। अत म एक बच्चे ने हिम्मत

हुए कह दिया—वे सादूल कालोनी अपने दादाजी के घर गये है।

उन्हे सादूल कालोनी मे घर का पता नही था किन्तु सर पर एक बडा भूत सवार था। काफी देर तक इधर-उधर से पूछते आखिर दत्ता साहब के घर पहुच ही गये। दत्ता साहब अभी पोता को कहानिया सुना रहे थे।

बाहर शोर सुना तो दोनो बच्चे आवाज पहचान कर घबरा गये। फुर्ती से छत पर जा चढे। फिर पडोस की दीवार फाद गये। दरवाजे पर सिर्फ साकल चढी थी। इससे पहले कि दत्ता साहब कुछ समझ पाते दोनो भाइयो ने लाठियो के साथ प्रवेश किया और कोई नही दिखा तो दत्ता साहब पर ही पिल पडे। जब तक पडोसी पहुचे दोनो गालिया बकते हुए बाहर निकल गये।

जब धर्मेश बाबू दत्ता साहब के मकान पर पहुचे उस समय वहा एक एम्बुलेंस खडी हुई थी।

सत्रह

जब नारायण घर से बाहर चला गया तो एक घटा तो गीता ने किसी तरह निकाल लिया। इसके बाद बडी आकुलता से नारायण और पति के लौटने की प्रतीक्षा करने लगी। एक साथ कई कई दुश्चिन्ताओ से घिरने लगी। नारायण कौन सा ज्यादा सयाना या होशियार है। बस घर मे ही बहादुर बना रहता है। केवल मम्मी पर ही रौब चला सकता है। बाहर तो किसी से बात नही कर सकता। बेहद सकोची है। कुछ साल पहले तो बीकानेर मे सब कुछ सामान्य था। साइकिल किसी मोड पर छोड दो। फिर चार रोज बाद जाकर उसे वही से जाकर उठा लो। आजकल तो यहा भी ऐसी-वैसी घटनाए होने लगी है। उस दिन डाक्टर मल्होत्रा को कोई मरीज दिखाने के बहाने ले गया। उसके साथी रास्ते मे तयार खडे थे। चाकू दिखा कर उन्होने डाक्टर साहब को लूट लिया। सुना है डाक्टर साहब को चोट भी

आयी है। कितन शरीफ डाक्टर हैं। मैं एक बार राजू को दिखाने ले गयी थी। कितनी इज्जत और शालीनता से पश आये थ।

—मम्मी राजू तो यही बठे-बैठे सो गया। मनिता ने कहा ता गीता की विचार शृंखला टूटी—आह बचारा भी ख्वामख्वाह रोता रहा। इसे चारपाई पर सुला दे।

हवा के तज झोकों से चादर फश पर लटक गयी थी। उसे ठीक किया। फिर मा-बटी ने मिल कर राजू का चारपाई पर सुला दिया। कुछ दर की चुप्पी के बाद गीता न कहा—मनिता तू भी सोजा।

मनिता न लम्बी सास छोड़ी और अगड़ाई लेत हुए कहा—नीद नही आ रही मम्मी। अब तक कम से कम भया का लौट आना चाहिए था।

—क्या पता क्या बात है उसे खुद सोचना चाहिए कि पीछे वाला को चिंता लगी रहती है। मनिता जरा दख तो, नारायण कही घडी पहन कर तो नही गया?

मम्मी क्या एसी छोटी-छोटी बातो म माथा खपाती हो। मनिता न हाथ स बालो को पीछे की ओर ल जाते हुए कहा।

—तुम से तो खूब खुल कर बातें करता है। उसकी कालेज म लडकों से दुश्मनी तो नही।

—नही मम्मी वह तो कालज म बडा पापुलर हो रहा है। लडके उसे चुनाव म खडा करने वाल है।

—यही से तो मार झगडो की जड फूटने लगती हैं।

—यदि आपके विचार से चला जाय तो कोई दुनिया म कुछ कर ही नही। सारा दिन मम्मी की गोदी म बठा रहे। मनिता यह सब कहत कहत धीरे धीरे हसन लगी। इसका प्रभाव गीता पर कुछ अनुकूल पडा। वह भी थोडा खुलकर हल्की फुल्की बातें करने लगी। तो भी दोनो का ध्यान निरंतर दरवाजे की ओर लगा हुआ था।

साढे छ या पौन सात का समय होगा तब नारायण न घर मे प्रवेश किया। साथ मे वेद तथा सुशील भी थ। उन्हे देखकर गीता बहुत खुश हुई।

—उठ उठ राजू दखो तो कौन-कौन आया है तेरे घर। कहत हुए

मनिता ने राजू को उठा दिया।

गीता का छोटे बच्चों के चेहरों पर थकावट, घबराहट और परेशानी के चिह्न स्पष्ट रूप से दिखाई दिए। मनिता को उनके हाथ मुह धुलवाने तथा नाश्ता कराने का कहकर वह नारायण से सारा विवरण पूछने लगी।

नारायण ने जल्दी में संक्षेप में मुख्य घटनाएं बता दीं और कहा—केशव बेचारा रात भर मेरे साथ रहा। वह तो पब्लिक पार्क भी मेरे साथ चलने को तैयार था। वहां तारघर में प्रेमचंद के ससुराल तार देना है। मेरे पास तो पता है नहीं। डैडी की डायरी निकालो या आपको याद हो तो बता दो। अब मैं पहले टेलिग्राम देने जाऊंगा। बाकी बातें आकर होंगी।

पता लेकर नारायण ने तार लिखा और चल दिया। जैसे ही वह लकड़ी की टाल तक पहुंचा, उसे रेलवे तार घर का दूसरा चपरासी मिल गया, जो रेलवे टेलिग्राम आफिस में प्राप्त कुछ पड़े टेलिग्राम को गवर्नमेंट टेलीग्राफ आफिस में ट्रांसफर करने जा रहा था। वक्त बचाने की गर्ज से नारायण ने अपना तार और पैसे उसे दे दिए और पांच मिनट में ही घर लौट आया। इस प्रकार बड़ी जल्दी इस काम की चिंता से मुक्त हो गया। फिर भी कुछ था जो उसके अंतस में हल्के-हल्के से चुभ रहा था। एक से बढ़कर अनेक समस्याएं थीं जिनका समाधान ढूंढना था अभी। नारायण ने अपने से कहा केशव से सीखो। संघर्ष कैसे किया जाता है। यह सब सोचकर वह उठ खड़ा हुआ। गुसलखाने में गया। कितनी ही देर तक जिस्म को मलमल कर नहाता रहा। फिर गुसलखाने से बाहर निकला और सहज भाव से नाश्ता करने लगा। मम्मी और मनिता ने जो कुछ जानना चाहा सब विस्तार से बताता रहा। नाश्ता समाप्त कर उसने कहा—मम्मी, बहुत थक गया हूं। थोड़ा सोऊंगा। केशव सारी रात मेरी सहायता करता रहा। मैं भी दोपहर उसके साथ उसके पापा को खाना देने जाऊंगा। आप ग्यारह बजे के करीब अटैची, सुराही खाना आदि लेकर पी० बी० एम० अस्पताल राजू को साथ लेकर जाना। लाओ एक कागज।

कागज लेकर उसने वार्ड और बेड नम्बर नोट कर दिए।

अठारह

बाबूलाल जिस दफ्तर मे काम करता था, वहा का माहौल अजीब तरह का था। फर्श को धुल कई-कई वर्ष बीत जाते थे। सप्ताह मे दो तीन रोज सर सरी तौर पर झाडू लग जाता था। धूल सवत्र छाई रहती थी जो दो चीजो के बीच हमेशा सिसकारी भरती रहती।

यह बात नही कि बाबूलाल ही यहा का एकमात्र चपरासी था और बाबूलाल के बाबू बनते ही वहा का सारा चपरासी वर्ग समाप्त हो गया था। नही ऐसी बात नही थी। वह चपरासी तबका बाकायदा भर्ती किया जाता था। उनकी अच्छी खासी जमाअत वहा कायम थी। लेकिन वे लोग' कुछ माडन किस्म के ही चल थे। एक-दूसरे की देखा देखी सबने काम करना छोड सा दिया था। बस भी शायद एक चपरासी से बने बाबू की तरफ थे कम ध्यान देते थे। एक चपरासी ऐसा जरूर था। जिसकी ड्यूटी यदि बाबूलाल के विभाग मे लगती तो वह बाबूलाल की मेज पर डस्टर फेरने का प्रयास करता था। किन्तु स्वय बाबूलाल उसे मना कर देता। सोचता जब बाकी सब लोग काम नही करते। एक गिलास पानी लाने मे आना कानी करते हैं (—साहब क्या पानी-पानी की रट लगाये हो। कोई गर्म चीज का आडर दो।) तो क्या इसी ने ठेका ले रखा है।—जाओ तुम भी ऐश करो।

एक बार बाबूलाल घर से एक फटा-पुराना कपडा उठा लाया था। उसी से स्वय अपना टेबल साफ कर लिया करता था। परन्तु उसे भी यहा के भाई लोगो ने नही रहने दिया। यारो को धरती की रेत से इस कद्र प्यार है यह विचार बडे सूक्ष्म रूप से उसके अन्दर जागा था और वह भी अपने को कुछ समय के लिए फिर टु रन' बनाने मे लग गया था। छ सात घटे ऐसे ही इधर उधर गुजर जाते हैं। कैन्टीन मे। धूप मे या पेडो के नीचे, आपस मे गपशप करते करते। फिर भी मन तो आखिर मन है ऊब ही जाता। तब बाबूलाल भागने लगता।

बीच का कुछ अर्सा छोडकर, बाबूलाल के घर का माहौल भी कुछ ऐसा ही रग लिये हुए था।

एक चारपाई रखने से आगन गायब हो जाता था। कमरा एक था। दहेज मे मिला पुराने स्टाइल का बडा पलग आधे से ज्यादा कमरे को नापे रहता था। एक छोटी सी चारपाइ बनवाकर किसी तरह पलग के नीचे फमा दी गयी थी, जो हर रात फडफडाती हुई बाहर निकल आती थी। बाबूलाल के तीना बच्चे कर्कश ध्वनिया पदा करते हुए आपस म मार पिटाई-झगडा करने लगते—कौन कहा किस कोने अगल-बगल सोएगा। कहा बठ कर पढेगा। इन्ही बाता को लकर।

बाबूलाल की पत्नी सुभद्रा भी कुछ कुछ पलग की ही मानिद फलने लगी थी। प्रात मला-कुचला पटीकोट पहने, उलझे बाला के साथ कपडे पीटती रहती। फश धोती पोछती रहती और घर को सलीके स बनाने की आवश्यक पूर्ती दिखलाया करती। दीवारें ढीठ थी। आधा इच पीछे नहा खिसकती थी इस कारण किसी प्रकार के भी सशोधन का हर प्रयास नितान्त मायावी सिद्ध हो उठता। दूसरे-तीसरे दिन ही तमाम चीजें अपने नए स्थाना का परित्याग कर पलग या चारपाई के ऊपर-नीचे फुदकने लगती। सब प्रकार के छोटे-बडे कपडे खूटियो से गिर गिर कर पतझड का अहसास कराते रहते।

पतझड से नजात पाने के लिए, बाबूलाल वक्त से पहले ही दफ्तर की तरफ भागने लगता।

रास्ता मे इन स्थितियो से मुक्ति पाने के समाधान ढढता हुआ कल्पनाओ की दौड लगा देता।

उन्नीस

गीता और मनिता ने मिलकर जल्दी जल्दी खाना तयार किया। राजू, वेद तथा सुणील को खिला दिया। एक बडा टिफन अस्पताल के लिए फिट किया। तब गीता न मनिता से कहा—थोडी देर के बाद भाई को

उठा देना और दोनो खाना खा लेना। फिर नारायण केशव के साथ आएगा।

—मम्मी आपन तो खाना खाया नहीं है।

—मुझे भूख नही है। टिफन म खाना काफी है वहीं खा लूगी। या वापस आकर दखूगी।

—बहुत दर हो जाएगी मम्मी। कुछ तो खा लो। मैं भी यहे अक्ल का दखन चलना चाहती हू।

—जब नारायण जेल स वापस आ जाए तो तुम राजू को लकर आ जाना।

घर को सभालन के कुछ और निर्देश देकर तथा टिफन और अटची उठाकर गीता घर से निकल पडी। सडक पर आते ही एक तांगा मिल गया। जल्दी ही गीता अस्पताल के फाटक पर जा पहुची।

इन्क्वायरी काउटर पर पूछकर तथा दो एक अटण्डण्ट की सहायता से ठीक वाड तक पहुची किन्तु ग्यारह नम्बर बड खाली था। आस पास वहाँ धर्मेश बाबू भी नजर नहीं आ रहे थ तो वह बहुत सोच म पड गई। कुछ देर इधर उधर दखने के बाद उसे नस दिखाई दी परन्तु गीता के वहा पहुचत पहुचते वह उठकर कहीं बाहर चली गयी। तब वह सकुचाती सी बारह नम्बर बड के मरीज के पास आ खडी हुई। वह दद क मारे कराह रहा था पूछने पर उसन बताया कि उन्ह स्ट्रेचर पर शायद एक्सर के लिए ले गए हैं। गीता ने दूसरा प्रश्न अपन पति के विषय म किया तो उसका उत्तर उसने इशारे स दिया कि पता नही।

थाडी देर की प्रतीक्षा के बाद नस लौटी। उसने भी लगभग वैसा ही उत्तर दिया। हा, उसने इतना अवश्य जोडा—आप बाहर बठ जाओ।

गीता ने अपने को तसल्ली दी कि भगवान ठीक करेंगे। व भी चाचा जी के साथ-साथ एक्स रे रूम तक गए हुए हाग और प्रतीक्षा म तरह-तरह की बातें सोचती रही। कभी दत्ता साहब के तो कभी घर क अन्य सदस्यों के बारे म और कभी स्ट्राइक के परिणामा की कल्पना करन लगती।

करीब डेढ घटे के बाद दत्ता साहब को टाली पर लाकर बैंड पर लिटा दिया गया। व बहुत थके थके से लग रहे थ। गीता को दखकर उन्होने

धीमे स्वर म पूछा धर्मेश कहा है ?

—वे मुझे तो नजर नहीं आए। मैं ता बहुत दर से यही बैठी हू। आपका क्या हाल है ?

—मैं तो ठीक हो जाऊगा धीरे-धीरे। क्या धर्मेश घर नहीं पहुचा। मैंने उसे समझाया था कि इन पचडे म नहीं पडे।

मेरे वहा होते हुए ता आए नहीं थे गीता ने चिंतित भाव मे उत्तर दिया।

—यहा आठ के बाद तो उसे नहीं देखा, दत्ता साहब बोले हो सकता है मेरी आख लग गई हो और उसने उठाना उचित न समझा हो। या फिर यह भी हो सकता है सीधा ड्यूटी पर जा पहुचा हो।

—उम्मीद तो नहीं। खबर तो भिजवाते ही। अब जाकर पता लगेगा।

अचानक दत्ता साहब को बहुत जोर का दद उठा। वह हाय हाय कर उठे। मुह उनका सूख रहा था। उन्होने सकेत से पानी मागा। गीता ने अटैची खोला। चम्मच गिलास निकाला। पडोसी मरीज की सुराही से पानी लेकर उन्हे चार पाच चम्मच पानी दिया किन्तु पीडा अधिक जोर पकड गई।

घबराई हुई गीता नर्स के पास पहुची। नर्स ने एक इन्जक्शन लगाया। शीघ्र ही दत्ता साहब को गहरी नींद आ गई।

फिर से इतने बडे भरे पूरे हाल मे गीता नितात अकेली रह गई।

बीस

केशव और नारायण टिफन उठाए जेल के दरवाजे पर पहुचे। गेटकीपर ने प्रश्न किया—किससे मिलना है।

—श्री जगमोहन मोदी जी से।

—आपके क्या लगते है ?

—मेरे पिताजी हैं। केशव ने बताया।

—और आपका? गेटकीपर नारायण की ओर मुखातिब हुआ।

—यह मेरे साथ है। केशव ने उत्तर दिया।

—बस आप ही अपना गेट पास बनवा लें। अंदर ज्यादा भीड़ नहीं करने दी जा सकती।

केशव अंदर चला गया और नारायण बाहर बेंच पर बैठ गया।

जल्दी ही केशव लौट आया। जेलर साहब से कहकर नारायण को भी अंदर लिवा ले गया। नारायण ने अंदर जाकर देखा उसके डैडी धर्मेश बाबू भी वहीं जेल में हैं। वह बड़े मजे से मोदी साहब के साथ भोजन कर रहे हैं।

इक्कीस

एक दिन सुबह सवेरे बाबूलाल अखबार पढ़ते पढ़ते सहसा उछल पड़ा। तीन दफा धड़कते दिल से एक एक नम्बर मिलाया। लाटरी उसी के नाम निकली थी। पंद्रह हजार की। सुभद्रा बाहर नल से पानी भरने गई हुई थी। नीलिमा सबसे बड़ी लड़की पढ़ने के मामले में बहुत तेज थी। सुबह अधिकतर मां से भी पहले उठ जाया करती थी। किंतु उस रात शायद ढाई बजे तक पढ़ती रही थी, इसलिए वह भी अभी तक सो रही थी। खुशी के मारे बाबूलाल ने तीनों बच्चों को उठा दिया। उन्हें खुशखबरी सुनाई तो तीनों नाचने लगे। और एक दूसरे से होड़ करते हुए अपनी-अपनी फर्माइशें रखने लगे। नीलिमा ने बड़ा स्टडी टेबल मांगा। नरेश ने रिकार्ड प्लेयर। प्रमिला ने सजावट के ढेर सारे सामान की सूची प्रस्तुत कर डाली।

बाबूलाल ने कहा—यह सब चीजें तुम्हें मिल तो सकती हैं मगर जोश में होश तो रखना ही चाहिए। बताओ यह सब चीजें इतने छोटे मकान में कैसे समाएंगी।

इसी बीच सुभद्रा एक हाथ में पानी की बाल्टी दूसरी बगल में गागर

सभाले अदर आई तो इतनी सवेरे घर का माहौल दूसर ही ढग का पाया, उत्साहवद्धक।

—हम भी पता चले, सुबह सुबह इतनी उछल कूद कसे हा रही है।

—पद्रह हजार पद्रह हजार। अरे वाह पद्रह हजार। शार बना रहा। बाद म नरेश मा क गले से झूल गया—पता है पिताजी को पूरे पद्रह हजार रुपय मिलेंगे। लाटरी निकली है।

—क्या सच ? सुभद्रा ने उत्सुकता से पति की ओर देखा।

—और नही ता क्या झूठ। यू ही क्या सब पागल बन रहे ह बाबूलाल ने उस रौ म अखबार और लाटरी का टिकट दोना पत्नी की ओर लहरा दिये ला स्वय ही देख लो।

—हे भगवान तरा लाख लाख शुक्र ह सुभद्रा ने कृष्ण जी की तस्वीर की ओर हाथ जोडते हुए कहा, आगे भी हमारी लाज रखना दया निधान। फिर उसकी दृष्टि सहसा नीलिमा पर ठहर गई।

—देखा नीलिमा की मा। लाख लाख शुक्र करने की बात तो तब होती यदि कम मे कम एक लाख का इनाम हमारे नाम निकल आता। क्या हागा पद्रह हजार से।

—हम सब की चीजे आएगी। नीलिमा बोल पडी।

—पहले हम अपना मकान बनवाना होगा ताकि तुम्हारी सारी चीजे उसमें सलीके से रखी जा सकें। बाबूलाल ने कहा।

—वाह वाह मजा आ जाएगा, अपने मकान मे। लोगा के पास कितने सुन्दर और बडे बडे मकान हैं। अपने भी छज्जे गैलिरी वाला मकान लेंगे। नरेश फिर से उछलने लगा। बाबूलाल न उसे बगला से पकडकर और उछाल दिया। तभी बाबूलाल ने देखा सुभद्रा का चेहरा सहसा बहुत गम्भीर हो आया है। यह जैसे बहुत देर से कुछ कहना चाह रही है पर उसकी ओर किसी का ध्यान नही।

—तुम्हे क्या हो गया नरेश की मा! बाबूलाल न पूछा, तुमने तो अपनी कोई फरमाइश बताई ही नही।

माता पिता मे बात होते दख बच्चे अपना गुट बनाकर छत पर चले गए और जसे पतगा के साथ उडने लग।

—तुम तो इस बच्चा के साथ बच्चे बन जाते हो। बच्चे जिद्दी होते है इसीलिए पहले से सचेत किए देती हू किसी के साथ वन चढ कर कोई वायदा मत कर देना। सुभद्रा ने मन की बात साफ कर दी।

—मकान तो बनेगा ना। वहा बैठी हुई तुम रानी लगोगी बाबूलाल ने सुभद्रा का हाथ पकड लिया।

—क्या पागल बनते हो जी लडकिया इतनी बड़ी हो रही है। सभी की पढाई लिखाई भी साथ है। इसलिए चुपचाप सब रुपए बैंक मे जमा कर देना और भूल जाना।

—तो क्या बूढे होकर मकान बनते है ? अभी हमारे पास तीन चार साल पडे है धीरे धीरे सब ठीक होता रहेगा।

—तुम समझदार हो। पहले क्या करना है खुद ही समझ सकते हो।

—इस कोठरी म रहते रहते मेरा तो दम घुटने लगता है तो दफ्तर या बाजार की तरफ भाग जाता हू। तुम तो यहीं बंधी रहती हो चौबीसो घटे। तुम अपमानित एव अव्यवस्थित जीवन जीने को कायल हो सकती हो। मैं नी। कभी-कभी तो मुझे लगता है किसी भी प्रकार की कोई खुशी तुम्हे पुलकित नही कर पाती। इस कोठरी म रहते मकान मालकिन के नखरे सहते आस पडोस की हसी सुनते जीवन तुम्हारा भी दूभर हो चुका है किन्तु तुम सही धरातल पर महसूस करने की चेतना ही नहीं रही, तुम्हारे दिमाग म कहते कहते बाबूलाल वास्तव म उत्तेजित हो उठा।

किन्तु सुभद्रा अपने गीले कपडो के साथ खडी बनी उसी प्रकार जवाब देती रही—कुछ भी समझो नादानी छोड दोगे तो सुखी रहोगे। इतना कहकर उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना सुभद्रा कोने म नहाने की तयारी करने लगी।

बच्चे स्कूल कालिज जा चुके थे। सुभद्रा अब रसोई के कामो मे लगी थी। बाबूलाल अकेला आगन म धूप सेकने लगा। दिन सर्दियो के थ। कुछ समय ही गुजरा था कि धूप बुरी तरह से खलने लगी। सोचा, कमरे मे जा बैठू मगर लगा कमरा तो उसे एकदम ठडा करके रख देगा। शायद यही विचार उस पर हावी हो गया। जिसने उसे जहा का तहा बठाए रखा।

सुबह पहली मतबा टिकट का नम्बर मिलते ही उसके मुह से यही

वाक्य निकला था, जो सुभद्रा के 'भगवान तेरा लाख लाख शुक्र है।" उसके बाद दूसरी सोच शुक्र लायक तो एक लाख होना चाहिए था।" और फिर उस किसी को डाटने लगा हो बाबूलाल देना ही था तो इतना तो देता ताकि एक साफ सुथरा मकान बन जाता या ऐसी नौकरी ही न देता जिसमे अफसरो के बगलो मे आना जाना पडता। न वहा जाता। न देखता। और न ही मन जलता।

बाबूलाल ने तुरन्त अपने को रोका भगवान को कभी दोष नही देना चाहिए। फिर बचपन मे रटा हुआ एक वाक्य, 'भगवान उन्ही की सहायता करता है जो स्वय अपनी सहायता करते है। फिर एक और सोच पद्रह हजार तो सब शक्तिमान की ओर से शुभ काय हेतु प्रेरणा मात्र है। मै जो इस मकान से छुटकारा पाना चाहता हू बस भगवान ने मेरी सुन ली।

इसके बाद बाबूलाल पूरे उत्साह से भर गया था। दफ्तर मे पी० एफ की राशि निकलवायी और जो ऋण मिल सकते थे, लिये। पेट काट काट कर किसी तरह जो अब तक सात हजार जमा किया हुआ था उसकी भी आहुति दे दी इस गृह यज्ञ मे। गया दो महीने की छुट्टी भी ली। दिन रात एक कर मकान खडा कर दिया।

मकान देखते ही बनता था। फूला वाला फश। आसमानी दीवारें। छत पर थोडा सा जगले का छज्जा। जगमगाती ताजगी लिए ट्यूब लाइटें।

बाबूलाल यह सब निहारता रहता नशे मे डूबा हुआ।

परन्तु यह नशा तनख्वाह वाले दिन जरूर टूटता जब ऋणो की लम्बी-लम्बी किश्तें कटने का अहसास होता। घर पर दूसरे खर्चों को लेकर मन-मुटाव पैदा हो जाता। नरेश को रेकार्ड प्लेयर कहा मिल पाया था नीलिमा के लिए भी स्टडी-टेबल कहा आ पायी थी।

बाईस

नारायण तथा केशव के अस्पताल से चले जाने के बाद धर्मेश बाबू वार्ड की गैलरी में कुछ देर तक खडे या ही सोचते रहे। तदुपरात कभी दत्ता साहब के बैड के पास जा बैठते तो कभी बच के सहारे जा खडे होते।

साढे सात बजे दत्ता साहब जाग गये। वे कुछ कुछ स्वस्थ अनुभव कर रहे थे तथा अगल बगल देख रहे थे। धर्मेश सामने आया तो बोले—तुम किधर चले गये थे। बहुत थके हुए लग रहे हो। जाओ, घर हो आओ। थोडा आराम भी करो।

मैं वैसे भी आपको अकेला छोडकर नही जाता। अब तो मेरा यहा से बाहर निकलना खतरे से खाली नही है।

—खतरा, दत्ता साहब चौंके क्या वह लोग मेरा मतलब लालगढ वाले तुम्हारा भी पीछा कर रहे है।

— नही यह बात नहीं।

—तो फिर क्या बात है ?

—ऐसे ही जरा। धर्मेश सकोच मे पड गया। दत्ता साहब के बार बार पूछने पर उन्हे वस्तुस्थिति से अवगत करा दिया।

दत्ता साहब ने प्रश्न किया—क्या सारे-के सारे कर्मचारी हडताल पर जायेंगे ?

—ऐसा तो हमारे यहा कभी नही हुआ। कभी लोको यूनियन इससे अलग है कभी कैरिज स्टाफ और कभी शटिन वर्कर्ज। इस बार ही देखिए ना ट्रैफिक ब्राच वालो ने मुख्य रूप से इस स्ट्राइक का आह्वान किया है किन्तु पूरा ट्रैफिक डिपार्टमेंटही वहा साथ दे रहा है। औरो की छोडिए मैंने ही स्ट्राइक मे शामिल न होने का निर्णय कर रखा था अब मेरे घर आतक फैला कर और ऐसे अवसर पर भी छुट्टी से वचित रखकर स्वय प्रशासन ही मुझे स्ट्राइक मे सम्मिलित होने के लिए उकसा रहा है।

—धर्मेश काके, कुछ नही रखा, इस प्रकार विरोध स्वरूप अपनी बलि चढाने मे। कहते हैं नौकरी की तो नखरा क्या ?

—इस समय मैं सोच रहा हू, हम इतने दब्बू क्यों बन रहते है। इससे

हमारी अपनी मतान पर भी वैसा ही प्रभाव पडता है। हमारा पडोसी लडका बडी बहादुरी से सारी रात नारायण क साथ घूमता रहा, हालांकि उसके पिता मोदी साहब को, जो मान हुए नता है, सबसे पहले पक्ड कर जेल म डाल दिया गया था।

—अब तुम से क्या कहू। बडे नेता, छोट नेता और बिलकुल सामान्य कमचारी, इन सबसे, जेल वाला से लेकर प्रशासन तक अलग-अलग व्यवहार करता है।

—यदि इन सब बाता की परवाह की जाय, आर सभी एसा साचन लगें तब तो बस दो चार नता ही स्ट्राइक पर जायें या जेल यात्रा करे। फिर हो चुका काम। धर्मेश बाबू ने अपनी सफेद कमीज की सलवटे ठीक करते हुए कहा।

—बुरा नहीं मानना अजीज, तुम अपने हिता के लिए नहीं, बल्कि मेरे कारण जेहाद छेड रह हो यह तकसगत भी नहीं है और न ही मैं इसकी अनुमति दूगा। हा, एक सलाह आर। अगर कम से कम पूरा टेलिग्राफ आफिस स्टाफ इस आदोलन में शरीक हो रहा हो तो तुम भी किसी सूरत म पीछे न रहो।

धर्मेश बाबू कुछ कहने ही वाले थे कि नस और डाक्टर एक साथ वहा आ उपस्थित हुए।

—कृपया रोगी का ज्यादा मत बालने दीजिए लैट हिम रैस्ट।

डाक्टर का वाक्य पूरा होते ही नस बाहर की ओर सकेत करते हुए बोली—लैट अम राउड। एनीथिंग स्पेशल?

—बीच बीच मे बहुत ही जोर का पेन उठता है। धर्मेश न बताया।

—वह हम देख लेंग, कहते हुए उसन धर्मेश को अनदेखा कर दिया तथा रोगी की ओर व्यस्तता प्रकट करती हुई, धीरे से बोली, आप गैलरी मे रुकें जरूरत हुई तो आपको बुला लेंग।

धर्मेश बाबू फिर से गैलरी के बेंच पर बैठ गये और डाक्टर के वाड से चले जाने की प्रतीक्षा करने लगे। साथ ही दत्ता साहब की कही हुई बाता पर विचार करते करते उलझने चले गये क्या यह सारी स्थितिया दश मे पुनर्निर्माण के लिए दस्तक दे रही है?

तभी देखा सामने प्रात पारी वाला तार चपरासी आ खड़ा हुआ। इससे पहले कि वे कुछ कहते, दो सिपाही भी आ पहुंचे—आप हमारे साथ चलिए। आप पर हड़ताल में शामिल होने का आरोप है। मोटे सिपाही ने कहा।

—देखिए हड़ताल अभी परसों से शुरू होगी। मैं अब तक की अपनी प्रापर रोस्टड ड्यूटी दे चुका हूं। इस समय आप कैसे कह सकते हैं कि मैं स्ट्राइक में हूं या नहीं।

दूसरा पतला सिपाही जिसकी मूंछ बड़ी बड़ी थी, कहने लगा—बाबू साहब हम तो अनपढ़ हैं। हम इन लम्बी बातों में नहीं समझते। हम तो बस इसे समझते हैं, कहते हुए उसने वारंट धर्मेश बाबू के सामने कर दिया।

वारंट के एक कोने से दूसरे कोने तक धर्मेश बाबू नज़र घुमा गये। नीचे मजिस्ट्रेट के हस्ताक्षर हैं इसने मुझे समझना तो दूर कभी देखा तक न होगा। दो एक मिनट की घबराहट के बाद सहसा वह व्यंग्य से मुस्करा दिए। 'शुभ दिन आयो रे। अपनी शत्रुता निकालने के। मैं सीधा-सादी, पर थोड़ी चुभन वाली नियमों की बातें अपने या किसी के पक्ष में टी० एम० (टेलिग्राफ मास्टर) को कह दिया करता था तो साला मुझसे हमेशा ही जला भुना रहता था। वह दिन लौट के आए न आए। इस लम्बी सोच के साथ धर्मेश बाबू ने अपने पर काबू पा लिया और बोले—तब चलिए। मगर जरा रुकिए। डाक्टर राउंड पर हैं दरवाज़े बंद हैं। एक दफा अपने पेशंट को। बता आऊं।

—बाबू साहब सच मानिए इतना वक्त हमारे पास नहीं है। अभी तीन और वारंट हैं हमारे पास। खोज-बीन में सारा दिन लग सकता है। बड़ी बड़ी मूंछों वाले सिपाही ने कहा जो आयु में मोटे सिपाही से कुछ छोटा लगता था।

मोटे सिपाही ने सुझाया– अपने पिओन को बेड नम्बर बता दीजिए। वह बता देगा।

—मैं अब इससे क्या बात करूंगा। चलिए। धर्मेश बाबू फिर से चौंकता कर उनके साथ चल पड़े। सोचा अभी कोई न कोई घर से आता ही होगा।

तेईस

अप्रत्याशित रूप से मौसम में बदलाव आ गया। पहले जोर-जोर से बिजल
चमकने लगी। फिर बारिश और थोड़ी ही देर में ओले भी पड़ने लगे।

धर्मेश बाबू के जेल पहुंचने की गाथा सुनकर केशव और नाराय
बाहर जाने के लिए अभी जेल के फाटक तक ही पहुंचे थे कि भीग गये।
वीवर ने उनसे कुछ देर ड्योढ़ी में रुक जाने को कहा। किन्तु एक
नारायण को बेहद उतावली थी। दूसरे उनके अनुमान से इतनी तेज व
नहीं थी सोचा शीघ्र ही रुक जायगी।

—खैर अब जब भीग ही गये हैं तो कहीं रुकने से कोई लाभ नहीं
नारायण ने कहा।

—ठीक है, चलते चलो। केशव ने समर्थन किया।

—पर इस तरह भीगने से मुझे बुखार भी हो जाता है, नारायण बोल
देखी जायगी।

वे दोनों चलते रहे। जेल रोड से न आकर पिछली तरफ से धो
तलाई के रास्ते व स्टेशन पर पहुंच गये।

—यह लीजिये छोटे बाबू अपनी रसीद, सवेरे वाला तार चपरा
नारायण के सामने आकर खड़ा हो गया, मुझे बड़ा अफसोस है मैं ही
बाबू को पकड़वाने का कारण बना।

—हमने तुमसे यह सब तो नहीं पूछा लाओ रसीद। नारायण ने
में उसके हाथ से रसीद ले ली।

बड़े बाबू मुझसे नाराज हो गये। मेरा भाग्य ही ऐसा है। आज
एम० बाबू सुबह सवेरे ही दफ्तर में आकर बैठ गये थे। मैंने जैसे ही ट्रांस
टेलिग्राम की रसीद मेज पर रखी। आप वाली रसीद भी मेज पर आ ग
टी० एम० बाबू ने गौर किया और पूछा। यह क्या? कहां से आई? अ
तो तुम धर्मेश बाबू का तार देने गये थे। कहां है वह। कई सवाल एक
कर डाले। मैंने साफ कह दिया कि मैं बिलकुल नहीं जानता यह तार
उनके लड़के ने दिया था।

—क्या लिखा था उसमें? उन्होंने डांटते हुए पूछा।

मैंने उत्तर दिया—मैं नहीं जानता।

—ठीक है। मुझे ही पता लगाना पड़ेगा उन्होंने बाहर चलकर एक साइकिल उठा ली। शायद पी एण्ड टी तारघर चले गये।

जब मैं दूसरा राउंड की तारें देकर लौटा तो वहां दो सिपाही खड़े थे। टी० एम० मुस्करा कहने लगे—धर्मेश बाबू पी० बी० एम० हास्पिटल में हैं। इनके साथ चले जाओ। यह तो धर्मेश बाबू को नहीं पहचानते, इन्हें बता देना।

सच छोटे बाबू मुझसे जिसकी मर्जी कसम उठवा लो, मैंने बहुतेरा मना किया कि यह पाप मुझ गरीब से न कराओ। मगर उन्होंने मुझे और धमकाना शुरू कर दिया—अभी तुम्हें भी अपराधी को संरक्षण देने के आरोप में गिरफ्तार कराता हूं। तब मैं डर गया। कहते कहते पिओन तेजी से पार्सल आफिस में घुस गया।

तभी नारायण और केशव ने देखा अब उनके सामने टी० एम० खड़ा है— क्या कह रहा था यह।

बिना उत्तर दिये नारायण चल दिया तो पीछे से बड़ा मीठा स्वर सुनाई दिया—बेटे, सबको मालूम पड़ चुका था। हम बेबस थे। हमी जानते हैं, इतनी शार्टेज में कैसे आफिस रन कर रहे हैं।

—सुन ली चाचा की बात? केशव हंसा।

इस बात को नजरंदाज कर नारायण ने कहा—केशव भया, अब तुम आराम करो मैं कपड़े बदलकर अस्पताल जाता हूं। कालोनी आते ही नारायण अपने घर में घुस गया।

संक्षेप में सारी बात ममिता को बताई। कपड़े बदले और अस्पताल चला गया।

अभी-अभी दत्ता साहब जागे थे। उसने उन्हें भी सारी बात बताई। तब मम्मी को घर भेज दिया कि शाम को दो टिफिन करियर तैयार करें।

चौबीस

दूसरे दिन राजू अपन दूसरे दोस्त राजू को लेकर स्टेशन गया था। बीकानेर मेलेट थी। नारायण की तबीयत कुछ ढीली थी। वह थोड़ा आराम कर रहा था। राजू घर लौट आया—अब तो मेल साढे दस से पहले नहीं आयगी भैया। राजू ने बताया।

नारायण उसका आशय समझ गया। कहा—कोई बात नहीं तुम स्कूल चले जाओ। मैं खुद गाडी देख लूगा।

बीकानेर मल आ गयी लेकिन प्रेमचन्द या मिसेस दत्ता कोइ भी नही आया। नारायण यो ही इधर-उधर देखता हुआ धीरे धीरे घर पहुचा। देखा आगन की तरफ से राजू भी बस्ता लकर लौट आया है।

—क्या हुआ? नारायण न पूछा।

—छुटटी हो गयी।

—आज क्या बात है?

—हमारे स्कूल की हाकी टीम डिस्टिक टूर्नामेंट म सेमी फाइनल म प्रवेश कर गयी है।

—तो इससे क्या हुआ?

—यह बहुत बडी बात है। राजू ने सुनी हुई बात दुहरा दी।

—तो भी इसमें छुटटी की क्या बात हुई। तुम लोगो को अब कितन कितने बम चलाने होंगे।

मनिता हसते हसते दोहरी होने लगी—खुशी मनाती है। सेमी फाइल म पहुचने की नही। छुट्टी होने की। क्या पता इनके स्कूल की टीम अगल दो मैच न जीत सके और सारा स्कूल मैच के उपलक्ष मे कोई छुट्टी ही न मना सके। भया, वसे इनके यहा छुट्टियो की कौन-सी कमी रहती है। छात्र सघ की मीटिंग। शिक्षकों का सप्ताह भर का सम्मेलन। स्कूल की बिल्डिंग म राजनतिक पार्टियो के कार्यकर्ताओ का ठहराव।

—अब चुप भी कर दीदी, राजू ने बस्ता अल्मारी म पटकत हुए कहा।

—क्यो, शर्म आ रही है? मैं और बहुत सी बातें और अवसर गिना सकती हू जिन्हें सुनकर हसी भी आती है और रोना भी। क्या क्या कारण

ढूढ है छुटिटया करन के। मान गय राजू तुमने छाटकर स्कूल चुना है।

—बाकी स्कूल भी कौन स निहाल कर रह ह। कल का अगर टीम हार जाय ता अफसास मे छुट्टी कर दनी चाहिए। नारायण धीरे स हसा। खासी उठी और चारपाई पर लेट गया।

वेद और सुशील गीना के साथ सवर मे अस्पताल गय हुए थ।

नारायण न मनिता से कहा—अब बहुत मनारजन हो चुका। जरा तेज हाथ चलाओ। पहले अस्पताल खाना पहुचाऊगा। फिर जेल। आज शाम बाबूलाल अकल स भी जरूर मिलूगा। डडी उन्ह बुला रह थे। फिर राजू की आर देखत हुए कहा जरा दखना यदि कशव भाई साहब हा तो कहना जब समय मिले तो थोडी देर के लिए हमारे क्वाटर आ जायें।

—केशव तो अभी थाडी देर पहले हमार क्वाटर के सामन से निकल गय है। मनिता बोल पडी बाहर से अगीठी उठान गयी थी तो देखा था। उनस क्या कहना है।

—सलाह करूगा कि जिन लागा न दत्ता साहब को घायल किया है उनके विरुद्ध पुलिस मे रिपोर्ट अभी करनी चाहिए या बाद मे हो सकगी।

—भैया, तब थाडी थाडी देर बाद पुलिस तुम्हें थान पर बुलाती रहेगी तो तुम आर परेशान हा उठोगे। इधर का सारा काम कौन सम्भालेगा। इस समय इस घटना का भूल जाओ और उन गुडा को भी भूल जान दो। काफी समय बाद कभी अचानक कॉलेज के लडको को कुछ खिला पिलाकर रात के अधेरे म उनकी धुनाई करवाकर गायब हो जाना। उनक ता कई दुश्मन हैं। किस किस पर शक करेंगे।

—शाबाश, नारायण ने बडे जार से मनिता की पीठ पर थाप मारी।

—ऊई राम, मनिता चीख सी पडा।

—मान गय, तुमका भी। इस जमाने म गुडागर्दी म लडकियो की कल्पना शक्ति भी आला दर्जे की है।

सायास दबाया । कोई कमरे म आ गया तो क्या कहेगा । पागल हो गया है । फिर भी उसके हाथा का और दिमाग का करिश्मा उसकी आखा के सामन साकार होने लगा, जिसे अब एक जमाना हो चला था ।

वह टाई नही बाधा करता था फिर भी एक दिन मित्रो की जिद पर उसन उनके साथ बाजार स एक साधारण-सी टाई खरीद ली । अब विशेष अवसरा, जैसे पार्टी, फोटो ग्रुप आदि मे वह टाई जरूर लगाकर जाया करता था ।

एक दिन उनके यहा के डिप्टी डायरेक्टर साहब ने अपने बथ डे पर सब बाबुआ को आमन्त्रित किया । महीन के आखिरी दिन थ । अफसरो का बथडे पहली को ही हो ऐसा कोई नियम विधाता न तो बनाया नही । प्रेजेंट, प्रेजेंट । तू क्या देगा बे ? और तू ? बाबू लोग खुश थे जस बचपन मे लौट आये हा । साहब ने बुलाया है । नाखुश थे, तो बस इस जरा सी बात पर कि साहब महीन की आखिरी तारीख म क्या पैदा हुए थे ।

बाबूलाल उस दुकानदार के पास गया जो उसकी शराफत स भली भाति परिचित था और बडे सम्मान स उसे उधार दे दिया करता था । वह पतीस रुपय की बहुत सुदर चक और धारिया वाले मिले जुले डिजाइन की गुलाबी टाइ उधार म ले आया था ।

घर आकर पत्नी को टाई वाला डिब्बा दिखाया ।

—यह तो बहुत ही सुदर है । अपने लिए भी एक ले आते । सुभद्रा न कहा ।

दिल तो बाबूलाल का इसी टाइ पर पहले स ही आ चुका था । दो-दो कहा स ले । सोचकर मन मार गया था । अब सुभद्रा के मुह से टाई की प्रशसा सुन उसे सहसा एक युक्ति सूझी । अपनी पहली टाई को ब्रुश से धोकर, प्रेस किया । नयी टाई को लेबल, मेक, कीमत की स्लिप को बडे धय एव दक्षता स उतारा और अपनी पुरानी टाई पर सब टाक दिये । उसी नये डिब्बे म । टाइ प्रेजेंट की और साहब से 'थ क्यु' बटोर लाया ।

उसकी इस अति सूक्ष्म चतुराई का भी निकट के कुछ मित्र भाप गय थे । इस बात से बाबूलाल को थोडा-थाडा भय लगने लगा । अच्छा हुआ [illegible] वरना कोई-न-कोई,

कभी-न कभी मौका देखकर जरूर उसकी चुगली खा जाता। इसलिए बाबू लाल न पहले से ही, मन ही मन कुछ जवाब बना रखे थे जसे, यह सब बिना उसकी जानकारी के उसकी बीवी या बच्चा ने कर दिया था।

'वाह बाबू लाल वाह, तरी जय हो' बाबूलाल अपनी जय बोलकर खुशी हासिल करने की कोशिश कर रहा था कि प्रमिला खान की थाली लेकर आ खडी हुई। कुछ दर तक बाबू लाल उसे घूरता सा रहा। अब यह भी शीघ्र नीलिमा वाली आयु तक जा पहुचेगी। प्रमिला थाली रखकर चली गयी।

बाबूलाल खाना खाने लगा और साथ ही सोचने लगा, नीलिमा ठीक थी। कोइ ऐसी वैसी बात नही थी। आजकल के हिसाब से कोइ खास बडी भी नही हो गयी थी। पर सुभद्रा है कि बस। कहना चाहिए, बस मा है। आम तरह की मा। उसकी चुगली करन लग गयी थी। उस लडके से बात कर रही थी। वह लडका सवाल समझन के बहाने इसके पास बैठा रहा।

नय मकान मे था। आफिस जाना था। नहाया। फिर फौरन लैट्रिन जाना पड गया। बाहर निकला तो सुभद्रा ताने देने लगी थी—आप तो सदा से पहले का काम पीछे और पीछे का काम पहले करने के हिमायती हो। आपको यह फ्लैश लैट्रिन मुबारिक हो मगर अब नीलिमा को अपने घर भेजन का बन्दोबस्त करो।

—हो जायगा सब्र। सब्र रक्खो। बाबूलाल बौखला गया था।

—मानती हू हो जायेगा, पत्नी न उसे शात किया, देखो नीलिमा बी० ए० तो कर ही चुकी है। मुह पर कील भी निकलन लगे है। चलो माने लेती हू कुछ समय तो हम इसे और बैठाय रख सकत है किन्तु एक लडका है आर० ए० एस०। जनादन को तो आप जानते ही हागे। उसे और उसके माँ-बाप का नीलिमा पसद है। वे लालची नही है, फिर भी कुछ तो अपना स्टण्डड रखेगे ही। कहा तो बात पक्की कर सकती हू। आज मौका है। कल को तुम जानना।

अधूरा सा नाश्ता कर बाबूलाल दफ्तर चला गया था। दफ्तर म सिर दद होन लगा था।

लच-आवज मे बडे बाबू से कहकर चल दिया कि आज तबीयत ठीक नही है। शायद सकेड शिफ्ट मे न आ पाय।

साइकिल चलाते चलाते वह हांफने लगा था पार्क आया तो एक ओर साइकिल खड़ी कर, एक बेंच पर बैठ गया।

चम्मच हाथ से छूट कर फर्श पर जा गिरा। खन की आवाज हुई जिसने बाबूलाल को एक मिनट के लिए वर्तमान में ला खड़ा किया। उसने थाली एक ओर सरका दी और पलंग पर लेट गया। फिर से पुरानी खट्टी-मीठी यादों में खो गया।

मार्च बस शुरू ही हुआ था। बहुत सुन्दर नीले पीले फूलों की कतार सामने दीख रही थी। उसे फूलों से कितना प्यार है। फूल जैसी प्यारी बच्ची से भी कम प्यार नहीं। उसके सुखद भविष्य की चिंता, अकेली सुभद्रा की नहीं उन दोनों की है। सारे-के सारे प्रश्न अब सामने हैं।

वहीं बैठे-बैठे उसकी आँखें अलसा गयी थीं। कई चेहरे एक साथ उसकी आंखों के सामने उभर आये।

अपना पुराना चेहरा—जो शायद अपनी तमाम पिछली उम्र में, अपने ढंग के मकान के लिए तरसता रहा था।

भगतराम—जमीनों मकानों का दलाल, सैकड़ों झुर्रियों से अजीब सी बनावट से बना हुआ चेहरा। जब भी मिलता है एक ही बात—वाह बाबू बाबूलालजी! मार लिया मौका वक्त रहते। पता है इन डेढ़ सालों में मकानों की कीमतें किस तेजी से बढ़ गयी हैं। बोलिए कितना दिलवा दूं? बाबूलाल उसे घूरता है तो वह चुप हो जाता है।

पत्नी का वितृष्णपूर्ण चेहरा—जो इतने सुन्दर मकान को भी सदा उपेक्षा से देखती है।

नीलिमा का चेहरा—जो बचपन से बड़ी बनावटें पालती चली जा रही है।

बाबूलाल ने सोचा पत्नी से बात बात पर मुकाबला करने का न तो फायदा है न ही उसके पास अब और सामर्थ्य ही रह गयी है। कब तक भला इस दिशा में पत्नी के प्रश्नों से निरपेक्ष रहा जा सकता है।

इसके साथ जनार्दन का चेहरा भी आंखों के आगे आ गया—होनहार खूबसूरत, नौजवान। पिता अमीर। यदि कुछ लालची या दकियानूसी भी हैं तो क्या! आज सभी तो अपने-अपने मतलब और हिसाब के अनुपात में

परम्परावादी बन जाते है और प्रगतिशील भी। हमारा महत्वपूर्ण प्रश्न तो ठीक वक्त पर लडका हथियाना है।

इसके बाद एक और चेहरा—पुरानी घिसी हुई मकान मालकिन। चेचक के दागो से भरी हुई।

बाबूलाल उठ खडा हुआ था। सिर दर्द को भूल गया। फिर साइकिल दौडाने की एक लम्बी प्रक्रिया जारी हो गयी थी। पहले पहल भगत राम दलाल के घर, फिर जनार्दन के घर। फिर हलवाई के पास। सुनार के पास इधर उधर। उसी बडे मकान में मोहलत मागकर नीलिमा की शादी खूब ठाठ बाट से कर दी थी।

बाबूलाल ने करवट बदली। आख खुल गयी। वह उसी पुराने कोठरी-नुमा मकान में जम रहा है। उसी पुरानी चेचक के दागो वाली मकान मालकिन के सरक्षण में। भाग्य अच्छा रहा यही मकान उन्ही दिनो फिर खाली हो गया था उनके लिए।

धन्यवाद ईश्वर! यदि बडा मकान न बनता। इतने मुनाफे पर न बिकता, तो क्या यह सब हो पाता। तभी तो नीलिमा सुखी है। मेरे लिए यही सबसे बडे सतोष की बात है। गाडी इसी तरह और आगे खिचती रहे। बस। और कुछ नही चाहिए मुझे।

छब्बीस

एक लडका था, कुछ खब्ती किस्म का। उसके दिमाग में कुछ अक्षर गूजते रहते थे। कल किसी दोस्त के घर कोई लघु पत्रिका देख आया था। रात भर 'आम' और खास की व्याख्या करता रहा। सवेरे उठते ही बाप से पूछने लगा—आम को खास में कैसे बदला जा सकता है? बाप पढा लिखा नही था। बोला—जब हम इतना पैसा काहे का खर्च कर रहे हैं ऐसे सवाल स्कूल में पूछा कर।

लडका स्कूल पहुचा। सस्कृत के पडितजी से वही सवाल पूछा—

पडितजी आम को खास म कैस तब्दील किया जा सकता है ?

पडितजी ने उसे उर्दू के मास्टर साहब के पास भेज दिया। लडके न मौलवी साहब के सामने वही जुमला, दोहरा दिया—आम को खास म कस तब्दील किया जा सकता है ? मौलवी न अपनी लम्बी दाढी पर हाथ फेरत, माथे पर सलवटें पैदा करत हुए कहा—अगर अलफाज़ उर्दू के हो तो इसका यह मतलब कतई नही कि सवाल भी उर्दू का बन जायगा। तुम साइस वाल मास्टर साहब के पास चल जाओ।

पता नही लडके पर किस कद्र सनक आयद थी—शायद प्रगतिशील होना चाहता था—साइस वाल मास्टर साहब के पास पहुच गया।

साइस वाले मास्टर साहब आम का मतलब तो बडे आराम से समझ गय। लकिन यहा खास का मतलब समझ म नही आ रहा था। उन्होने डिक्शनरी देखी। सोचा आखिर बच्चा है, खस को गलती से खास पढ गया होगा। उन्होने किताब भी देखी। दिमाग भी लडाया। समझ म नही आया तो अफसोस जाहिर किया—अपना स्कूल छोटा है। एम रसायन अभी हमारे यहा आए ही नही जिनसे आम को खस म बदला जा सके।

हिस्ट्री के सर जो आजकल शोध काय कर रहे थ यह सारा माजरा देख रहे थे। उन्होने लडक को अपन पास बुलाया और कहा—यह इतिहास का प्रश्न है। भाग कर रेलव कालोनी चला जा। हम उधर स निकलत थे तो घम निकल आते थे। आम रिहायशी कालोनी थी, लकिन आज 'खास' बन गयी है। आकषण का केद्र। लोग देखन को तरस रहे है। पुलिस न आतिश बाजी की मानिद गोली चलान के बाद घराबदी कर रखी है। एक तरफ लोग हैं। दूसरी तरफ पुलिस। खेंचा-खेंची चल रही है। आतक तो छा ही गया है। जिन आम कमचारियो का कल तक कोइ नाम लवा नही था, उनका खास का दजा देकर नतागण भाषण दने म लग हुए हैं। खुद गिरफ्तार हो रहे हैं। उनको गिरफ्तार करवा रहे है। 'आम' 'खास', मे तब्दील हो रहे हैं। आम पुलिस कास्टेबल को खास अधिकार मिल गय हैं। जलियावाले बाग को आज कौन जानता अगर डायर ने वहा गोली न चलवायी होती। पुत्तर तुमने पानीपत का युद्ध कहा देखा है। अगर रेलवे कालोनी जाओ तो वहा थोडा थोडा युद्ध का नजारा देखन को मिल सकता है।

सर का शोध प्रबंध पर वक्तव्य अभी खतम हुआ कि नहीं हुआ, लडका बेतहाशा भागने लगा। वह लाल सुर्ख कमीज पहने हुए था। यह तो खतरनाक बात हुई। किसी मास्टर साहब का गम्भीर स्वर उभरा तो मन न उसे पकडने की चेष्टा की। मगर फुर्तीला। यह जा, वह जा। सर के शोध प्रबंध के लम्बे चौडे निष्कर्ष उसकी समझ म नहीं आये थे। वह तो सिर्फ पानीपत की लडाई को, अपने मन मस्तिष्क म बसी कल्पना को साकार रूप म देखने को मचल गया था। पर घबरा गया, कहीं मास्टर साहब नहीं आ जायें। दूसरा उसी रास्ते उसका घर पडता था। कहीं बाप न अकेला देख लिया तो। बाबूलाल का घर निकट ही था। उसे ध्यान आया। इनके एक मित्र रेलवे कॉलोनी स आया करते है। अत बाबूलाल को जा जगाया—अकल अकल सुना है रेलवे कालोनी म युद्ध छिड गया है।

सुनते ही बाबूलाल धक सा रह गया। रेलवे हडताल शुरू होने के उडते उडते समाचार उसने सुन थे किन्तु वह तो अपने ही पचडो मे खोया हुआ रहा था। धर्मेश इसम भाग नहीं लेगा—ऐसा भी उसे अनुमान था—अब दंगे की बात सुन, वह चिन्तित हो उठा। जल्दी जल्दी कपडे बदले और बाहर निकल आया। लडके से कहा—बेटे अब तुम अपने घर जाओ।

लडके ने बहुत अप्रसन्न मुद्रा बनायी। फिर बाबूलाल को घूरा—तो हम क्या फायदा हुआ अकल ?

—फायदा, बाबूलाल चौंका, कैसा फायदा ? तुम क्या चाहते हो ?

—हम भी युद्ध देखेंगे। हमे भी पानीपत का युद्ध दिखाने ले चलो। अब की लडके न कुछ रोबीली आवाज निकाली। हाथो स अपनी लाल कमीज मसलने लगा।

—वहा पुलिस के बेंत भी पड सकते ह। कहता हुआ बाबूलाल, लडके की ओर ध्यान दिए बगैर धर्मेश के घर की तरफ चल पडा।

सत्ताईस

—बाबूलालजी थोड़ा हमारी तरफ भी ध्यान दिया करें, जीवन बाबू एक गली से मोड़ से आ प्रकट हुए। वह बहुत सुस्त चाल चल रहे थे। लम्बा कुर्ता जैसे अकड़ गया।

बाबूलाल को उतावली थी। बोला—ओह जीवन बाबू, आप इस वक्त किधर को ?

—अमा यार यूनियन का एक केस था। तुम्हारी तरह का ही एक भला आदमी है इसी गली में रहता है। वहीं से आ रहा हूं। खूब ज्यादा ही खिला पिला डाला। बहुत मना किया कि भई रहने दो इतना तकल्लुफ। फिर कभी सही। पर माना नहीं कहने लगा—फिर भी आते रहियेगा। हरेक का तौर तरीका अलग-अलग होता है। तुमने चलते चलते दो-तीन कप चाय पिलाये थे। भुजिया पान खिलाया था। हम उसमें भी राजी। हम खाने पीने के लालची थोड़े ही है। हम तो सेवक हैं सबके। कोई और सेवा हो तो निसंकोच बता जाना।

चाल की तरह जीवन बाबू की जुबान भी निहायत आहिस्ता आहिस्ता चल रही थी। बाबूलाल को लगा उनकी सांस के साथ कोई गंध भी उड़कर बाहर फैल रही है।

—मौका आने दीजिए जीवन बाबू जरूर सेवा करूंगा इस वक्त जरा जल्दी में हूं। बाबूलाल को लगा सफेद कमीज का कालर गर्दन में फंस गया है उसे ठीक करते हुए अनुमति चाही, तो अच्छा

—किधर को जा रहे हो ? स्टेशन !

—जी हां।

—तो रुको। हम भी उधर ही को चल रहे हैं। बीकानेर मेल तो अभी तक आयी नहीं है। देखो ना सुबह के नौ बजे का टाइम है और अब साढ़े तीन बज रहे हैं।

—हो सकता है हड़ताल की वजह से न आयी हो बाबूलाल कुछ तेज कदम रखने लगा मुझे दूसरा ही काम है।

—धर्मेश बाबू के जा रहे होंगे जो कभी कभी तुम्हारे पास दफ्तर में आ जाते हैं।

—जी हाँ। बाबूलाल ने धीरे से उत्तर दिया।

—हाँ भाई, अभी हमारी भी उससे बातचीत हुई है। निहायत शरीफ आदमी है। रस्ते में गुप्त तो कम बहीं एक ईमानदार आदमी दिखा है। बाकी सब तो क्या कहूँ हरामखोर हैं अपनी बात पर व खून कर हमने लग लेकिन दूसरे ही क्षण गंभीर हो गए, अब जब से इस जाना न हस्ताल की है, दिल करता है, सबको गोली से उड़वा दूँ। गाड़ियाँ जाम कर रखी हैं जैसे घर की जायदाद हो। इससे जनता को कितनी तकलीफ होती है। तीन चक्कर तो मैं भी लगा चुका हूँ, सुबह से। अभी नहीं आयी मेल। अभी भी नहीं। फिर यहाँ था ढाई बजे आने की आशा है। मैं जा कर साढ़े तीन बजे जा रहा हूँ। अब भी नहीं आयी होगी। सब आपस में मिले हुए होते हैं।

बाबूलाल समझ गया, इस समय जीवन बाबू जीवन के अंतरंग क्षणों से साक्षात्कार करने पहुँच चुके हैं। उसने निकट के एक खोखे से सिगरेट पान जीवन बाबू को दिलवा कर कहा—आप यहाँ पर बैठ कर सिगरेट पियें तब तक मैं धर्मेश के क्वार्टर हो आऊँ।

—हाँ यह ठीक रहेगा। जीवन बाबू कुर्ते को समेटते हुए बेंच पर पसर गये।

बाबूलाल थोड़ा आगे बढ़ा ही था कि तभी आँखों के सामने कुछ लाल लाल-सा झिलमिला उठा। ओकलाल कमीज में वही लड़का। वह बाबूलाल के पास आ कर बोला—आप इन्हें जानते हैं। मैं आप दोनों की बातें सुन रहा था। पता है वह मेरे चाचा हैं। अब वह बड़े मजे से पान चबा रहे हैं।

बाबूलाल को बड़ी कोफ्त हुई। शीघ्र ही जेब से कुछ पैसे निकाल और उसे पकड़ा दिये—तुम भी पान खाओ। फिर चाचा के साथ साथ चले आना। वह बड़े आराम से सारे सीन दिखा देंगे।

इस प्रस्ताव से लड़के की आँखों में खासी चमक भर आयी। उसने अब की आराम से बाबूलाल को रिहाई बख्श दी और बेंच की तरफ लपक गया।

जो भी व्यक्ति रेलवे कालोनी की दिशा में जा रहे थे, पुलिस वाले उन्हें

रोक रहे थे यह कहते हुए कि इस इलाके को दंगाग्रस्त क्षेत्र घोषित कर दिया गया है। खतरा मोल न लीजिये। किसी को कुछ हो गया तो सरकार ज़िम्मेदार नहीं होगी।

एक दो बार भीड में रेल के रेले, उधर से भागते हुए आये। सड़क और रेल लाइनें पार कर गये। पुलिस उन्हें खदेड रही थी।

एक दफा तो बाबूलाल के मन में भय पैदा हो गया। वह दो चार कदम पीछे हट गया। फिर जैसे अपने आप को झटका देते हुए रुक गया, लानत है तुझ पर। एक दोस्त तो खतरे में फंसा है, और दूसरा दोस्ती का दम भरने वाला बीवी की गोद की तरफ भाग। डूब मर बाबू। दुनिया में दोस्ती का जो थोडा सा नाम बचा है उसे ज़मीन में गाड़ आ।

दूसरे क्षण बाबूलाल तनकर खड़ा हो गया और आगे बढ़ने की तरकीब सोचने लगा। आकाशवाणी के कुछ शब्द कल्पना का सहारा लेकर उसके दिमाग में खलबली मचाने लगे—दंगाग्रस्त क्षेत्र। अनियन्त्रित भीड। काबू पाने के लिए पुलिस को हवाई फायर । हल्का लाठी चार्ज। अब स्थिति पर काबू पा लिया गया है। किसी के घायल होने या और कोई अप्रिय समाचार प्राप्त नहीं हुआ।

सहसा राजू सिसकता सिसकता बाबूलाल के पास आ गया। वह हांफ भी रहा था।

देखते ही बाबूलाल का मन उमड आया। उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा—क्या बात हो गयी रे?

—हम क्वाटर से निकाल दिया। अटकते स्वर में राजू बोल पाया।

—और करो हड़ताल। निकट खड़ा पुलिसमैन क्रूरता से हंसा।

—धर्मेश बाबू कहां हैं?

—उन्हें पकड कर जेल ले गये। नारायण भैया भी घर पर नहीं आये। दीदी वहां खडी हैं।

—चलो मैं तुम्हारे साथ चलता हूं।

—आप नहीं जा सकते सिपाही ने लाठी फलाते हुए कहा।

—क्या नहीं जा सकता। मैं इन्हें अपने साथ ले जाऊंगा। बाबूलाल ने किंचित रोष से कहा।

—तो हमारे हैड साहब से पूछ लीजिये।

तभी एक तरफ से नारायण और स्टेशन की ओर से प्रमचन्द अपनी मा तथा पत्नी के साथ उसी स्थान पर पहुच गये। माहौल कुछ ऐसा बन गया था कि किसी को एक दूसरे से अभिवादन करने की सुध ही न रही।

—राजू रो क्या रहा है। नारायण के मुह से आते ही यही प्रश्न निकला।

—हमारा सारा सामान इन लोगो ने बाहर फेक दिया। दीदी ने मना किया कि ठहरो भैया को आने दो तो उसको भी मारा। सबको देखकर राजू की रुलाई और ज़ोर पकड गयी।

—हैवान कही के। नारायण क्रोध से चीखा।

—अब की जबान लडाई तो अच्छा नही होगा। वहा दूसरा सिपाही भी आ गया, पहले ही बहुत तमाशा हो चुका है। और देखना चाहते हो तो दिखाये?

—अब आप इनको अपना सामान भी उठाने देंगे या नही। बाबूलाल ने थोडी नम जबान से कहा।

—हा, हा, आप सब लोग जाइये। लेकिन वापस क्वाटर मे दाखिल होने की कोशिश मत कीजियेगा। वसे ताले तो हमने लगा ही दिये है।

प्रेमचन्द वगैरह अभी अभी बीकानेर मल से उतर कर सीधे इधर आये थे इसलिए उनके पास सामान भी था। अत सामान के पास राजू को खडा कर, सब लोग क्वाटर की ओर चले गये।

यम विस्फोट हुआ हो, कुछ ऐसा आभास हो रहा था। चारो तरफ काच ही काच के टुकडे बिखरे पडे थ। कप प्लेटो के टुकडो से नालिया भरी हुई थी। दरिया चादरें कीचड मे सनी दुर्गंध पदा कर रही थी। सामान का अम्बार बीच सडक पर।

वद, सुशील मम्मी तथा दादी से लिपट कर रोने लगे। प्रेमचन्द की निगाह मनिता के कपडो के ऊपर गयी। सलवार ऊपर तक चिर गयी थी। कमीज़ कधे से पूरी तरह फट गयी थी। वहा एक साथ कई खरोचे स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रही थी।

—ओह! किन जानवरो से पाला पड गया, प्रेमचन्द जैसे बेबसी से

बोला, एक तो सफर की थकावट गाडी मे रेत फाकते हुए आये तो आराम की बजाय यह सब देखने को मिला।

—आप लोग यहा से हिलगे या नही। या फिर दूसरी कारवाइ की जाये। एक कास्टेबल उधर से डडा घुमाता हुआ निकला।

—हम यह कहा गया था कि तीन चार रोज तक सरकार कमचारियो के काम पर लौटने की प्रतीक्षा करेगी तब कोई सख्त कदम उठाया जायेगा। वरना मैं छोटे छोटे भाइ-बहनो को छोडकर घर से क्या निकलता, नारायण भाव प्रवण हो उठा कायदे मे नोटिस ईशू करने चाहिए थ।

—इशू किये थ। क्या आपको नही मिला ? अपने छोटे भाइयो से पूछ देख। वैस यह सब मीसा मे जरूरी भी नही। एक सिपाही ने कहा तो और दूसरा सिपाही बोल पडा —

—क्या हम लोग यह सब बाते जानने को बैठे है ? हमे तो बस क्वाटर नम्बरो की लिस्ट पकडा दी गयी। अब ज्यादा बहस म न पडिये और दफा हो जाइये।

एक तरफ इतना भर पूरे घर का सामान। दूसरी ओर पडोस वाले अपने क्वाटरो म दुबके पडे थ। शायद उनको सामान रखने स भी डर रहे थ।

चार आठ क्वाटर छोडकर, इसी तरह के सामान का अम्बार होली की याद दिलाने लगता।

—आप लोग सोच क्या रहे ह ? सिपाही ने आकर पूछा।

—हम टक लाना होगा नारायण ने उत्तर दिया, बस जल्दी ला रहे हैं।

—हा जल्दी कीजिए। भीड नही होनी चाहिए। लाठी से सडक पर ठक ठक करता हुआ सिपाही चला गया।

—पर हम जाएगे कहा भैया ? ममिता का स्वर रुआसा हो उठा।

—मेरे साथ मरी बटी चलेगी। राजू भैया चलेंगे। नारायण भाभी जी को ले आएगा। बाबूलाल ने जोशीला स्वर निकाला किन्तु गला कही आद्र हो गया।

—पहले सामान क लिए ट्रक लाया जाए। बाकी सब बाद म तय हो

उधर बेचारा राजू घबरा रहा था। बार-बार प्रेमचद के सामान क नग गिन रहा था। पुलिस वाला पर नजर पडती तो मनाता—यह दूर ही रहे। तभी बाबूलाल और नारायण आते दिखाई दिये। नारायण ने पहली बार गौर किया, राजू के गाल छिल हुए है। नाक की ऊपरी परत से खून रिस रहा है। कमीज के बटन टूट गए है। कमीज की बाह अगुलियो तक झूल रही है। नारायण ने इस बार म कुछ न कहकर केवल इतना ही कहा—शाबाश राजू! तुम्हे थोडी देर और यही रुकना होगा। हम अभी ट्रक लेकर आ रहे है।

पता चला ट्रक कम्पनियो ने भी स्लेव एम्पलाइज एसोसिएशन के समर्थन म एक दिन की हडताल कर रखी है।

नारायण को ध्यान आया, विनोद का जो उसका क्लास फैलो था। उनके चार पाच ट्रक चलते थे। वह बाबूलाल को लेकर डागा बिल्डिंग मे चला गया। विनोद घर पर नही था। नारायण ने उसके पिता को जल्दी से अपना परिचय दिया और अपने आने का उद्देश्य बताया।

—न बाबा न, माफ करो। इस तरह तो हम अपनी यूनियन म बदनाम हो जाएगे।

बाबूलाल ने बहुतेरा समझाया जिन लोगो के समर्थन म वह हडताल कर रहे है, उन्ही की सहायता हेतु यदि पौन घटे के लिए ट्रक निकाल देगे तो यह कोई बुराई का काम नहीं होगा।

—सभी ड्राइवरो को हमने आज छुट्टी दे रखी है। ट्रक चलाएगा कौन?

निराश होकर दोनो के० ई० एम० रोड आ गए। इतनी जल्दी म अब क्या करे साथ ही रहे थे कि पीछे से आकर किसी ने नारायण की आखे बद कर दी। नारायण ने झटके से मुह मोडा तो विनोद को खडे पाया। फिर से उनम आशा की एक किरण जाग गई—हम तो तुम्हारे ही घर से होकर आ रहे है। नारायण ने उसे सारी स्थिति सक्षेप म बता दी।

—कोई बात नही, पूरी बात समझ कर विनोद अपनी टीशर्ट को थोडा ऊपर उठाते हुए बोला, चलो थोडा बहुत ट्रक तो मै भी चला लेता हू। चाहो तो अपना सामान हमारे गोदाम मे रख लेना। बस जरा ठहरो मैं एक मिनट म आया। कहता हुआ विनोद भाग गया।

अट्ठाईस

हर रात को नारायण दत्ता साहब के साथ अस्पताल म रहता था सुबह साढे आठ बजे, मनिता वद सुशील का लेकर आ जाती थी। तब नारायण घर आ जाता। बडी फुर्ती से नहाता धोता। नाश्ता कर सा जाता। गीता खाना बनाती रहती। ग्यारह बजे दो टिफन तैयार कर देती। एक वही छोड, दूसरा स्वय उठाकर चल देती। फल खरीदती हुई अस्पताल पहुच जाती। मनिता के अतिरिक्त अय बच्चे उस पाक म खेलते मिल जाते। वाड म पहुचकर मनिता और बच्चो को तुरत घर भेज देती। घर जाकर मनिता नारायण को उठा देती। नारायण तयार होकर खाना खाता और अधिकतर केशव को साथ लेकर जेल चला जाता।

आज सुबह दत्ता साहब स्वस्थ दिख रहे थे, परन्तु वहमी भी बहुत हो गए थे इन दिनो। हर समय मकान क्वाटर के विषय मे सोचते रहते। सुशील वद की पढाइ की चचा छेड देते। प्रेमचद आदि की चिंता करते। चाहते थे सारी गुत्थिया एक साथ सुलझ जाए। कभी कभी बहुत चिडचिडे हो उठते।

आज सुबह किसी स कोरा कागज माग कर उसके नीचे हस्ताक्षर कर दिये आर नारायण स पसनल आफिसर को एक एप्लिकेशन लिखन को कहा कि कसे देवेद्र उहे अपन भाई के साथ सादल कालोनी म आकर पीट गया जिससे उनकी टाग की हड्डी टूट गयी। दूसरा उनका लडका प्रेमचद यहा नही है वह उनकी ओर स प्राथना करते है कि उनका क्वाटर देवद्र स खाली कराया जाए और नियमानुसार उसके विरुद्ध अनुशासनात्मक कारवाई की जाय। यह एप्लिकेशन नारायण न वही बठे बठे लिख ली थी।

आज साढे ग्यारह पौने बारह के बीच नारायण घर से टिफन लेकर निकला तो एप्लिकेशन उठाना भी नही भूला। केशव के घर गया तो केशव न कहा आज सिर बहुत भारी है। तू अकेला ही चला जा। हमारा टिफन भी लेता जा। नारायण दोनो टिफन लेकर तीव्र गति स जेल जा पहुचा। धर्मेश बाबू न कहा—अब वशव खाना मत लाया करो। यही

ठीक मिलने लगा है। हा, वस मोदी साहब का ध्यान रखा करो। इनका हाजमा जरा नाजुक रहता है। इस पर मादी साहब हसने लगे तुमसे ज्यादा खाता हू और मोटा भी तुमसे अधिक हू। इसी तरह हसते गपशप करते हुए उन्होने खाना समाप्त किया तो नारायण ने मोदी साहब को दत्ता साहब वाली एप्लिकेशन दिखाई। पढकर उन्होने कहा—ठीक लिखी है पर कौन परवाह करता है। जब लिख ही ली है तो दे आओ। हा इसकी एक कापी हमारे यूनियन के दफ्तर जरूर दे देना। कहना कि मोदी साहब ने भिजवाई है।

वहा से चलकर नारायण निकट ही अपने मित्र दइया के घर बैठ गया। एप्लिकेशन की नकल की। वहीं दोना टिफन रखे। दइया की साइकिल उठाई और लालगढ वकशाप गेट पर अपना नाम लिखाकर अन्दर चला गया। फिर चिट भिजवाकर वह आफिसर से मिलने के लिए बच पर बठा बहुत देर तक प्रतीक्षा करता रहा। आखिरकार चपरासी की कृपा से अन्दर जा सका।

अफसर ने सरसरी तौर पर एप्लिकेशन पढी। नारायण को घूरा—तुम कौन हो? प्रेमचद को खुद आने दो। इतनी मामूली मामूली बातो के लिए परेशान करते हो तुम लोग। हमारे पास और भी बहुत से काम है। जब से हडताल हुई है, नाक म दम है। खैर हम गौर करेंगे। इस बाबू का दे दो।

एप्लिकशन कौन से बाबू को दे पता लगाता लगाता जब वह ठीक सीट पर पहुचा। सीट खाली थी बाबू कैन्टीन मे था। नारायण उसे पहचान नही सकता था। फिर बाबू भी तो कैन्टीन म कन्टीन के अतिरिक्त विषय की सुनकर बिगड सकता था। अत कुछ दर बाद और प्रतीक्षा करता रहा किन्तु हारकर एप्लिकेशन सीट पर दबाकर रख दी, और साथ की सीट के बाबू से प्राथना की कि उसके आते ही सभलवा द।

—बेफिक्र रहो दोस्त! हडतालिया ने उस सही-सलामत वापस आने दिया तो यह अवश्य उसके हाथ पहुच जाएगा। चुस्त दुरुस्त लिबास में वह बाबू बहुत खिल रहा था।

पूरी विश्वास है कि काम बन जाएगा, नारायण वापस मुड आया। उसी रास्ते पहले दइया के घर। वहीं साईकिल रख, टिफन उठा रहा था तो दइया की मा ने कहा—न भैया, इन दिनो इस जल से आते जाते हमारे घर न आया करो। पुलिस हम पर भी सदह करने लगगी।

बिना कुछ उत्तर दिए, थका मादा नारायण जब अपने घर के निकट पहुचा तो वहा, इन चार घटो के बीच जो-जो गुजरा था उसकी किसी न कल्पना भी नही की थी। उसने जो-जो दृश्य देखे उनमे एकबारगी स्तब्ध रह गया। उजडा हुआ घर। बहन भाइयो की दयनीय दशा। उसका गला बुरी तरह से सूखने लगा।

उनतीस

विनोद न ट्रक को सामान के जितने निकट हो सकता था, ला खडा किया। नीचे उतरा तो सामने केशव को भी नारायण के परिवार के बीच खडा पाया—अरे तू यहा खडा क्या तमाशा देख रहा है।

—माफी माग रहा हू। यह सब हो गया और मुझे खबर तक न हुई। एक तो गली दूसरी पडती। दूसरा हम लोग भी उलझे हुए थ, केशव ने उत्तर दिया, यहा अब मनिता से सारा हाल पता लगा।

—क्या तुम्हारा क्वाटर खाली नहा कराया? नारायण न पूछा। साथ ही कुछ छोटा सामान ट्रक म डालने लगा।

—कोशिश तो उन्होने की। लेकिन हम लोग डट गय। मेरे पास एक नकली पिस्तौल भी है। मेरे दो चाचा भी आ गए थ। हम सब ने ईट पत्थर फेंकने शुरु किए। फिर पता नही कौन वर्दी मे इधर आया। सिपाहियो से बोला—यह मोदी साहब का क्वाटर है। अभी रहने दो। ज्यादा हल्ला हो जाएगा। पहले दूसरे नम्बरो को देखो। इनसे कल निबट लेंगे। हमसे बोला—बिल्कुल चुपचाप दरवाजे खिडकिया बन्द करके बैठे

रहो। अच्छा अब तुम किधर जाओगे ?

नारायण ने चाची की ओर देखा जो बिल्कुल चुप थी।

—देखा सामान लादने के बाद ही फैसला करेंगे। नारायण ने अनिश्चय का परिचय दिया।

—अब तुम लोग ताला तोड़कर वापस क्वाटर में घुस जाओ। सिपाही लोग तो प्रायः जा चुके हैं। प्रेमचंद ने मां की ओर देखकर उन्हें सलाह दी।

—नहीं। कल को फिर यही सब कुछ हो सकता है, मनिता ने सहम कर उत्तर दिया।

—बिल्कुल ठीक कहा मनिता बेटी ने। बाबूलाल ने समर्थन किया, सब हमारे पास चलो।

—परन्तु इतना सारा सामान आपके यहां कहां समाएगा ? केशव ने जो कभी नारायण के साथ बाबूलाल के घर गया हुआ था, कहा, बड़ा-बड़ा सामान हमारे यहां छोड़ते जाइए।

बाबूलाल के सामने अपने द्वारा बनवाए और फिर बेचे हुए बड़े मकान का नक्शा घूम गया। उसके मुंह में शोकाकुल स्वर निकला—नहीं केशव, कल को तुम्हें भी दिक्कत हो सकती है। मेरे पास बड़ा मकान नहीं रहा किन्तु दिल तो उतना ही बड़ा है। तुम लोगों के स्नेह से बनी बनाई हैं। सामान डा० सेठ की हवेली में रखवा दूंगा।

फिर जल्दी जल्दी सभी अपनी सामर्थ्यानुसार सारा सामान ट्रक में लादने लगे। टूटे फूटे सामान का एक तरफ अम्बार लगता रहा।

सामान लद चुका तो फिर वही सकोचपूर्ण प्रश्न किधर ?

नारायण को अचानक कपकपी छूटने लगी। मनिता ने हाथ छुआ। हाय इतना बुखार।

मुझे तो अब तक अस्पताल पहुंच जाना चाहिए था। जल्दी फैसला कर लो। चाची का शुष्क स्वर निकला।

—हम चकल के साथ ही जाएंगे। नारायण और मनिता के मुंह से एक साथ निकला।

—तो ट्रक हमारे हो भिजवा रहे हो, चाची ने लम्बी सांस खींची जैसे आधी थकावट जाती रही हो।

—नहीं, इसे मैं ही अपने गोदाम में पूरी सुरक्षा से अपनी देख रेख में रखूंगा। विनोद ने कहा, निश्चिंत रहो, वह ट्रक स्टार्ट करने लगा तो मनिता जल्दी ट्रक से दो अटैची उतार लाई जिन में उनके हर रोज पहनने के कपड़े थे।

प्रेमचंद ने धीरे से कहा—ऐसे अच्छा तो नहीं लगता हमारे साथ ही घर चलना चाहिए था। खैर ओह हम कितनी बुरी तरह से थक गए हैं।

—हां, यह तो मैं सोचती हूं। सरिता पति के समर्थन में बस यही चार शब्द कह पाई।

प्रेमचन्द ने जाकर राजू से अपना सामान संभाला। मनिता तपककर उनके पीछे गई और कहा—मम्मी चिंता से बेहाल होंगी। उन्हें बाबूलाल अंकल के घर भेज देना। घर उनका देखा हुआ है। फिर राजू को साथ ले आई। सब अपनी-अपनी राह चल दिये।

तीस

साढ़े पांच बज गए थे और घर से कोई भी नहीं आया। गीता बार-बार फाटक तक या, कई बार सड़क तक भी देखकर लौट आई थी। प्रतिक्षण चिंता बढ़ती जा रही थी।

वैसे चार साढ़े चार के बीच चाय की थरमस लटकाए, बिस्कुट वगैरह लेकर कोई-न-कोई पहुंच ही जाता था। या तो दत्ता साहब पहले से अच्छे थे। उनकी जिस टांग को डोरी से बांधकर लटका रखा था, अब उसे सीधे बिस्तर पर रखने की अनुमति मिल गई थी। बस मुश्किल एक ही थी, अचानक उनका दिल घबराने लगता। हाथ पैर कांपने लगते और फिर कभी वह बेहोश भी हो जाते। ऐसा तीन बार हो चुका था। आखिर मन को पक्का कर, गीता ने कहा चाचा जी मैं ही घर से चाय ले आती हूं और घर का हाल चाल भी पता चल जाएगा।

—मैं ता यही बात कब स कह रहा हू। आराम मे हू, दत्ता साहब ने गीता को आश्वस्त किया तो गीता बडे-बडे डग भरती, अपन क्वाटर के सामने जा पहुची। ताला देखा तो हैरान रह गई। आस पास टूटा फटा सामान और कुछ फटे पुराने कपडा को देखकर उसका दिल धडकने लगा। साथ का क्वाटर देखा। उसका भी यही हाल। तब तीसरे क्वाटर की कुण्डी खटखटाई।

छाटा सा लडका बाहर आया—आटी आटी, आपका पुलिस न घर से क्यो निकाल दिया। मुह म उगली दबाए उसने गीता से प्रश्न किया। अब गीता का माथा ठनका। वह क्वाटर के भीतर चली गई। मिसेज सुथार से पूछा, तो उसन कहा—हम नही पता हम ता डर के मार निकली ही नही। जो कुछ हुआ हमस तो दखा नही जाता। लोगबाग बता रहे है, आते ही पुलिस वालो ने तूफान मचा दिया। सारा सामान बाहर पटक दिया। फिर सामान की ही तरह औरता और बच्चा को घसीट घसीटकर गली म फेंक दिया। चाहे उनके सिर फट या कपडे फट। औरता बच्चा के रोने चिल्लान की आवाज ता दूर दूर तक सुनाई दे रही थी। बहन जी, आप तो पढी लिखी है, जाकर भाई साहब को समझाओ, कुछ लोग माफीनामा लिखकर वापस ड्यूटी पर आ रहे है गीता का सिर बुरी तरह से भारी हाने लगा था। वह फ्न पडी—किसी का पता है मेर राजू मनिता किधर गए है, दूसरे छाटे बच्चा का क्या हाल है। नारायण घर लौटा था कि नही ।

—आटी जी, आज बीकानेर मेल बहुत ही लेट थी। उसी से आपके कोई रिश्तदार उतरे थ। बाद मे उन्ही के साथ सब चले गए, कालोनी की कोई लडकी कह रही थी।

गीता जल्दी-जल्दी मादुल कालोनी की ओर चल दी। घर पर उसे सरिता के अतिरिक्त कोइ नही दिखा। वह अगीठी लगा कर घर को साफ करन मे व्यस्त थी।

—बाकी सब लोग कहा है ? गीता न घबराए स्वर से पूछा।

—बच्चे तो शायद पडोस म खेल रहे है। बाकी सब आपको अस्पताल मे नही मिले ? आप बैठिये न दीदी !

—नही तो। मैं अस्पताल स ही आ रही हू।

—व लाग ता अभी अभी गए है बस।

—मुमे वहा स निकल चालीस मिनट हा गए हाग। फिर जाती हू। अभी आधा वाक्य मुह ही म था कि वह देखत ही दखत जैस भागती-सी चली गई।

थोडी देर म सरिता को ध्यान आया कि वह पूरी बात कहने स चूक गई है। गीता ने उतावली म उस अवसर ही नही दिया। गली मे गई। बच्चा को इधर उधर दखा। कोई नजर नही आया। स्वय ही गली क मोड तक गई किन्तु गीता तो जस हवा ही गइ थी।

इकत्तीस

दत्ता साहब धीरे धीरे ऊपर का खिसके। सिरहाना खडा किया और पलग के बैक के सहारे पीठ टिकाकर बठ गए। टाग को वस ही सीधा रखा। इतने मे डाक्टर राउड पर आया—हैलो मि० दत्ता अब ता आप काफी ठीक लगत है।

—आप सबकी कृपा स ठीक हू।

—घर जाना चाहग? पलस्तर खुलने की डेट को आ जाइएगा।

दत्ता साहब अस्पताल के वातावरण स परशान हो रह थ। फिर गीता और बच्चा की तकलीफ को देखते तो अपने को बहुत लाचार और बेबस पाते। सोचा चलो इन बेचारा को अस्पताल के चक्करा मे ता छुट्टी मिलेगी। हर वक्त प्रेमचन्द और पत्नी माया की चिन्ता सताती रहती। वह किसी तरह धर्मेश को भी देखना चाहत थे। किन्तु विवश थे। सोचन लग कौन स घर जाऊ? अपन मकान म जाता हू तो नारायण आदि का वही चक्कर रहेगा। भतीजी क घर पडा रह, यह भी अच्छा नही लगता।

उन्ह सोच म पडे देख, डाक्टर न कहा—सोच लीजिए, डाक्टर अगले

मरीज की ओर जाने लगा तभी सामने की खिडकी पर उनकी नजर पडी। वहा माया और प्रेमचन्द डाक्टर के राउड के खत्म होने की प्रतीक्षा म खडे थे।

जल्दी स दत्ता साहब ने कहा —मुझे घर जाना है डाक्टर साहब।

—ठीक है अभी डिस्चाज मीमो भिजवाए देता हू।

प्रेमचन्द और माया के अन्दर आते ही दत्ता साहब का स्वर आर्द्र हो आया। जल्दी जल्दी सरिता के पिता और सबका हाल पूछा। थोडी ही देर म अटैण्डेण्ट डिस्चाज मीमो देकर उनके हस्ताक्षर ले गया।

प्रेमचन्द और माया न शीघ्रता म सामान समेटा फिर उन्हे पहिए वाली कुर्सी पर बैठा कर बाहर ले गए। टैक्सी की। टैक्सी चलने ही वाली थी कि सामने से गीता आती दिखाइ दी।

गीता हाफते हाफते उन तक पहुची।

—क्या बात है गीता बेटी ? बहुत घबराई हुई लग रही हो। दत्ता साहब थोडे से आगे का झुके। उसके सिर पर हाथ फेरने का प्रयास किया।

—यह भी मुसीबतो का सामना कर रहे हैं प्रेमचन्द न कहा, आपके बच्चे तो बाबूलाल जी के साथ चले गए।

—किसलिए ? दत्ता साहब उद्विग्न हो उठे।

—बहुत लम्बी बाते ह। घर पर चलकर बताएग। फिर गीता की ओर देखकर कहने लगा, आप भी आ जाइए।

—नही अधेरा पड जाएगा। अब मैं भी उधर ही जाऊगी। गीता का गला बुरी तरह स सूख गया था।

एक तागा जालूसर गेट की तरफ जा रहा था। एक सवारी की जगह थी। गीता उसी म बठ गई।

बत्तीस

जब दत्ता साहब ने य पन्द्रह दिना के बाद गृह प्रवेश किया तो मन प्रसन्न हो उठा। फश धुले हुए थ। इतनी जल्दी सरिता ने सारा घर पोछ पोछकर

जैस वे मार्कि [illegible] उनके पलग पर बिछी थी। उन्हें वहां लिटा दिया गया [illegible] लगा। कमर के कान मे कुछ रंगीन बल्ब भी दत्ता साहिब ने अपने शौक स लगवा रखे थ, वह भी झिलमिला रहे थे।

बड सन्तुष्ट भाव मे उन्होने वेद-सुशील को प्यार किया। इतन म प्रेम-चन्द नहाकर उनके पास कुर्सी खीचकर बैठ गया।

—अब बताओ, व सब लोग बाबूलाल क घर क्या चले गए? धर्मेश को अभी जेल स छूटन म कितना समय लगेगा?

—यही तो सारे झगडे की जड है प्रेमचन्द न बौखलाकर कहा, फैमिली मेन को तो जरूर सोच लना चाहिए कि उसके किए का ऐसा फल बच्चे न भुगतें कि दर दर की ठोकर खाने को मजबूर हो जाए। पुलिस ने बेचारे बच्चो को मार जख्मी कर दिया और क्वार्टर खाली करा लिया। बडी नेतागिरी करन चले ह साहब!

—हरे राम दत्ता साहब का सास चढ गया, स्वर भीग गया अपना मकान होते हुए दर दर की ठोकर तो तुम खिला रहे हो। शर्म आनी चाहिए।

—शर्म तो आपकी उस गीता को आनी चाहिए। मुझे तो अफसोस हुआ देखकर कि कस आपको अस्पताल म अकेला छोडकर चल पडी। माया बीच म आ कूदी।

—तुम जानती हो? तुमन देखा क्या है। बेचारी बिलकुल पहली बार मुझे छोडकर गई थी वह भी मेर बहुत जोर देने स। मार का सारा परिवार मेरे पीछे पागल बना फिरा। धर्मेश मेरी ही खातिर जेल गया। तुम लोगो को पता ही क्या है। दिल्ली गए और उन्ही के होकर रह गए।

—हम तो तार ही कल मिला है। बडा दिल रखकर गाडी मे बैठे। वही हाल हुआ। चार के करीब गाडी पहुची। आग यह सारा नजारा देखन को मिला, प्रेमचन्द कहे जा रहा था, हमारा मूड खराब होना लाजमी था, वैस भी इतने थके मादे पहुचे थे। फिर बाबूलाल बडा अपनत्व दिखा रहा था मेरी बेटी मनिता। बेटा नारायण। राजू भया। मैंन भी कहा ल जाओ पता चलेगा। हमारा क्या है? एक और महारथी आए नारायण

की दोस्ती का दम भरते हुए और ट्रक मे सामान भरकर अपने यहा ले गए। देखो अब कितना वापस पहुचता है।

—शावाश बरखुरदार, करिश्मा कर दिखाया। बडा हाथ मार आए। जब कत्तव्य स विमुख होना हो ता सैकडा बहाने मिल जाते है। दत्ता साहब ने मिर पकड लिया जसे चक्कर आ रह हा।

—जब मम्मी ही नही बोली तो मै ही क्या बोलता। घर तो आपका है मैं वैस ही फोथ क्लास क्वाटर म लटक रहा हू। प्रेमचन्द न अपनी आर आती भत्सना मम्मी की ओर उछाल दी।

—ठीक है। मैं नही लाना चाहती थी, माया फट पडी झूठ क्यो बोलू क्या मुझे भगवान का डर नही है। इस बेचार को डाट रहे ह। यह तो पहले ही दिल्ली के अस्पतालो, बसो के धक्के खा खा कर दुखी है। वहा मे चैन मिला तो यहा दूसरी मुसीबत। आप ही सोचिए मैं क्या करती। इधर आपको देखती या उनके बच्चा को। गीता और सरिता तो दोना ही सुस्त है। गीता की सुस्ती और हाशियारी की मिसाल चाह तो द सकती हू। छ महीन पहले मेरी बहन आई थी बच्चो के साथ। याद है गीता न एक दिन भी उ हें खाने पर नही बुलाया था।

—यू कहो, उसी बात का बदला लेकर, आज कलेजा ठडा किया है। हे भगवान मुझे उठा ले। उनको अपनी शक्ल कसे दिखा पाऊगा। सचमुच दत्ता साहब बिलख पडे।

—पिता जी क्या बच्चा की तरह बात कर रहे है। हम सचाई से मुह नही मोडना चाहिए। नारायण को सख्त बुखार हो गया था। कौन सभा लता उम। मुझे धर्मेश बाबू की तार के साथ ही दफ्तर से लीव कसलेशन् की तार भी मिली थी। उनके मार ही आज बक्शा प नही पहुच सका। कल जाऊगा तो न जाने क्या बन। हमारी सेक्रिफाइस को नजरदाज किए दे रहे ह। पेमचन्द अपनी बात कहकर दूसरे कमरे म चला गया।

दत्ता साहब का सिर दद के मारे फटने लगा। वह एनासिन और कम्पोज लेकर सो गए।

तैंतीस

जब तक पान चला तो वह लाल कमीज वाला लड़का वहीं बेंच पर मजे से बैठा पान चबाता और पिच पिच करता रहा। मगर जैसे ही पान खत्म हुआ मानो उसका नशा भी काफूर हुआ। उसे फिर से पानीपत के रणक्षेत्र की याद आ गई। वह उधर ही भागा जैसे मैदाने जंग का कोई योद्धा।

उसके चाचा जीवन बाबू यह सारा खेल देख रहे थे। पान खाते वक्त वह मुंह को नकारात्मक तरीके से हिलाते रहे थे। अब उनका भी पान समाप्त हो चुका था। जो सिगरेट पी थी, उसका धुआं कब का बादलों में जा मिला था। अब करने को बचा ही क्या था। भतीजे के पीछे भागे। उसे खदेड़ते हुए घर तक ले आए और वहीं कमरे में बंद कर दिया। लड़के को चाचा पर गुस्सा आया तो, पर बहुत मामूली-सा। उसका असली कोप-भाजन बाबूलाल था। उसने कई बार अपनी मां को बाप को डांटते देखा था। उसकी चाची भी हमेशा चाचे को डांटती रहती थी।

वह खिड़की के रास्ते से कूदा चुगली खाने सुभद्रा के पास जा पहुंचा।

—आंटी आंटी देखो, अंकल कितने शैतान हो गए हैं। रेलवे कालोनी में दंगा हो रहा है। वहीं तमाशा देखने चले गए।

सुभद्रा को कुछ ध्यान आया बोली—तू ही तो उन्हें ले गया था रे। मैंने समझा तेरे चाचा बोल रहे हैं। अक्ल को शैतान कहते शर्म नहीं आती।

अपना बानर्जीव में आते देख लड़का घबराया—आप जानें। वह जानें समझाओ। न समझाओ। आप री (की) मर्जी। मैं तो बस कदियो। कहते-कहते अपनी लाल कमीज झुलाता, लड़का खिसक गया।

सुभद्रा ने अनुमान लगाया कितने बजे वे घर से निकले थे। अब वास्तव में बहुत देर हो चुकी है।

रेलवे कालोनी के बारे में उड़ती उड़ती खबर और कहीं से भी उसने सुनी थी। सोचा पति के आने ही बताएगी। उसे गीता तथा बच्चों का ध्यान आने लगा। महीने दो महीने में जरूर उनके यहां ही आती थी अथवा वे लोग ही आ जाते थे। इधर काफी दिनों से उन्हें देखा नहीं था।

वह चिंतित सी दरवाजे मे खडी हो गई। पंद्रह मिनट बाद देखा, दरवाजे पर तांगा आ रुका है। बच्चों को अस्त व्यस्त हालत मे देखा तो दिल धक से रह गया। ममिता को सीने से लगाती हुई बोली - क्या हो गया, कमीज फट गई। राजू के सिर पर हाथ फेरा—प्रमिला नरेश, देखो तो कौन आए है।

—'ममिता दीदी' प्रमिला चिल्लाई। नरेश ने राजू की बाह पकड ली।

—क्या करते हो तुम लोग पहले तागे से सामान उतारो। बिस्तर ठीक करो। नारायण की तबीयत ठीक नही है बाबूलाल ने कहा तो सुभद्रा की दृष्टि नारायण पर पडी जो धीरे धीरे तागे से उतरने का यत्न कर रहा था।

—ओह! क्या हुआ मेरे बेटे को, कहते हुए सुभद्रा ने उसे तागे से उतरने मे सहायता दी। नारायण बुरी तरह से कापने लगा था।

—जरूर इसको मलेरिया हो गया है। नरेश, डिस्पेंसरी वाले डाक्टर साहब को जल्दी से बुला लाओ।

जब तक उन्होने नारायण को ठीक से बिस्तर पर लिटाया तब तक डाक्टर भी आ गया। सचमुच मलेरिया ही था। डाक्टर ने कैमोक्यून तथा काडोपायरिन के दो इजेक्शन लगाए और कहा—एक डेढ घटे मे उठकर बैठ जाएगा। कमर दर्द भी जाता रहेगा। कल सिर्फ कैमोक्यून का ही टीका लगेगा।

पलग को कमरे से बाहर निकाल नारायण का बिस्तर चारपाई पर लगा दिया गया था। सुभद्रा रजाई निकाल लाई थी। नीचे फर्श पर दरी बिछ गई थी। चारपाई के साथ एक छोटा सा मूढा और स्टूल रखा था। मूढे पर बाबूलाल बैठा नारायण के सिर पर हाथ फेर रहा था। बाकी सब दरी पर बैठ गए। नारायण को कुछ चैन मिला तो सब आपस मे हिलमिल कर सारी घटनाए सुनने सुनाने लगे। इस वक्त वे सब मन से स्वस्थ हो गए थे। अत ममिता सारी बाते बता रही थी जैसे रोमाचकारी कहानी हो और किसी दूसरे के साथ घटित हुई हो।

—अरे, इन्हे कोई चाय भी पिलाएगा। बाबूलाल ने कहा।

—मुझे तो गीता बहन की फिक्र सता रही है। आप अस्पताल जाइए। सुभद्रा ने बाबूलाल से कहा।

—वह भी अब आती हो होगी थोडा और देख लू फिर चला जाऊगा। बाबूलाल ने कहा नरेश तुम भुजिया लेकर आओ।

—अच्छा मैं चाय बनाती हू। प्रमिला ने कहा। उसके साथ मनिता भी रसोईघर म चली गई। नारायण पसीने स तरबतर उठकर बैठ गया। रजाई को थोडा पीछे हटाया। सुभद्रा न आग बढकर नारायण पर चादर लपेट दी—एकदम स हवा नही लगनी चाहिए। फिर उसके लिए दूध गम कर लाई। उसे अपन हाथो स दूध पिलाया। बाकी सब चाय पीन लगे। तभी गीता न प्रवेश किया। सुभद्रा उसकी ओर लपकी और उसे गले लगाए रही।

गीता की निगाह नारायण पर पडी तो पूछा—इसे क्या हुआ?

—मलेरिया। टीके लग चुके ह। अब ठीक है। तुम चिन्ता नही करो। सुभद्रा ने गीता को भी अपने निकट नारायण की चारपाई के पास बैठा लिया। सारी व्यवस्था देखकर गीता को सतोष हुआ। वह बाली—उन्होंने तो मुझसे नारायण के बारे म कुछ भी नही कहा।

—कोई बात नहीं भाभी जी बाबूलाल न कहा, जल्दी मे बहुत सी बातें छूट जाती हैं। इन चार छ घटो म इन मासूमो पर क्या कुछ बीती यह सब तो हम धीरे धीरे ही मालूम पडेगा।

—आप सबको हमारे लिए बहुत कष्ट उठाना पडा। गीता न आभार व्यक्त किया।

—क्या लज्जित करती हो भाभीजी। हम किस काबिल हैं। बाबूलाल ने भाव प्रवण स्वर स कहा।

उसी प्रकार सुभद्रा बोली—यह तो आप सब ने हम सम्मान दिया है प्रमिला एक ताजा कप चाय तो बना लाओ। बाद मे हम सब मिलकर खाना बनाएग। जितनी जगह है। जो कुछ भी ह, आपका है।

इस समय गीता को भी उनके बडे चाव स बनवाए हुए खूबसूरत मकान की याद हो आई जो अब भी है पर उनका नहा है। अपनी उस भावना को दबाती हुई गीता न बस इतना ही कहा—आपके मन मे हमारे लिए जो इतनी जगह है यह अवश्य ही हमारे पुराने अच्छे कर्मों का फल है।

चौंतीस

उस रात धर्मेश बाबू के लिए तीन जगह से खाना पहुचा था। केशव डब्बल टिफन तैयार करा लाया था। एक टिफन प्रेमचन्द सरिता के कहने से दे गया था। मध्येप मे समाचार बता गया था। वही समाचार केशव पहले से सुना गया था और अब टिफन के साथ बाबूलाल आ उपस्थित हुआ था। उसने भी वही समाचार बताए पर कुछ इस तरह से जिससे कि धर्मेश बाबू अधिक चिंतित न हो और उनका हौसला बना रहे।

—तुम अब इस टिफन को वापस ले जाओ, धर्मेश बाबू ने कहा मैं पहले ही मना कर चुका हू। अब यहा भी अच्छा खाना मिलने लगा है।

—अब उसे कहा वापस लिए फिरूगा। सब थोडा थोडा लीजिए ना।

मोदी साहब साथ ही बैठे थे। बोले—इतनी चाह से लाए है। अमा यार, यार को करो निराश करते हो। एक और सज्जन को भी बुला लिया। एक चपाती बाबूलाल को भी उनके साथ खानी पडी और खाना झट से खत्म हो गया।

—कल से मैं ही खाना लाया करूगा। बाकी सबको मना करवा दीजिए। मैं सारा दिन खाली रहता हू।

कल दुपहर से हम लोगो पर घर से खाना मगाने पर रोक लगा दी है। बस मिलने आप कभी भी आ सकते है।

—छोडिए ना बाबूलाल जी, इसकी बातो को, यहा तो हमारी सब चलती है और चलेगी। जिस चीज की आवश्यकता होगी आपसे मैं कहूगा, मोदी साहब ने कहा, इस समय आप मेरी बात सुनें एक जरूरी सदेशा है जिसे आप श्रीमती धर्मेश तक पहुचाना न भूलें। कल दुपहर बारह बजे कुछ लोग विशेष रूप से महिलाए रेलवे कालोनीज मे प्रदर्शन करेंगी। यह प्रदर्शन हडताली कर्मचारी और उनके बच्चे अफसरो और सुबार्डिनेट इचार्जों के घरो के सामने करेंगे ये अफसर और इन्चार्ज दमन चक्र चलाकर प्रशासन के निर्देशो से भी बढ चढकर बस अपनी पिछली दुश्मनिया निकालने मे लगे हुए है। उन्हे जेल भिजवाकर उनके क्वाटर और नौकरिया छीनने मे दिन रात लगे हुए है।

—वह तो मैं दूगा, पर इन दिनों लडके की तबीयत ठीक नही है। अनायास बाबूलाल के मुह मे निकल गया।

—किसकी? धर्मेश ने चिन्ताकुल स्वर से पूछा।

—नारायण को मलेरिया हो गया था। अब उठकर बैठ गया है। इजेक्शन लग रहे है। बस थोडी कमजोरी है।

—फिर भी यदि सभव हो तो रतन बिहारी पार्क पहुच जाए। वही से जुलूस शुरू होगा। अच्छी गैदरिंग रहे तभी बात बनती है। नारायण को मेरा प्यार कहना। बहादुर लडका निकलेगा। मादी साहब ने कहा।

पैंतीस

दूसरे दिन बाबूलाल वैद्यजी की हाजिरी भरता हुआ, अपने दफ्तर जा पहुचा।

—कब आ रहे हो बाबूलालजी ड्यूटी पर? देखते देखते हमारी तो आखें ही तरस गई। माथुर ने आदाब बजाते हुए कहा।

—क्या बना आपके केस का बाबू भाई! देवकृष्ण ने भी तुरत प्रश्न कर दिया। इससे पहले कि अन्य प्रश्नों की बौछार हो बाबूलाल हसते हुए बोला—जो मैं स्वय अपने बारे मे नही जानता, वह आप सब जानते है। आप ठहरे महाज्ञानी। यही आशा लेकर तो भाइयो की शरण मे अपना भविष्य जानने आया हू। अशुभ ग्रहो की काट सिखाए।

—क्या इतने भोले बनते हो। जयपुर के बडे मदिर मे भेंट चढा आओ। माथुर ने धीरे से यो कहा जैसे कान मे दीक्षा दे रहा हो।

—वह न मुमकिन पहले हुआ है न अब होगा, बाबूलाल ने दृढता से कहा यह सिद्धात की बात है।

—सिद्धातो की लडाई लडते बहुत-से शेर देखे है। जरा-सी मिर्चें लगते ही बीमार हो जाते है फिर दफ्तर को सरगाह बना लेते है। नरेन्द्र गुप्ता कुटिलता से हस दिया।

—देखिए, मेरा-आपका कोई मजाक नहीं और न ही मुझे आपका कोई मशविरा चाहिए। बाबूलाल ने गम्भीरता से कहा।

—तो फिर यहां से निकल जाइए। आप ड्यूटी पर नहीं हैं। हमारा काम डिस्टर्ब हो रहा है। नरेन्द्र ने जलकर कहा और अपनी बांह ऊपर चढ़ाने लगा।

—ऐसा ही अगर कुछ दिल में है तो फिर देख लें कौन किसको निकालता है। बाबूलाल भी गुस्से में कांपने लगा। नरेन्द्र अपनी सीट से उठने लगा तो कुछ लोग उसे वहीं सीट से चिपकाए रहे। बाबूलाल दो मिनट तक वहीं खड़ा कृष्ण और माथुर से बात करता रहा। फिर डिप्टी साहब के चेम्बर में चला गया। बाबूलाल पहले ही अपील प्रस्तुत कर चुका था। कल एक और बड़ी अपील कुछ अन्य नियमों की दुहाई देते हुए, मास्टी साहब से लिखवा लाया था—जो रिमाइंडर के रूप में थी—को साहब की मेज पर रखते हुए बोला—मेरे केस का क्या बना। कृपया इसे और देख लीजिए।

साहब ने उसे बैठने को कुर्सी दी और जो फाइल देख रहे थे उसे एक ओर सरकाते हुए बोले—आई पर्सनली नो यूअर नवर एप्रिशियेट् यूअर वर्क एफिशेंसी मिसरिटि एवरी थिंग आइ वांट टु हैल्प यू लेकिन रोना यही है कि ऊपर तुम्हारे ही भाई बाबू लोग द और हिंटिंग यू।

—राजधानी को छोड़िए सर, यहीं का एक क्लर्क दूसरे क्लर्क का कहा बख्शता है। एक शिकवा मन आया। दूसरे ने कसा, बाबूलाल उठ खड़ा हुआ सो काइंड आफ यू।

—आ के! फिर मिलना। मिस्टर बाबूलाल, आप स्वयं जयपुर का चक्कर क्यों नहीं लगा आते।

—कुछ लाभ नहीं होगा क्योंकि वह 'काम' तो मुझसे होगा नहीं। यात्रा के खर्च से और दब जाउंगा।

—ठीक है उन्होंने उठकर बाबूलाल की पीठ थपथपाई, जरा ठहरो। हम अभी एक डी० ओ० लिखवाते हैं। स्टेनो को भेज दो। एक कापी आप भी लेते जाना।

आधे घंटे बाद बाबूलाल ने डी० ओ० लैटर की प्रतिलिपि प्राप्त की। साहब को 'थक्यू' कहा और घर की जानिब चल पड़ा।

छत्तीस

सुबह सवा दस बजे नारायण को इजक्शन लगवाने के बाद गीता बाबूलाल के घर स चल पडी। पहने वह डागा बिल्डिंग पहुची। विनाद बस कही बाहर जान ही वाला था। गीता ने कहा—ठीक समय पर आ गई। मुझे कुछ मामान लना ह।

—बहुत अच्छा रहा विनोद न उत्तर दिया, आटी जी, उस गोदाम की चाबी मैंन अपन ही कब्जे म रखी हुई है। पहले आपके लिए चाय बनवाऊ।

—नही बेटे! इस समय बहुत जल्दी म हू। फिर आऊगी। गीता, विनोद के पीछे-पीछे गोदाम म गई। अलमारी म से रुपए निकाले। कुछ और आवश्यक कपडे आदि भी ल लिय। वह चलन लगी तो विनोन न कहा—

—आटी जी कोइ और काम हो तो बता दीजिए।

—जरूर बताऊगी बेटे! तुमन वक्त पर बहुत बडी सहायता की। नारायण तुम्हे तमस्त कह रहा था। उसकी तबीयत ठीक नही चल रही। ठीक हाते ही तुम्हे मिलगा।

—क्या हुआ उस ? तब मैं ही उसे मिल आऊगा।

—मलेरिया हुआ था। अब ठीक है। कमजोरी बाकी है। वक्त मिल तो आ जाना। अच्छा अब मैं चलू।

अब गीता रतन बिहारी पार्क गई। वहा पाचेक मिनट मे जुलूस का उद्देश्य एव कार्यक्रम समझाया। पहल किसी नता ने फिर सब जने योजना बद्ध तरीके स बाजारो कालोनियो का चक्कर लगात हुए प्रदशन करते रहे। पुलिस साथ साथ चल रही थी। नार लग रहे थ रेल का चक्का जाम करेंगे यह सरकार निकम्मी है मुर्दाबाद जिंदाबाद। हर चौराहे पर लघु भाषण चालाक व्यवस्था कस भाइयो भाइयो के बीच, लायल और अननायल बकर की सज्ञा दकर उह जुदा कर रही है। हमशा के लिए फूट डाल रही ह। आइए और वक्त रहते हडताल म शामिल हो जाइए तथा अपनी एकजुटता का सबूत पेश कीजिए जिंदाबाद। बगला और कुछ क्वाटरो क सामन स्याप भी हुए 'हाय हाय हमारे बच्चो के पेट पर लात मारन वाला तुम्हारा सत्यानाश हो। बीच-बीच म कुछ गिरफ्ता

रिया भी हाती न्ही। एक बार जब गीता और कुछ अन्य महिलाएं सड़क पर एक पुतला जला रही थी। पुलिस उन्हें गिरफ्तार करने दौड़ी किन्तु कम्पनी कमांडर के हस्तक्षेप से उन्हें चेतावनी देकर छोड़ दिया गया।

फिर गीता प्रदर्शनकारियों के साथ अपनी कालोनी पहुंची। वहां उसे पोस्टमैन ने एक लिफाफा दिया, जिसे गीता ने अपने पर्स में रख लिया। बाद में सब्जी फल और भुजिया लेकर गीता जासूसर गेट की तरफ बढ़ गई। वह थक गई थी। रास्ते में एक पेड़ के नीचे सांस लेने को रुकी तो उसे लिफाफे की याद हो आई। खोलकर चिट्ठी पढ़ी तो खुशी से उसकी गति तेज हो गई। उसने एक मिठाइ का पकेट भी खरीद लिया।

नारायण सिरहाने की टेक लगाकर बैठा था। मनिता और प्रमिला को अंग्रेजी पढ़ा रहा था।

—लड़कियो, अब इससे पढ़ना छोड़ो और इससे मिठाइ मांगो। गीता ने कमरे में प्रवेश करते ही कहा। बाबूलाल की ओर ध्यान गया तो अपनी पीली साड़ी का पल्ला ठीक करने लगी।

अभी थोड़ी ही देर पहले बाबूलाल ने घर में कदम रखा था। सुभद्रा भी वहीं बैठी थी। थैला में सब्जी वगैरह देखकर सुभद्रा ने आपत्ति की—यह सब क्यों उठा लाइ, इतना सामान।

—घर पर साग सब्जी नहीं लाई जाती। क्या यह मेरा घर नहीं है? गीता ने कहा और थैले उलटने लगी।

—भाभी जी, देखो मैं बैठा हुआ हूं। यह कष्ट आपको करने की कतई जरूरत नहीं।

—भाई साहब, आज तो वैसे ही छूट है। आपका नारायण बैंक में सलैक्ट हो गया है।

यह सुनते ही समूचे घर में शोर मच गया। मनिता ने नारा लगाया—नारायण भैया जिंदाबाद। इस नारे में सबने प्रत्युत्तर दिया—जिंदाबाद। इसमें नारायण का ही स्वर सबसे ऊंचा था। सब हंसने लगे। बाबूलाल ने कहा—मैं अभी जाकर धर्मेश भाई साहब को सूचित करता हूं।

—क्या कहोगे अंकल! नारायण की नौकरी लग गई है। तुमने नौकरी छोड़ दी, नारायण के स्वर में एकदम बहुत गम्भीरता आ गई। अंकल मैंने आम नौकरी पेशा लोगों को बड़ी बारीकी से समझने की कोशिश की है। वह पहले अपनी आत्मा को गिरवी रखकर सर्विस के लिए गिड़गिड़ाता फिरता है। नौकरी लगती है तो फूलकर कुप्पा हो जाता है जैसे तख्ते-ताउस हासिल हो गया। फिर फौरन वह शादी कर लेता है। फिर बाप बनकर कहता है यह जो भी मिल रहा है बहुत कम है। असंतोष उसकी नस-नस में व्याप्त

होने लगता। वह अपने साथियों तक से रिश्वत लेता है। ओछी-से ओछी हरकत करने से बाज नहीं आता। तब आन्दोलन एवं प्रदर्शनों का सहारा लेना शुरू कर देता है। धरना। हड़ताल। काम-काज ठप। चक्का जाम। इसके बाद सरकार की बारी शुरू होती है। नोटिस। तीन रोज बाद नई भर्ती की चेतावनी। इससे निकम्मी होनहार पीढ़ी में नई आशा का संचार होता है। किन्तु मालिक और नौकर के ऐसे झगड़े तो शाश्वत हैं। हल्का फुल्का कोई-न-कोई समझौता दरम्यान चलता है। फिर आठ-दस रुपए महंगाई भत्ते की लम्बी प्रतीक्षा आरम्भ हो जाती है जैसे इसी के बलबूते पर सारी जिंदगी गुजर जाएगी। इसके बाद नम्बर आता है व्यापारी वर्ग का। बाजार भावों का ऐसा नृत्य होता है जिसमें कदम जमीन पर वापस नहीं आते। ऊपर और ऊपर

बाबूलाल ने घबराकर उसे टोका—नारायण, नारायण तुझे हो क्या गया

नारायण ने ज़ोर से ठहाका लगाया—आप सब ने यही सोचा ना कि नारायण को बीमारी का कोई दौरा पड़ गया। दरअसल ऐसा कुछ नहीं। यह जो कुछ मैंने कहा यह मेरी भाषण प्रतियोगिता के कुछ अंश हैं जो अभी तक मुझे रटे पड़े हैं। छः महीने पहले इसी पर कॉलेज से मुझे प्रथम पुरस्कार मिला था क्यों मनिता ?

—हां हां, राजू मनिता से पहले बोल पड़ा एक कांसे का दंगल मिला था और सर्टिफिकेट भी।

—जय हो महाराज प्रमिला बोली, नए बाबू साहब ने तो हम सबको डराकर ही रख दिया।

इसके बाद सब बहुत देर तक हंसते रहे।

—बहुत हंस चुके प्रमिला ने कहा अब मिठाई का दौर शुरू होना चाहिए मिठाई का पैकेट नारायण की ओर बढ़ाती हुई बोली, इसे अपने हाथ से खोलिए।

नारायण ने पैकेट खोला और प्रमिला से कहा—तुम चाय बना लाओ। तब तक हम लोग मिठाई खाते हैं।

इस पर फिर ज़ोर का ठहाका लगा।

सैंतीस

सरकार जल्दी स जल्दी हड़ताल तोड़न के चक्कर मे थी। कुछ खास किस्म के हडताली नौजवान, दब्बू निष्ठावान कर्मचारियो को कम स-कम एक टाग तोड दन के चक्कर मे थे।

पुलिस का ऊपर स कुछ ऐस आदेश प्राप्त थ कि वह एसे नौजवान हडतालियो क सिर फाड न, लिहजा वह इसी चक्कर म मुब्तला थी।

सरकार न जहा एक ओर तगाडा पुलिस दल फेक रखा था वही दूसरी ओर दो चीज़ भी बराबर फेंकती रहती थी। एक चीज को वह पहले 'चेतावनी' कहती थी जिस धीर धीरे बाद म वह 'न्नी चेतावनी' कहकर पुकारन लगी थी। दूसरी फेंकी जाने वाली चीज, आभास' थी जिसकी सही व्याख्या की जाए तो हम पाएग उसका कम-स कम हमार धमशास्त्रो मे निषध है। इस ही लोभ' कहा जाता है। लोभ' को तीन विभागो मे दशाया गया था।

(1) अतिरिक्त वतनवद्धि तरक्की।

(2) वफादार (लायल) कमचारियो क बच्चा का नौकरी।

(3) एकमुश्त (लम्पसम) पारितोषिक।

आदमी आखिर आदमी है। आम आदमी। उस भूख लगती है। उसके बाल बच्च दखी हा परशान हा तो वह भा माथा पकडकर बैठ जाता है। कोई दूसरे दिन तो कोई बीसव दिन। यह उसकी सीमाए है।

सरकार आखिर सरकार है' यह तथ्य भी इसी सीमा के अतगत आम आदमी की समझ म आने लगा था। आम आदमी के गुट म से जब तीसर दिन म ही आम आदमी अपनी व्यक्तिगत राह बनाता हुआ काम पर जाने ल गा था तब आम आदमी पहले तो उस पर बहुत बौखलाया था। फिर स्वय भी उसी के पीछे पीछे थाडा पिटन का रिस्क लकर पुलिस सरक्षण म चल दिया था। इसलिए बीसवें रोज़ यूनियनो तथा सरकार के बीच समझौता हो गया। कुछ खास लागा को छोड़कर सबका ड्यूटी पर ले लिया गया था।

इससे देश के एक बहुत छाटे वग समूह—जा रिक्त स्थाना पर अस्थाई रूप स कायरत था—तथा खुशफहमिया पाल रहा था—का दिल टूट गया। फिर भी उसने टूटे हुए दिल को मज़बती के धाग मे टाका कि यह अवधि' 'भविष्य निर्माण की भूमिका क रूप म काम आएगी।

इस स्ट्राइक की समाप्ति पर दवद्र तथा उपद्र को भी जबदस्त धक्का पहुचा क्योंकि वे प्रेमचद की टाग तोडन मे चूक गए थे। प्रेमचद बहुत

दिनो तक तो वर्कशॉप म ही बन्द रहा, वही खाया पिया और ड्यूटी दी। घर बहुत कम आया। आया तो पुलिसवन म। देवेन्द्र, उपेन्द्र टापत रह गए। इस तरह वे यूनियन वालो के सामने अपना नतिक उत्थान प्रदर्शित नही कर पाए।

बाद म प्रेमचन्द न उनके विरुद्ध रिपोर्ट दज करा दी, इसलिए उन्होंने अपना नैतिक उत्थान शात बनकर दर्शाना आरम्भ किया। जब जब प्रेमचद उधर स निकलता तो व दूर स उस सलाम करत और निकट आते ही खखारते हुए क्वाटर म घुस जात।

एक दिन प्रेमचन्द न फिर पसनल आफिसर से भेंट की। भाव प्रवण स्वर निकालकर कहा—साहब, अभी तक मुझे मेरा क्वाटर नही मिला। मैं उसी फोथ क्लास क्वाटर मे सघष कर रहा हू। पत्नी और बच्चो के ताने सह रहा हू। उन गुडो ने मेरी अनुपस्थिति म मेरे पिताजी को पीटा। उनकी टाग तोड दी। मेरे प्यारे रिश्तदार न उनको सम्भाला। अस्पताल मे उनकी देख रख की। इस जुम मे रलवे न उन्हे जेल भेजा। उनको क्वाटर खाली करा लिया। उनको दर दर का मोहताज बना दिया। जबकि कानून को अपने हाथ म लेने वाले इन गुडो से प्रशासन अभी तक क्वाटर खाली नहीं करा सका। साहब मेरा क्वाटर दिलवाइए।

साहब न फाइल से सिर उठाते गिराते हुए नपे-तुले शब्दो म उत्तर दिया—देवेन्द्र को यह गलतफहमी है कि दसवी पास करत ही उसे क्लास थ्री म ल लिया जाएगा। हम आपकी फेवर आडर करेंगे। इसके बावजूद भी उम्मीद नही कि यह लोग खाली कर तब इविक्शन आडर होंगे ही। आप चिन्ता क्या करत है। यह पालिसी मेटर है। धीरे धीरे होगा। आदमी को हमेशा आशावान रहना चाहिए। किंचित मुस्कराए भी। शायद इतने बडे प्रेमचन्द की नादान हरकतो पर साहब चुप हो गये। दूसरी फाइल उठा ली। प्रेमचन्द बाहर आ गया।

सामने जय जागरण प्रसाद सिंह आ खडा हुआ था। बडी-बडी मूछो को आसमान की तरफ उठाता हुआ बोला—बडे थके हुए लग रहे है प्रेमचन्द बाबू चलिए चाय पिलाऊ आपको।

कन्टीन म घुसने से पहले वह किसी से बातचीत करने मे तल्लीन हो गया। जब प्रेमचन्द ने चाय क्वाडी के कूपन ले लिये तो वह झट से अन्दर आ गया—आपने यह कष्ट क्यो किया। मैं तो आ ही रहा था। खैर अब तो आपको मिठाई खिलानी चाहिए। बस अब तो दो-चार दिन में आपको बडा क्वाटर मिलने ही वाला है। उन दोनो छोकरो मे अब वह दम नही रहा। मैंने उन्हे प्यार से समझाया है। मान गए हैं। कही से पसा उधार

लेने का प्रयत्न कर रहे है ताकि मकान शिफ्ट कर सकें। आप बेशक अपनी रिपोर्ट वापस ले लें। नशे में जो करतूत कर बैठे उसके लिए शर्मिंदा हैं। आपको नमस्ते करते हुए भी उन्हें लज्जा आती है। बेचारों का जरा सा मुह निकल आया है। आपने गौर तो किया ही होगा।

चाय कचौड़ी आयी तो एकतरफा बातचीत स्थगित कर दी गई। एकनिष्ठ होकर खाना पीना चला। खत्म हुआ। बैठक बर्खास्त हो गयी।

जाते जाते एक बार फिर जयजागरण प्रसाद सिंह दोहरा गया—प्रेमचन्द बाबू आप चिंता ही न करें। पैसे का इंतजाम होने ही मैं उन्हें प्यार से मना कर ही छोड़ूंगा।

शुरू से आखिर तक प्रेमचन्द कसमसाता सा रह गया। बहुत कुछ कहना चाहता था। उसके पास बार-बार करारे करारे जवाब आ रहे थे जिन्हें वह सायास दबाता रहा था। 'पट्ठे काहे टुबना रहे हैं। ऐंठ कर मर ही जाएं तो मजा आ जाए। मगर ऐसों पर भी तरस आता है तो तुम भी तबाह हो जाओ। मैं क्यों गौर करूं उनकी शक्ल पर। तुम्हीं करो जिसे प्यार आता है। सुन रखा है, घंटों उनकी लुगाई से बात करते हो। उसे ही मनाने के चक्कर में हो। उल्लू के ।'

मगर प्रेमचन्द का उसूल था कि करारे करारे जवाब सिर्फ जमा करते जाओ न अफसर पर फेंको, न यूनियन वालों पर। भले ही वह भूतपूर्व या तथाकथित यूनियन कार्यकर्ता हो। इसलिए सारे के सारे करारे-करारे जवाब चबा चबाकर हजम करता हुआ फोर्थक्लास क्वार्टर की तरफ खिसक गया।

अडतीस

किसान जब खेत में बीज डालता है तो बहुत ही सोच समझकर। मौसम बीज का दर्जा उसके साथ खाद की मात्रा। भविष्य में पानी की व्यवस्था आदि आदि कई बातें हैं जिन पर वह सोचता है। फसल कटने और गोदाम में भरने तक उसका यह चिन्तन निरन्तर चलता रहता है। यह दीगर बात है कि साधारण भारतीय किसान के चिन्तन को आप चिन्ता कहने से ही गुरेज कर जाएं।

ठीक इसी भांति मुरारी भारतीय बाबू तबका भी मौसम का पूर्वानुमान लगाकर फाइलों में बीज डालता है और निश्चित हो जाता है। खाद का कसैला स्वाद दूसरा के लिए छोड़ देता है। फल के लिए उतावली नहीं मचाता। वह तो मात्र कर्म पर विश्वास रखता है। फल देने वाले उचित समय पर सर्वशक्तिमान की प्रेरणा पा पाकर आते रहते हैं। यह उसका अटल विश्वास है।

किसान और बाबू की मानसिकता में एक विशेष अन्तर यह भी है कि किसान सुविधावादी दीखता है। अधिक जोखिम उठाने की क्षमता का उसमें नितांत अभाव परिलक्षित होता है। उसे जल्दी तो रहती ही है वह चाहता है—फसल एकदम सीधी साफ सुथरी तरोताजा ही उगे।

जबकि बाबू शुरू से ही फाइल में बीज डालते समय इसी बात को लक्ष्य बनाकर चलता है कि पौधे एकदम टेढ़े मेढ़े, थोड़े थोड़े मुरझाए कच्चे या बासी से उगें। ताकि बाद में वही उस पर श्रम करे। उन्हें काट छांट कर सुंदर रूप से पेश कर सके। अफसर उसके श्रम से प्रभावित हो और उपभावना उसके चिंतन की दाद दे। खन खन का साज बज उठे।

कभी कभी भरी पूरी खड़ी फसल पर मकड़ी हमला बोल देती है। बेचारा किसान खड़ा खड़ा तमाशा देखता रहता है और टापता रह जाता है।

इसी तरह कभी कभी एकाध मकड़ी बाबू की फाइल पर भी आ बैठती है। ऐसे मौके पर बाबू का प्रयास यही होता है कि फाइल को मकड़ी की कुदृष्टि से बचाने के लिए उसे अन्डरग्राउंड कर दे। लेकिन बाजोकात मकड़ी खासे बड़े आकार की होती है और अचानक झपट्टा मार देती है।

नारायण जयपुर आया तो था अपनी नियुक्ति के सिलसिले में मगर यहां आकर मकड़ी बन गया। लेकिन इसके बावजूद उसने बाबूलाल के एग्जिक्यूटिव आफिसर को फोन पर यह थोड़ा ही कहा कि मैं मकड़ी हूं। उसने कहा—मैं मंत्री बोल रहा हूं। क्या वजह है कि बाबूलाल की पोस्ट को बीकानेर में ही अपग्रेड नहीं किया जा सकता या फिर जूनियर आदमी को वहां से हटाया नहीं जा सकता।

—हो जाएगा सर क्या नहीं। अभी लीजिए।

डी० ओ० लेटर तो हाल ही में उनके पास आया था। जल्दी से केस कनैक्ट किया। बाबू से फाइल मगाई। सीधे आर्डर ठोक दिए कि बाबूलाल को वहीं अपग्रेडेशन दे दी जाय।

इसी तरह छः सात और केस बाबू के पास थे। इन सभी के दाम तो बाबू के पास पहुंच चुके थे। वह चाहता था कि बकाया एक केस के दाम

आन पर पूरी की पूरी लिस्ट आउट कर देगा। बाकी सब कुछ तयार था ही।

आज पता नही क्या हुआ। बाबू मकडी से बचाव नही कर पाया। फिर अपने आप से कहा चलो भगवान की यही मर्जी थी। एक घर तो डायन भी छोड देती है। हम तो चिन्तनशील प्राणी है।

उनतालिस

जिन दिनो लोग छोटे छोटे ग्रुप्स मे जेल से माफीनामा भर कर वापस ड्यूटी पर जा रहे थे। उन्ही दिनो जेलर महोदय धर्मेश बाबू और मोदी साहब के पास स्वय आते रहे थे। मोदी साहब को वह बहुत पहले से जानते थे। उन्होने कहा कि अब हडताल मे कोई दम नही रहा, इसलिए वे लोग भी बनी-बनाई इबारत पर दस्तखत कर दे और दफ्तर मे जाकर मौज-मस्ती करे।

परन्तु दोनो ही इस शर्त पर छूटने से बार बार इन्कार करते रहे। उनका कहना था—किस बात का अफसोस और किस बात की माफी। कौन सा जुर्म किया है। हडताल करना कोई अपराध नहीं होता। इस बात को सरकार भी मानती है। यह बात दीगर है कि हर होने वाली हडताल को गैर कानूनी करार दे देती है। फिर हमारा तो केस ही बिलकुल अलग तरह का है। हमने इस हडताल मे भाग लेना भी था या नही इस बात को न तो प्रशासन ही सिद्ध कर सकता है और न ही कोई फैडरेशन।

यही सब बातें चलती रही और एक दिन अचानक हडताल समाप्ति की घोषणा हो गई।

जेल से बाहर आते ही इन लोगो का स्वागत फूल मालाए पहनाकर, किया गया। हार पहनाने वालो मे सबसे आगे उपेन्द्र था। जय जागरण का कर्कश स्वर बार-बार सबको मुस्कराने के लिए विवश कर देता।

धर्मेश बाबू को यह सब कोरी औपचारिकता लगी। इन सब क्रियाओ मे उन्हे कही भी वास्तविक उत्साह का आभास नही मिल रहा था। उन्होने अपने से कहा 'तूने कहा राष्ट्र का नाम ऊचा किया है। तू कौन-सा असली शहीद है। तुझे तो बस पहले सरकार ने फिर अब इन लोगो ने मिलकर

'शहीद' का प्रमाण पत्र दे दिया है।'

इसके तीन दिन बाद धर्मेश बाबू को ड्यूटी पर ले लिया गया। जैसे ही वह अपने दफ्तर में घुसे, एक दफा तो जैसे वहां मुर्दनी छा गई मानो कोई पुराना बदनाम मुजरिम उनके बीच घुस आया हो। प्रायः सबने उन्हें अनदेखा कर अपने कान साउंडर के साथ चिपका लिये। परन्तु उसी समय नरपत कुछ तार सटर-टेबल पर रखने को उठा था। वह छोटी दाढ़ी रखता था तथा नुकीली मूछें। एकदम से धर्मेश बाबू के सामने पट गया तो सहसा जोश से भर उठा—अरे बड़े भाइयो, जरा इधर देखिए हमारे शिफ्ट इंचाज साहब आ गए। धर्मेश बाबू जिन्दाबाद' में किसी ने साथ नहीं दिया तो उसे बड़ा अटपटा सा लगा—कैसे लोग हैं। सूखे सड़े। जिंदगी से एकदम खारिज। वह फौरन धर्मेश बाबू के पांव छूने लगा—भाई साहब, आना तो मैं भी चाहता था लेकिन तीन सात से कम सर्विस वालों को सीधे बर्खास्तगी का नोटिस मिलने की बात थी। क्या करता इतनी मुश्किल से कहीं कमिशन को राजी करके नौकरी हासिल की थी

—अबे लम्बी मत हांक। फलों चाहिए तो हम धर्मेश बाबू से कह कर दिलवा देंगे। अगर वास्तव में कुछ करना ही चाहते हो तो जाकर चाय का जोड़ ठीक आओ। नया बाबू ने जो थोड़े कुबड़ थे धर्मेश बाबू की ओर देखा—क्यों जी मिल गई नौकरी? या मैं अपने भाई साहब से कहूं। नया बाबू का भाई हैड क्लर्क था। वह बात-बात में भाई साहब का जिक्र ले आते थे। इसलिए सब हंसने लगे।

—इसमें हंसने की भला क्या बात है। हम तो बिलकुल ही उम्मीद नहीं थी कि इन लोगों को नौकरी मिल जाएगी। लेकिन भाई साहब में जान क्या है जैसा चाहे वैसा नोट पुटअप करके अफसर के पास ले जाएं। फिर बिलकुल वैसा ही हो जैसा कि भाई साहब चाहें। लाख कोशिश करे अफसर आखिरकार उसी को डिटटो करना पड़े उसे, जैसा भाई साहब चाहें।

—सुन रहे हो धर्मेश बाबू यदि अपना कल्याण चाहते हो तो नैया बाबू को चाय पिलाओ। लाडली मोहन ने धर्मेश बाबू का हाथ अपने हाथ में ले लिया। फिर से 'ह हें ही खी' का समवेत स्वर समूचे दफ्तर में प्रबल हो उठा।

—धर्मेश बाबू आप के साथ हुई तो ज्यादती है बजरंग ने सहानुभूति दिखानी चाही तो बरकतअली ने टोक दिया—जाकर अपना सर्किट देख। ज्यादा टें टें नहीं कर, अंदर तेरा खसम सब सुन रहा है। उसने अन्दरूनी कमरे में बैठे टी० एम० की ओर इंगित किया।

टी० एम० साहब तो यह सारा खेल प्रथम क्षण से ही देख रहे थे। केवल आंखें, वर्क शीट ड्राफ्ट पर गड़ाए हुए थे। अब वह धीरे धीरे बाहर आ गए—आह धर्मेश जी आप ! सुनाइए बिलकुल ठीक तो है। उनके कहने के ढंग से कोई नहीं समझ सकता था कि वह मजाक कर रहे हैं या उनके हृदय में सहानुभूति लहलहा उठी है, हम भी चाहते यही थे कि आपके नक्शे कदम पर चलते हुए जेल भर दें पर आप जैसे सीनियर आदमी का क्या समझाऊं, दो साल रिटायरमेंट में बचे हैं। हम तो बस ही जेल द्वार से धक्का देकर रेल जगत से भी बाहर निकाल फेंकते। अभी तो लड़कियां ब्याहनी है। आइए इधर आपके रीइनस्टेट के आर्डर मेरे पास आ चुके हैं। खैर वह तो सब होता रहेगा। यह बताइए कैसी कटी वहां ?

दयानाथ बीच में बोल उठा—बुरी क्यों कटती ? हराम का खाते रहे। डण्ड बैठक पेलते रहे। देखिए न गाल कैसे टमाटर हो रहे हैं।

चुपचाप एक कोने में धीरे धीरे काम करने वाले टीकम बाबू ने अब जबान खोली—आप तो कुछ बोलते नहीं धर्मेश बाबू और यह लोग आप का सिर चाटे जा रहे हैं। उन्हें चाय पिलाकर शांत कीजिए ना। वरना मुझे काम नहीं करने देंगे।

—इनमें चाय मांगते शर्म नहीं आती, कौन सा टी० ए० बना कर लौटे हैं ? नरपत ने कहा।

—तो तुम्हीं मंगा लो। शार्टेज में ओवर टाइम कमाया है। दूसरा कल को इन्हीं में छुट्टी लेनी पड़ेगी—टी० एम० छुट्टी जा रहे हैं।

—मेरा क्या है। एक मिनट में मंगा लूं परन्तु टी० एम० साहब के होते हुए इन्हीं की इज्जत का ख्याल है।

टी० एम० साहब मुस्कराए। झट में एक नोट जेब से निकाला। इधर-उधर देखा—चपरासी तो है नहीं

नोट को कहीं वापस जेब में न ले जाएं ऐसा सोचकर फौजसिंह फुदका—ऐसे कामों के लिए हमी चपरासी हैं कहते हुए झपट्टा मारा और नोट ले उड़ा। वह हाल ही में स्पोर्ट्स कोटा' के तहत किसी एम० एल० ए० की महरबानी से नियुक्त हुआ था।

इस दृश्य को देखकर धर्मेश बाबू भी सबके साथ हंसने लगे। थोड़ी ही देर में फौज सिंह एक सिगरेट फूंकता हुआ वापस आ गया। उसे किसी ने घेरा तो फौरन कह दिया—यह तो हमारी कमिशन का है। स्टाल वाला छोकरा चाय लेकर आ रहा है।

प्राय सभी ने कुछ देर के लिए जैसे स्ट्राइक कर दी। धर्मेश बाबू को घेर कर बैठ गए। उनकी हरेक बात पर एक-दूसरे से बढ़ चढ़ कर आश्चर्य

प्रगट करते हुए अजीब अजीब तरीके स मुह फैलाते, सिकोडते रहे और सरकार का कामत चले गए। उस सरकार को जिस कभी किसी न देख नही था।

चाय आई तो आधी आधी प्याली मे डूब गए।

चालीस

जिस दिन स धर्मेश बाबू न ड्यूटी जायन की, उसके दूसरे दिन शाम का उनके स्वागत म उसी क्वाटर क कपाट खोल दिए गए। उसी चपरासी ने जा सिपाहिया क साथ अस्पताल पहुचा था, आगे बढकर क्वाटर की सफाई क काम म पूरे श्रम मे जुट गया ताकि वहा जो भी पुराने धब्बे आदि हा उन्ह धो पाछकर पूरी तरह स साफ कर द।

इधर धर्मेश बाबू तेजी स जासूसर गेट की ओर चल दिए। रास्त म उन्हें फकीरा महासाधु मिल गए। लम्बे बाला को पीछे झटका दत हुए बाले—जय हो धर्मेश बाबू की। आप लागा की जीत हुई। मदिर मे हम हर रोज यही प्राथना किया करते थ। सत्य की अनादिकाल स विजय होती आई है। आपका पक्ष बलवान था। मदिर म घटिया बजाता या प्रशाद चढाता तो कान सभी मुहल्ल वाला की ओर लग रहत। सभी बाबूलाल जी की महानता क गुणा का बखान करत। आपका परिवार भी महान है। मच बालिश्त भर जगह म किस साहस से गुजारा करता रहा। आपका नारायण ता बेचारा बुखार स उठने के बाद सारा दिन धूप और आधिया मे बाहर ही बाहर यार-रास्ता म डोलता रहता। शाम का दरवाजे के बाहर खटिया डालकर बाबूलाल की लडकी को पढाता रहता। लडकी भी उस की हर सुख सुविधा का ध्यान रखती। मगर साहब लागा की जुबान क्या है। बकत रहत हैं। आपका मन साफ है तो आप क्या परवाह करें एस नीचा की। मेरी घरवाली का सब लोगा म उठना-बैठना है। बाबूलाल के लाख मना करने पर भी सब्जी भाजी का सारा खच आपकी घरवाली करती रही। दुनिया म अच्छाइ खतम नही हुई है बाबू साहब।

धर्मेश बाबू का जल्दी थी वह महासाधु क इतने लम्बे वक्तव्य स ऊब गए थे। वह उस ठीक स पहचानते नही थ। अन्दाजा लगाया कि वह पडोस

के मंदिर के पुजारी होंगे।

—फिर बैठकर बात करेंगे महाराज, हाथ जोडते हुए धर्मेश बाबू आगे बढ गए तो पीछे से वही स्वर उभरा—काली जबान वालों के कीडे पडें।

धर्मेश बाबू ने बाबूलाल के घर पहुंचने के तुरंत बाद घोषणा कर दी—अब हम लोग चलेंगे।

—चले जाना यार! बाबूलाल ने कहा मान लिया यहां का खाना जेल से अच्छा न होगा फिर भी घर का तो है।

धर्मेश बाबू हंसने लगे—ऐसे बहुत देर हो जाएगी।

—देर कैसी। सबने अपनी अपनी ड्यूटियां बांट रखी हैं। तुम बस देखते जाओ।

सचमुच सबने मिल जुलकर बहुत जल्दी खाना तैयार कर लिया।

खाने के बाद जब वे लोग चलने लगे तो सुभद्रा, नरेश और प्रमिला की आखें गीली हो आयीं। प्रमिला मनिता का हाथ जैसे छोड ही नहीं रही थी। आवाज *भर्रा आयी थी दोनों की।*

बुद्धू लडकियो! अब छोडो भी। मनिता कौन से दूसरे शहर जा रही है। सुभद्रा ने दोनों सखियों के सिर पर हाथ फेरते हुए तटस्थ स्वर निकालने का यत्न किया।

—इसे आज हमारे यहां भेज दीजिए न आंटी! मनिता का स्वर ऐसे निकला जैसे अभी रो देगी।

इसलिए सुभद्रा मना नहीं कर सकी—जैसे तुम लोगों की मर्जी। क्यों प्रमिला जाओगी? इस पर नारायण जोर से हंस पडा—*यही तो चाहती* है वरना यह सारा नाटक ही क्या रचती।

—नहीं मुझे नहीं जाना। प्रमिला ने थोडा चपत हुए कहा।

—यह तो यों ही चिढा रहा है। इसकी बातों में मत आ। पुरानी आदत जो ठहरी। मनिता ने प्रमिला को अपनी ओर खींचा।

—बताऊं तुझे अपनी आदत नारायण ने मनिता की बांह पर जोर से चकोटी काटी तो वह उई उई करती हुई वहां से गजों दूर जा छिटकी। फिर प्रमिला को घसीटकर कमरे में चली गई और उसके कपडे निकालने लगी। धर्मेश और बाबूलाल बच्चों के क्रिया-कलापों पर हंसते रहे।

सुभद्रा ने नारायण के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा—तेरी शरारतें मजाक और भाषण हम हर समय याद आते रहेंगे। तुम इधर आते रहना।

—जरूर आंटी यदि आप भी आती रहेंगी। नारायण ने उत्तर दिया।

चल निकली थी, तो बिना किसी उलझाव के सारे प्रश्नो पर यह स्पष्ट मत देती चली गई थी। सबको चकित कर दिया। बडी प्यारी बच्ची है।

—कहा बडे अक्ल प्रमिला सकोच से आगे कुछ न कह पायी।

—तुम लोग शिकजवी बनाने का प्रबध कर सकती हो ? गीता ने मनिता और प्रमिता की ओर देखते हुए कहा—कुछ नीबू थैले म है।

—अगर नारायण भैया चीनी और बर्फ का प्रबध कर द। राजू को तो जाते डर लगगा। मनिता ने कहा।

सहसा कुछ क्षणो के लिए गीता बुरी तरह से विचलित हो उठी थी। घर म जग और गिलास भी कहा ह। उसकी आखो के सामने बहुत पुराना दृश्य साकार हो उठा। जब वह बहुत छोटी थी। पाकिस्तान स उजडकर इसी तरह एक पूरे के पूरे खाली घर को उन्होने घेरा था, जहा थोडी सी वजनी चीज फर्श पर रखते ही पूरे घर म गज पैदा हो उठती थी। फिर से नये सिरे से जीने की शुरुआत का पहला दिन था वह। और आज उसके मुह से आह निकल गई किन्तु शीघ्र ही उसने अपने आपको सम्भाल लिया—पगली सब कुछ तो ठीक है, कल को सारा सामान आ जाएगा।

—चाचाजी, क्या चाय चलगी। मैं अभी पडोस के किसी बच्चे स कुजी की दुकान से चाय मगवाती हू।

—गीता बेटी, दत्ता साहब उसकी मन स्थिति को भाप गए, क्यो बेवकूफ बन रही है। मैं कुछ भी खाने पीने नही आया हू। तुमसे बहुत जरूरी बात करनी है। मेरे साथ जरा उधर चलो। आगन के एक कोने मे पहुचकर उन्होने गीता को सौ सौ के पाच नोट पकडा दिए—इन्ह रखो। काम आएगे।

—इसकी कतई जरूरत नही है चाचा जी।

—जरूरत है। मैं जानता हू। इस माह की धर्मेश को प नही मिली, अगले का कोई भरोसा नही।

—वे भी फील करेगे। गीता ने धर्मेश बाबू को इशारे से बुला लिया।

—यह मना करके देखे तो, है इसकी हिम्मत मेरे सामने होने की ? दत्ता साहब ने भावुकता से कहा, बडा हो गया तो क्या हुआ, मेरे लिए तो वही शेखूपुर वाला धर्मेश है।

—धर्मेश की आखें सजल हो आइ। बोला—सच अभी इसकी आवश्यकता नही है। हुई तो खुद आकर आपसे माग लूगा।

—चलो यही सही। अब तुम इन्हें गीता के पास रखे रहन दो। जब मुझे जरूरत होगी, मैं तुम लोगो से माग लूगा। अब यह बहस बन्द। अच्छा बताओ आप लोगो की मामा का क्या हुआ ? दत्ता साहब ने दूसरी

बात छेड दी।

—दस बारह मांगा म से दो ढाइ ता मान ली जाती है पर तु आज तक इमसे सफद पोश तबके की जिंदगी तो सुधरी नही। असन्तोष की आग सवत्र विस्तार ही पकडती जा रही है। हमारी यूनियन लवर एक्ट वेजिज एक्ट कुछ नियम भी है मुझे ता उस वग का बार बार ध्यान आता है जिसे हर रोज बाजार जात समय खुल मदाना म सर्दी, गर्मी, आंधी तूफाना स जूझत और सिपाहियो क डड खात देखता हू। इस वग की किसी भी स्तर पर काई भी अभिव्यक्ति नही। उनकी आर कौन कब देखेगा या उनकी बात सुनने की कोशिश करेगा ? धर्मेश दत्ता साहब की ओर देखन लगा।

—इसका जवाब जमीन की कौन भी पत म दबा पडा है कोई नही कह सकता धर्मेश बाबू, दत्ता साहब न उसास भरत हुए कहा, मैं भी बिलकुल तरी तरह ही सोचता रह जाता हू और पल्ले कुछ नही पडता। क्यो इसी धरती पर कोई बिना कुछ किए मालामाल है और किसी का सवेरे म रात तक अपन को खपा दन पर भी कुछ हासिल नही।

तागे वाले न आवाज दी—बहुत देर हो जाएगी बाबू साहब, फिर घोडी का पुच्च पुच्च करन लगा।

कल या परसा फिर आऊगा। लाठी सम्भालत हुए दत्ता साहब ताग म जा बठे। सब बच्चे उनक करीब आ गए ता उन्हान उनके सिर पर हाथ फेरा। तागा चल दिया। सब उन्हे बहुत देर तक जाते हुए देखते रहे।

उक्त घटनाओ का डेढ साल गुजरत न गुजरते फिर से बाबूलाल लाटरी की टिकट खरीदन लगा था। अखबारा तथा परिपत्रो से नम्बर मिलाता रहता था।

धर्मेश बाबू से उसकी मित्रता पहल म कही घनिष्ठ हो गई थी। एक दिन वह उसके घर हाता तो दूसर दिन वह।

एक शाम बाबूलाल के घर ताश का खेल जम रहा था। खेलते खेलते अचानक बाबूलाल का जान क्या सूझी कि पत्त बीच म छोडकर उठ खडा हुआ। थोडी देर बाद धर्मेश बाबू ने बाबूलाल को लौटन न देखकर गौर किया कि वह अलमारी के पास खडा एक अखबार के पष्ठ उलटन म व्यस्त है। धर्मेश के पूछने पर कि भाई क्या हो गया।

बाबूलाल न व्यग्रता से कहा— 'बस दो मिनट, अभी अभी ध्यान आया कि आखिरी मर्फा तो ठीक से दखने से रह गया। इस म लाटरी के नम्बर लिखे हुए हैं।

इस पर धर्मेश बाबू बतहाशा कहकह लगाने लगे—मिस्टर बाबूलाल

एवरी डे इज नॉट सडे। लाटरी बार बार नही निकलती भाई।

सुभद्रा झट से बोल पडी—भाई साहब बिलकुल यही बात तो मैं हर रोज इनसे कहा करती हू। यह पूरा जुए जैसा चस्का है। यह तो दिन ब दिन बढते जा रहे हैं। अब तो हर महीने अठाइस अठाइस रुपए की टिकटे खरीद लाते हैं।

यह सब सुनकर बाबूलाल आहत सा हो उठा। ज़रा इधर उधर देखा नरेश और प्रमिला कही बाहर गए हुए थ। फिर धीरे से बोला—

—भाई साहब, आप समझते नही है। प्रमिला का पूरा कद निकल आया है। मैं अभी स फिक्र न करु तो कल को यही सुभद्रा पहले की तरह स मेरी जान चाट जाएगी।

—मगर यह कोई समाधान तो नही भैया। धर्मेश बाबू न सहानुभूति स कहा।

—तो साधनहीन आदमी कहा से लाएगा समाधान? बाबूलाल के स्वर म किंचित क्षोभ उभर आया था।

—मैं तुम्हे एक समाधान बता सकता हू। तुम शायद उस स्वीकार कर भी लो, किन्तु हो सकता है भाभी जी के गले न उतरे। कहो तो कह द। बुरा नही मानना।

—आपकी बात का भला हम लोग बुरा मानेंग। बताइए। सुभद्रा अधिक उत्सुक हो उठी।

—आपको नारायण ठीक लगता है?

—नारायण तो बहुत ही प्यारा बच्चा है। पर इस रुप मे? बाबूलाल हकला-सा गया।

—क्या इस रुप में बुरा ह?

—बुरा मत कहो धर्मेश बाबू। बात वही ठहरी। आप पजाबी है। हम हमार रिश्तदारो को यह रिश्ता कहा मजूर होगा।

—उन्हें क्या मतलब? एकाएक सुभद्रा कुछ उत्तेजित हो उठी, मुझे तो बस इतना याद दिला दो कि नीलिमा के विवाह म कौन कौन स रिश्त दार न कितनी कितनी सहायता की थी। अपन आपको बचकर हमने सारे कारज किए फिर भी व लोग हर मामल म हमारी आलोचना करते रह।

सुभद्रा का वक्तव्य सुन दोनो मित्र अवाक रह गये।

उन्ह चुप देखकर, सुभद्रा फिर बोली—प्रश्न एक ही पैदा होता है प्रमिला और नारायण की मर्जी का।

—इन दोनो की बात आप मुझ पर छोड दीजिए धर्मेश बाबू ने कहा। नारायण प्रमिला को पढाता रहा है। दोनो एक दूसर को जान गए हैं।

हम सब लोग भी एक-दूसरे को अच्छी तरह गहरे तक पहचान चुके हैं। आप लोग मान लीजिए। हमारा घर आपसे छिपा नहीं है।

—ठीक है आप भी भाभी जी से बात कर लें। हम भी और सोच लें। बाबूलाल ने धीरे से कहा।

—जैसा उचित समझा। अब बात शुरू हो ही गई है तो मैं पूरी स्थिति स्पष्ट करता जाऊं।

—हां हां कहिए भाई साहब। सुभद्रा जो अभी तक खड़े खड़े ही बातें कर रही थी मूढ़े पर बैठ गई।

—जिन रिश्तेदारों से आप डरते हैं। स्वाभाविक है हम भी अपने ऐसे बहुत से रिश्तेदारों से डरते हैं न आप भीड़ इकट्ठी करेंगे न हम। मंदिर या कोर्ट में जैसे आप चाहेंगे विवाह सम्पन्न हो जाएगा। इसके बाद एक तिथि निश्चित करके संयुक्त रूप से एक अच्छी पार्टी का आयोजन करेंगे। उसमें जितने सौ आप लगाएंगे ठीक उतने सौ ही मैं लगाऊंगा। हम संयुक्त रूप में ही निमन्त्रण पत्र छापेंगे कि विवाह हो चुका है। वर वधू को आशीष देने आए। जो रिश्तेदार चाहेंगे आ जाएंगे। नहीं चाहेंगे नहीं आएंगे। विवाह तो हो ही चुका होगा।

—आज आपके क्रांतिकारी विचारों को सुनकर मैं दंग रह गया हूं, धर्मेश बाबू। बाबूलाल रोमांचित हो उठा।

—काहे के क्रांतिकारी विचार बाबूलाल जी। यह तो हम लोगों की जरूरत है। मेरे ख्याल में लम्बे चौड़े खर्चों और आडम्बरों को हम सिर्फ राजघरानों और पूंजीपतियों के लिए छोड़ दें। हम सिर्फ अपनी तरफ और अपने आगे के दिन देखकर चलें।

—उम्मीद है धर्मेश बाबू, मैं आपके विचारों का अनुमोदन करने में सफलता प्राप्त करूंगा। एक बार तो नारायण मेरा उद्धार कर ही चुका है, अब लगता है दूसरी दफा भी वही उद्धार करेगा। बाबूलाल का स्वर बहुत आर्द्र हो आया।

—ठीक है तो चलूं, धर्मेश बाबू, बाबू लाल के कंधे थपथपाते हुए उठ खड़े हुए, सोच लेना।

एक कप और चाय पिलाए बिना नहीं जाने दूंगी भाई साहब। सुभद्रा का स्वर पुलकित था।

बाबूलाल ने जोर से धर्मेश की बांहें खींचीं और फिर से कुर्सी पर बैठा दिया।

हरदर्शन सहगल

जम 1935।
गाव कुदिया, जिला मियावाली,
पजाब, (अब पाकिस्तान मे)

व्यवसाय उत्तर रेलवे मे कायरत

प्रकाशित पुस्तकें
'मौसम' (कहानी सग्रह)
'टेढे मुह वाला दिन' (कहानी सग्रह)
सही रास्ते की तलाश (बच्चो के लिए)
दो कथा-सकलन लगभग प्रकाशनाधीन।

सपक टी/62 सी रेलवे कालोनी
बीकानेर (राजस्थान)